श्रीप्रवचनसंग्रहप्रारंभः ॥

ओम्

॥ श्रीजिनंद्रायनमः ॥ अहिंसापर्मोधर्मः ॥

ए महा उत्तम पुस्तक गुणोका भंडारहै ज्ञानरूपी नेत्रोका दतारहै ए पुस्तक लिखतका मिलना अति कठनथा ए कठनताई दूरकर्णे के वास्ते और स्वधर्मी जनाके हित अर्थ श्रावक नंदलाल ॥ बृजवलभ दासने छपवा कर प्रसिध कीयाहै अगर कोई लग मात्र की गलती छपने के समे रहगई हो तो पंडत जनकृपा करके सुधारलहे और जो भव्वजीव इसको पढेगे पढावेगे अर्थ प्रमार्थको समझेगे सो संसार सागरसे सीघ्र पारपावे गे और इस पुस्तकको जत्न सहत मुष पत्ती वाध कर वाचना चाहीए ॥ और दीपकजलायके वाचनेकी आग्यानहीहै सुभ भुयात् ॥ दा० श्रावक नंदलाल बृजबलभदास ॥

॥ श्रीप्रवचनसंग्रह पुस्तककी अनुक्रमणिका ॥

प्रथम वार छपा एक पुस्तककी कीमत १।) रुपैया डाक खरच अलाहदा ॥ यह पुस्तकसन १८६७ के २५ के ऐकट मुजव रिजीष्टरी प्रसिध करताने अपने नामकी सरकारे करवायलई है अब किसी और को छपवानेकी अजाजत नही है ॥ मिती अशु दिन १५ समत् १९५३ सन १८९६ त० २९ सितंवर

☞ पुस्तक मिलनेका ठिकाना दुकान कृपाशाह ॥ नदलाल भावडा वजार वडा शहर स्यालकोट देस पंजाब ।

॥ अथ श्री साधगुनमालाप्रारंभते ॥

उं ॥ श्री वीतरागायनमः ॥

अथ साधुगुणमाला लिष्यते ॥ सर्वगुरुवर्ण दोहरा ॥

श्री त्रैलोका धीसको वंदो ध्यावो ध्यान । यासेवासाता सुधी पावो नीकोज्ञान ॥ १ ॥ द्वादशस्वरअनुक्रमवर्णनं दोहरा ॥ अलषआदि इस ईसकी उत्तमऊचोएक । ऐसो ओडक और नहि अंतनअःजगटेक ॥ २ ॥ यमकबंधसर्वलघुवर्ण दोहरा ॥ मुनि मुनि पति वरनन करन शिव शिव मग शिवकरण । जस जस ससियर दिपतजग जय जय जिन जन सरण ॥ ३ ॥ सर्वलघुदो०करत सुजस सुरअसुर अहि उड गण नरगहि सरण । जिहसमरण समकत विमल प्रणमत हरजसचरण ॥ ४ ॥ दोहरा ॥ वंदो श्रीसी मंदरं स्वामीसदाकृपाल । श्रुतिदेवीको वंदकेरचो साधुगुणमाल ॥ ५ ॥ जिनवर भाषत जैनमत जत्नमूलजयवंत । जतीधर्म जगजलतरण जनमजरादुपअंत ॥६॥ मुनि रिष तपसी संजमी यती तपो धन संत । श्रमण साधु अणगारगुरु वंदोचितहरषंत ॥ ७ ॥

साथीया बंधसर्वलघु ॥ दोहरा ॥ परम मुकतिपद अरथतप करमुनि उपसम चरत।
गहि जिनमति भवजलतरत उचत्रवि चलपदधरत ॥८॥ दुमल छंद जिनकेधर ध्यान
सुजानभए सुषदेषत लोचनको मनको। जिनके सुनवैन सुचैन वधे परमान किया
प्रभुतां जनको। जिनके पगलाग सुभागभए बल
रूप सपुष्ट करे तनको। तिनसाधजती रिपकोप्रण
मोगुणगायलहो धिषणा धनको चक्रबंध दूमल ॥
छंद जिमके तकके दल के महिके अलिके चितके
मटिके वाहिके मधुके रुत के वनके सरके पिकके मचु
के विनके लवके घनके घटके स्वरके सुनके किम
के किचुके नृतुके लटुके षगके रमके किमके तुटिके
कविके मचु के स्तव के कथ के ॥ १० ॥

अष्टकोणपदाकार दूमल ॥ छंद ॥

करुणा कर दीन
पद पंकज का
गति रापण हार
अपार कहा वर
इंद्र करे महिमा
वुद को तरुणा ।
गर चाहित हौ
तुमे करुणा॥११॥

ना
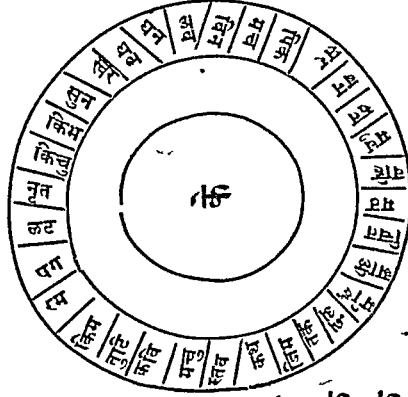
दयाल प्रभू तुमरे
सरणा । सरणा
विभो गुण सिंध
णा । वरुणा गर
मुनि ध्याय भवां
तरणा भव सा
हमरा इहि कान
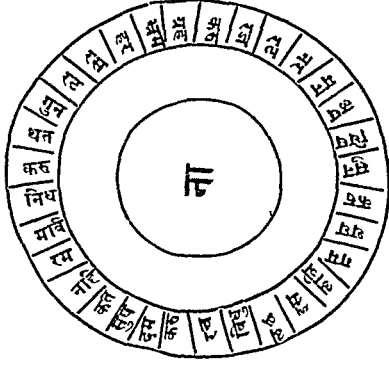
चक्र बंधदूमल ॥ छंद ॥

करुना रचना विध ना
गमना थघना करुना
मनना नरना गरना
भ्रमना हरना रसना
करुना निधना मविना
सुषना दमना १२ ॥
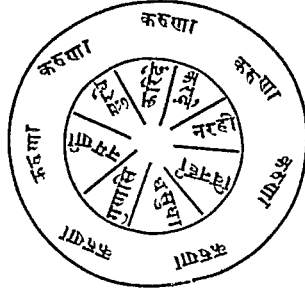
लवना इसना लजिना
मुनना धिषना लषना
रजना करुना ग्रहना
रटना गुनना थतना
रमना नाहिना कतना

अष्टकोणतोटक ॥ छंद ॥ करुणा सुर धेनमनी करुणा करुणा गुण सिंध सुधाक रुणा करुणा बिनहोरनही करुणा करुणा करदेहुरिदे करुणा ॥ १३ ॥ अथ सप्त विंशतसाधुमूलगुणवर्णनं दूमल ॥ छंद ॥ करुणा जिणसाननं मूलकही सभही गुणआय मिलेटरके । मिलसंघवने शिवराहिचले मगमाहिघणेपुरहैसुरके । जनके

तकराहुरम पुरमशिवजेपहुंचेनचलेमुरके सुरतेमुरफेरलहेशिवको । इसभांतसुवेनसुने गुरके ॥१४॥ अघपुंजहरेचितसुद्धकरे रिसतापहरैसुरकीसरता । भ्रमअंधमिटेमदचो रहटेतिथपूर्णमकीर्तसमीधरता । वनज्ञानवधावनकोवरपात्रम्रताषलपापज्वरंहरता । नवकाभवसागरमाहिदया मुनिराजभलीविधआचरता ॥ १५ ॥ चितवंतसथावर लिंग त्रिधागतिचारप निंद्रयकायछई । जिय सूषम वादर भेदघणे नहणेनहना वत साधुथई । नकरेअनु मोद नहिंसककी तिऊ जोगकरी मुनिज्ञानमई । इम आदिमहा व्रत धार मुनी करुणा रस सुंदर रूप लई ॥ १६ ॥ इति प्रथम महा वृत ॥ सुभ राज सभा सनमानलहै विवहारविपे अति सापजमै । तम निंद मिटे यस चंद्र चढे सुर धाम लहै गति नीच थमे । भ्रम जालकटे चित पंपछुटे गतिऊरध ज्ञान अकास गमै । सतवाक विपै गुणबृंदवसै मुनिराज सपाकर संगरमै ॥ १७ ॥ मुषवैन विचार किबोलतहै सुभसन्नमई जियके हितके नहितीषण कूडयपापमई परि पीडन हौंदु

विधाचितके जिनसासनके परमानकहे अघमैलनही वरते जितके धनसाधु सुसा धनआत्मको प्रणमोसुषदायहै नितके ॥ १८ ॥ इति द्वतीयमहाव्रत मत्तगयंद ॥ छंद ॥ पापकिवुद्धजगै जिसकेघट लालचसोपरवस्तगहेहै । ज्ञानविवेकदयासमता तवछांडचले चितकोपवहेहै । तूंवरभारलिएजिमडूवतत्यौं भवसागडूवरहेहै । सोअघ त्यागसंतोषगहेहै । रिषसेवकवंदतमोदलहेहै ॥ १९ ॥ धाड विचार कठोर महाठग पापकरे पर अंसगहेहै ॥ छेदन भेदन लोकविषे परिलोकयमादिक पीडसहे है ॥ साधतजे अनदित्त पदारथ छार त्रिनादिक वीनलहेहै । सो त्रिपतातम लच्छपती चितपाप अलेप सिद्धंतकहेहै ॥ २० ॥ इति तृतीय महाव्रत ॥ कामवलीसरपंच लिए करमारि किसूरवडे जिनलीने । दानवदेवफणी नरषेचर भूचर केतक चाकर कीने। नारिकिपायसुसीस छुहावतलाज हरेबलसाहसछीने। सोरिपजीतालिए रिप तापस सेवक वंदत प्रेम किभीने ॥ २१ ॥ नाग महा बल मत्त गयंद महा बल

केसरि जीतनहारे लापसुयुद्धकरे धरधीरजतोडन कोटमहागरभारे । लोहिमलेगिर ठाहिदिषावन औरमहाबलप्राक्रमकारे । कामाकियुद्धमुहारचले परसोरितराजकुसाधु पछारे ॥ २२ ॥ चंचलरूपकियोबनता निधसाजासिंगारसुगधसुहाई । हासविलास विकारकरे मुषगीत वनाइकितानउठाई । कामभरीनिरलज्जभईमुनिराज समीपसुका मनिआई । मेरअडोलसुसीलविषे थिरजानतहै भगनीअरुमाई ॥ २३ ॥ सीलमहा व्रिध दारदभंजन देवद्रुमोमनवंछतपूरे । पापमहारजपंकविना-सनमेघ वधावनपुंन्न अंकूरे । संकटटालनमोदजगावननाकरमावनदुर्गतिचूरे । मोपकरैवहुदोषहरेधनधारन हार मुनीस्वरसूरे ॥ २४ ॥ इतिचतुर्थमहाव्रत ॥ याजगमै धनहेमनगादि रसायण पोरस पारस पाहन भूमि ग्रहादि पशूगणअंवर भूषणभाजन । आयुध वाहनदास चमूवन तादिघणी विधहोत परिग्रह सयम ढाहन । सोमुनिराज तजे चित सोसुभ आत्म ज्ञान महा धन चाहन ॥ २५ ॥ लोकविषे बलवंत परिग्रह जीवनको जिस

घेर लियोहै । लोभमहा छल साथ रमे अघ पुंज वधा वनरूपथयोहै । सोदुपदान रुलावनहार विचारविछक्षणछाडदियोहै । उत्तमलोकाविषेरिषराजसदा तिनको जय कारभयोहै ॥ २६ ॥ इति पंचमहावृत ॥ अथरात्रिभोजन ॥ जीवमही नदिनेन लपे विनती छण । दृष्ट विचार विचक्षनरात्रि कहालषिए तिहहेतदयाकरसाधुतजे निसभक्षन । औरमहाफलहै अरधायुउघेतपमाहलपोसुभलक्षन । तेप्रणमोअणगार तपोधन धारमहाव्रत ऊरधगछन ॥२७॥ अथपंचेद्रीजीतनगुण ॥ कानसुने मृदु वाकमनोहर नाटकगीत वजंत्र पियारे । औरसुने निजकीरत कौन हिरागकि रीत कछूचितधारे । जोविपरीतसुनेदुषदायक त्यौंनाहिद्रेपसुध्यानविचारे । सोश्रुतिइंद्रयजी ततपोधन सेवकके सुभकाज सवारे ॥ २८ ॥ देपमनोहर देवसुरीनर नारिपशूषग सुंदरमूरत । वागाविषैन्टतमैनटकीविधतौनकरै मनरागाकिसूरत । जोविपरीतकरूपभयं करतौनहद्रिपकरीमनधूरत । सोदगइंद्रयजीततपीश्वरसेवकको समतारसपूरत २९॥

नसाधलईहै। जोदुरगंधमहादुपदायकत्यौंनाहिद्वेपसुव्रत्तथईहै। नाकजतिंद्रयसाधभए हरपेप्रण मोचित शांत भई है ॥ ३० ॥ भोजन पान मनोगम सुंदर स्वादमई रसना रसपोषी। प्रासहोतजवेतवरीझना शीतल ठांनतहैमुनिमोषी। जोकटकादिकहै दुपदायक तौनहि द्वेपकरी मनरोपी। सो रस इंद्रयजीत गुणा करवंदतहौ तिनकी गतिचोषी ॥ ३१ ॥ जो फर सिंद्रयको सुषदायक साजमनोगम आय मिलेहै। तौ नहि राग विषे चित राजत आतम राम समाधरलेहै। जोविपरीत मिले तव द्वेप नही समताधर भावभलेहै। सोफरसिंद्रयजीत विराजततांपग वंदत पाप टलेहै ॥ ३२ ॥

इति पंचेंद्रियजीतनगुण ॥ अथ चारकषायजीतनगुण ॥ अथ क्रोध ॥

कोपधसेचितमोविसघोलत तावतपापकि वुद्धपिडावे। लोचनमै भृगुटी भुज हाथमै रुद्रमहारसरूपदिपावे। आपतपेपरतावतहै परलोकविपे पतिप्रीतगवावे।

कोपनिवारविराजतहै रिषषंतसषीतिहआदरपावे ॥ ३३ ॥ मूरषचित्तमलीनमहा
पशु देपाकिसाधकुदेवनगारी । ताडनतर्जनहाथउठावन निंदनसाथनिरादरभारी ।
तौमुनिराजकुकोपनआवत जानषिमा शिवकाजसवारी । तेमुनिकेपग वंदनको
उमगीमनसा भवतारनहारी ॥ ३४ ॥ कालकुरूप अनारजमानव कोपकुपान
कुरूपदिषावे । यक्षपिशाचविताल भयानकक्रूरमहाजव आनडरावे । सिंहभुयंग
गजादिवुरेपशु षेदकरैवहुपीडजनावे । आतमअंग अभंगलषे रिषदेह सुआपन
प्रीतनलावे ॥ ३५ ॥ अथ मान ॥ मानरिमानवमान वुरोमतिमान गुमानन
माननंनीको । मानकरीअपमानलहै नबिमानलहै वरदेवपुरीको । मानमिटेसनमान
वधेपरमानकरो सुभवाकजतीको । मानवजन्मसमाननहीं कछुधर्मसुमानकजातभली
को ॥ ३६ ॥ देवसमूहसुसोभत सुंदरइंद्रजहा सिरआननिवावे । षंडपतीषगनायक
भूपतिभौनपतीपगवंदनआवे । जोरकिहाथकरे महिमाजसबैनकहै जयकार लावे ।

भूमिसवार सुगंधपिंडायबनायअषाडा। साजवजंत्रसुधारकिताल अलापनरागनि रागअपारा। सुंदररूपसिंगारसुपातर नाचततानउठेछणकारा। लोचनचित्तअडोल सदारिषजानतहै जगझूठपसारा॥ ३८॥ ॥ अथ माया॥ वक्रकरे चितमित्रपणे रिपठागकुरूप सुसाषगवावे। निदमईभ्रमजालग्रही गुणहीनकरे नरकादिरुलवे। सम्यकचंदग्रसेतमसोअहि साममहाविषदंभचढावे। सोकपटारिपछारहणेरिषअर्जव सूरसुचूरकरावे॥३९॥ अंतरबाहरसोभतहै रिजसाचविषेरिषसाचहिबोले। साचकरे करतत्तमहारिप साचकिमारगचालअडोले। दंभमहाठगमार लियोजडचेतन भाव विभेदविरोले। सोअणमोतिहूकालविषे रिषमोषमहापुरकेसुषटोले॥४०॥अथलोभ लोभकिकारनजालफसे षगमीनमरे कपिकुंजररोवे। चोरसहेदुख वंधवधादिकलो भसुमानवकिंकरहोवे। लोभबिनासकरे शिवमारग नीचगतीगति नीचमुटोवे।

लोभनिवारसंतोपगहेरिषतांगुण मालसुसेवकपोवे॥४१॥ जाननभूमिनिधान महाधन श्रौषधसिद्धरसायनबूटी । देखनरिंदविभूतिमहा सुखदेवविभूतिअनूपअटूटी । चाहन हींचितमांहिजगे कछुअंतरतेंममतासभछूटी । ग्यानविरागसखाकरसंगरमे रिखलो भतणसिरकूटी ॥ ४२ ॥ इतिचारकषाय ॥ अथभावसब्वे ॥ कातकपूनमभासोनिसी थसमेवृपरासससीबलभारी । मेघकुहीडरजादिविनानभस्वछंदसोविमलातमहारी । त्योंचितभाव विसुद्धसुसीतल संतमुनीसरहैवृतधारी । वदतहौंकरजोरसदा भवसागर तारनकेअधिकारी ॥ ४३ ॥ अथकर्ण सब्वे ॥ सुद्धकियोकरणोत्तमको गमनागम भापणभुंजनमाही । राखननाखनवैठनमै उपदेसविषेसुभहैसभठाही । जोकरतत्तकरे रिषउत्तमसोशिवमारगमेंशिवराही । तेमुनिकेपदपंकजको करजोरसदा प्रणमोगुण चाहीं ॥ ४४ ॥ चंदननीरकपूर कुलेपनदाघहरे त्रिफलामलरोगं । वातविकारहरैत्रिगु टात्रयजोगविशुद्धहरैअघसोगं । पुष्टकरेघत खीरमिठासमहावलवंत त्रिभावलिभोगं ।

पोपस्वयंलय आतमकोरससाध त्रियोगचलेशिवलोगं ॥ ४५ ॥ भूपहणोरिपुराजकरै खितसाधलहे धनधानसवारी। जोंत्रयकारज कारकसाथत्रजीरचमूपति दक्षभंडारी। त्यौंमुनिराज त्रियोगविचक्षणवीरलिये सगसजमकारी। कर्मखपाय सुराजलह्यो थिरआगम अर्थमहानगधारी ॥ ४६ ॥ अथ क्षमागुण ॥ जो अवनीबहुखेदसहे हिमसीतसहे अरुतापसहेहै भारसहै। पर हारसहै अपवित्रपवित्र समस्तगहेहै। त्यौंमुनिधारक्षमामुक्षमासमआतमकेरसरीझरहेहै। ताहिनमोंतिहुजोगकरीजिनराज किमारगसूरकहेहैं ॥ ४७ ॥ अथवैरागगुण ॥ कामनभोग विलासविपे लखनारिसुतादिकबंधनत्यागी। जानअनित्यअसार अपावनदेहतणी ममताजिहभागी। राजतजे सभसानतजे षटखंडविभूततजीचितजागी। तेप्रणमोपरमारथसाधकश्रीजिनसासन माहिंबिरागी ॥ ४८ ॥ अथमनसमोधारनगुण ॥ बाजकुरंग पतंगसमीरत देवनते मनवेगगतीहैं। चंचलचोरचहूदिसभ्रामकढीटमहाअतिदुष्टमतीहैं। सोसमझायकियो

अपनेवस पापकुंवुद्धाकिचालहतीहै । संजमवंत विराजतहै मनकोंसमधारन साधजतीहै ॥४९॥ ताम्रकरेकलधौत रसायणलोहकुपारसहेमवनावे। औषधजोगकलीरजतोतममूढसुधीसंगदक्षकहावे। वैदकरैविषकोवरऔषधसाधुअसाधुकुसाधुकरावे। त्यौंमनदुष्टकुसुष्टकरै रिषतांगुरुकेगुणसेवकगावे ॥५०॥अथवचनसमोधारण । मोनरहेनकहै मुषआश्रव संवरकारनबोलनवानी । तोलकिबोलनबोलनहारनजीवदया उपदेसकहानी । जैनकिवैनसुअैनधरैचितचैनभयोसमहीविधजानी । तेप्रणमोंतिहुकालविषे तिनकीमहिमातिहुलोकवखानी ॥५१॥ अथकायसमोधारण । अंगउपंगसंकोचरहे दृढआसनधारतजेचपलाई । आवनजावनकारजमैयतनायुतउत्तमरूपवनाई । कायकलेसकरे तपउत्तममोखमहापुरकेमगजाई । कायसमोधरणे गुणराजततांपगवंदतहौचितलाई ॥५२॥ अथ ज्ञानगुन ॥ केतकहैश्रुतिमत्तमई रिषकेतकऔधधरीमनज्ञानी । केतककेवलज्ञानमई प्रभुकेतकअंगउपंगवपानी । केतकद्वादसअंगधरीरिष

सर्वरिषीश्वरज्ञाननिशानी । तेमुनिकेपगवंदनतें उपजेचतमासमतासुखदाना ॥ ५३॥
अथ दंसनगुन ॥ सुद्धदशाधरदंसणउत्तमसत्तप्रतीतजिनागममाही । यक्षसुरासुरनाग
चलावनतौंनचलेदृढहै शिवराही । धीरजमंडपखंडकुखंडन पापम्रखामतिकेगिरढाही ।
सम्यकवंतमहंतमहामुनि सेवकतारतहैगहिबाही ॥ ५४ ॥ अथचारित्रगुन ॥ सुद्ध
आवस्यकप्रातकरे गुरुदेवकुवंदसिद्धंतउचारे । ध्यानकरेतपसाविधसाधनभिक्षग्रहे नि
रदोषसभारे । सिष्यनपुछनजाच जिनागमदेउपदेसम्रषामतिटारे । रात्रिअवस्यकआ
दिसुचारित्रसाधभलीगतिसाधपधारे ॥ ५६॥ अथक्षुध्यादि२२परिसहजीतनगुन ॥
भूषमहाबलवंतभई नरसिंहफणीगजरीछनिवाए । दासभएपरछंदनचेबल हीनभएपर
हाथबिकाए । कालअकालसुभक्षकुभक्ष सुजातकुजातगिनेनागिनाए । सोमुनिराजलई
जिनके तिनकेगुणसेवकभाखसुनाए ॥५७॥ भूखत्रिखागरमीसरदी इमहीबहुभांतके
संकटपावे । कर्मउदेफलमानतहै समताधरभोगनेचित्तनतावे । जानतहैछिनभंगरहैतन

ताहिविषममतानहिलावे । धारतदेहविदेहभएजन तांगुनदेवपतीमुखगावे ॥ ५८ ॥

अथमर्णांती उपसर्गजीतनगुण ॥ चाहतजीवसभीजगजीवनो देहसमाननहींकिछु प्यारो । संयमवंतमुनीस्वरको उपसर्गभवेतननासनहारो । तौचिंतवेहमआतमराम अपडअबाधतज्ञानभंडारो । देहअचेतनसोहमतोनहि सत्तचिदानंदरूपहमारो॥५८॥

इतिसप्तविंशतसाधुमूलगुणसमाप्तं ॥ अथ उत्तरगुण ॥ पावसकोचउमासविषे निरदोषसुथानकमाहिवसेरो । नारिकिलीवपशूनरहेजहिशुद्धअलेहणजोगचंगेरो । धारतहांउपवासअभिग्रह पालचारित्रवसेगुरुमेरो । भव्वनकोउपदेसकहे सुनमोदलहैनरनारिघनेरो ॥५९॥ आठहिमासविहारकरेरिखदेसविदेसविषेउपगारी । भूमिकरैत्रिण काठकिऊपर आसनसैनअचित्यसवारी । आगमसारविचारउचार-किंभव्वनकीजिन नींदउधारी । काढम्रपामतिकूपथकी जिनधर्मनकेतुंदिपावनभारी॥६०॥ग्रीषममैरावितेजसहैहिमसीतसहेनहिपावकसेवे । पावसमैउपवासघणी विधतुछअहारमहामुनिलेवे

द्वादसमासीविष तपसीकरज्ञानीविरागीदिव [illegible]
वकको सुपसंपतदेवे ॥ ६१ ॥ साधुगिलेनाहिंरंकधरापति दीनधनीसमएकसरीसे
ज्यौंवरुषारुतपायसुभायसु अंबुदजगलमाहिवरीसे । जीवनआसनहीं जिनकेंअरु
कालकुत्रासनहींचितदीसे । तेमुनिकेंपगवंदनते जनपापपुरातनकेंदलपीसे ॥ ६२ ॥
चाहिनहींनिजकीरतकी सनमानसुपूजनआदरकेरी निंदनवंदनएकसमोसमता
सजनीगुनरूपचंगेरी । लोकविषेंनहिंमोहधरे परलोकअवंछतभेटअवरी । हैघट
आतमरामम्हारसते मुनिवंदोमिटेभवफेरी ॥ ६३ ॥ घोरमहातपतेंउपजे चितओध
प्रकाशकितेजदिनेशा। वैक्रयरिद्धभईसुरसी अरुतेजसवंतमहाबलल्लेशा । आपअनु
ग्रहसिद्धमई सुपुलाकघणीविधशक्तिप्रवेशा । जोनविकारकरैंथिरता गहिसोमुनि
वंदतव्रंदसुरेसा ॥ ६४ ॥ मत्तमतंगम्रपामातिके नरगाजतज्ञानकुवागउजारे । श्रीर
पराजमहाबल नाहरगाजसिद्धंतकुनादउचारे । भागचलेमतमंदमहापशु जोरणके

रत्ततेरिपुहारे । वादजईजगदीसकिनंदन तेरिधजीरषवालहमारे ॥६५॥ आतम
रामअनूपअमूरत आदिअनादिअनतविलासी । चेतकअंगअभंगचिदानंद रंगनरू
पमईगुणरासी । व्यापकग्यायकानिर्तविराजित सोथिरध्यानविषेअविनासी । हौजि
नकीलिनकीगुणमाल रचीचितलायसुबुद्धप्रकासी ॥ ६६ ॥ जोनगकेगुनदोपलषे
नगपारषसाचअसाचनितारे । दक्षसराफलषेकसकंचन वादमिटायाकिसुद्धसवारे ।
ज्योंरजसोधकधूलथकी धनकाढलएविधसोरजटारे । त्योंजडचेतनभिन्नकरे गुणदो
पलषेमुनिआपसंभारे ॥ ६७ ॥ ज्ञानसुनीरभरीसलला सुरधेनप्रमोदसुषीरनिधानी ।
कर्मजुव्याधहरंतसुधा अघमैलहरंत्तासिवाकरमानी । इंदुसिद्धंतकिजोतापिडी श्रुतिदे
वसरूपमहासुखदानी । लोकअलोकप्रकासमई मुनिराजबषानतहौजिनवानी ॥६८॥
सोभतदेवविषेमघवाउड छंदविषेससिमंगलकारी । भूपसमूहविषेवरचक्रपती प्रगटे
वलकेश ... नागनमैधरनेंद्रवडो अरुहैअसरेचमरेंद्रविथारी । ज्यौं

संघविषे मुनिराजदिपे श्रुतिग्यानभंडारी ॥ ६९ ॥ धातनमेकलधौतवडो रतनांविच भापतहैवरहीरा । कुंनरमाहिकहेहरिकोइभ केसरिसिंहमहाबलबीरा । फूलनमेंअरु विंदवडो नगकबलसोनहिदीसतचीरा । त्योंसमसंघविपेअतिचारत धारमुनीश्वरसो भतधीरा ॥ ७० ॥ सासनमाहिकरीटसुसेहर हैतिलकोपमकेतुअमोले । वारधदीप जहाजमणी मलयागरसेनिजकारजटोले । वैदनिजामरथीभटसे जगज्ञानकलातु लियाकरतोले । हंसकपोतभरिंडअलींवति जैनजतीगुणआगमबोले ॥ ७१ ॥ सूर प्रतापससीचितसीतल सिंद्धगंभीरसुमेरुअडोले । कंजअलेपसुकुम्मवसिद्रय वाक कहैंजनअंमृतघोले । वारणधीरअभीतमृगाधिप ओटविनानभधीगुणटोले । बायअ बंधधरासहनेसभ जैनजतीगुणआगमबोले ॥ ७२ ॥ आदि अंत एक स्वर ॥ साध नसाधसदामनकीगति पंचमहाव्रतकीविधसाधन । साधनराचितभोगविषे सुषवंछि तकामकलानहिसाधन । साधनहैकरणीहरनी दुषसावरणीवरज्ञानिधसाधन । साध

नरोतमकेपगकीरज भालधरोसभकारजसाधन॥७३॥साधनराजकिसाजविपे रतवा
निजकोविवहारनसाधन। साधनभूमिकृसानकयाविच पोषपशूक्रयविक्रैनसाधन। सा
धनदूतकलाकरतत्तमुवादे विवादिविपंधनसाधन। साधनरोतमकेपगकीरजभालध
रोसभकारजसाधन॥७४॥साधकहैशिवमारगकेजन सारथवाहिमहापथसाधक। सा
धकथातपसंयमकेरस रीझरहेपरमारथसाधक।साधकहेउपदेसतजोअघहोइपुनीतव
नेशिवसाधक। साधकहेजगदीसकिनदन बंदनतेसभकारजसाधक॥७५॥साधनजो
तकवैदकमैरसमंत्रनयंत्रनतंत्रप्रगासे।बीरवुलावनथंभनमोहनकेलकतूहलरीतनभासे
नाचनगावनतालवजावन पेलसभीतजज्ञानअभ्यासे। तेमुनिराजकिपायधरोसिरवुद्ध
जगेअघअंधविनासे॥७६॥चक्रबंधदूमलछंद॥तियकेसुतकोमितकेधनके नरुकेनचुके
नउकेछलके। सुरकेनरकेसुपकेलजके अटकेनटिकेशिवकेथलके। जिनकेतपकेबलके
झलकेझपकेतलकेहटकेटलके। तिनकेपगकेढिगकेतनकेसरकेसिरकेमणिकेझलके७७

बलकेअपकुतलकेहटकेटलके । तिनकेपगकेढिगकेतनकेमरकेसरकेमाणकेसलके ७७

जिमके हरके लडके भमके मृगके गणकेमटिकेथलके । बनके विचकेकिछिके

मटिके पलके । तमके

सुरके सुनके अहिके

नटिके दिनके पतिके

भरके सानिके छविके

बलके लसके अघके

झलके मुनिके तपके

॥ ७८ ॥

तिनके जुमुके बलके
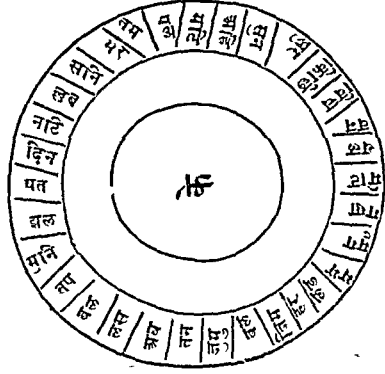
सममे दममे जपमे तपमे व्रतमे गुणमे इनमे जुरमे । रिसमे मदमे छलमे लवमे अघ

मेथुनमे विषमेनरमे । शपमे दुखमे घरमे

वनमे नगमे रजमे सबमेलवमे मनमे

वचमेतन में शुभमे अगमे रिषमे प्रणमे

जगमे ॥ ७९ ॥
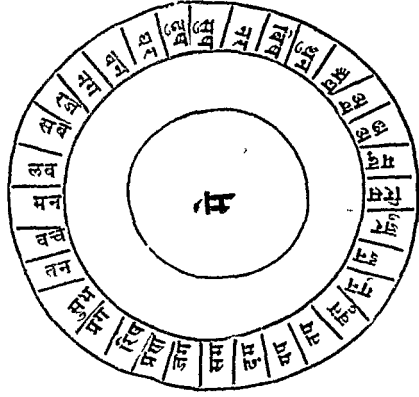
॥ एकादिचौदेप्रयंत सिषया कथन मत्तगयंद ॥ छंद ॥ आतमएकसरूपलि योलपएकमहामनकोवसकीनो । एकअसंगउदासरहै जगएकविरागमहारसभीनो ।

छाडदियोमगश्रोझडकोइक मोषमहामगमोचितदीनो । तेप्रणमोइकचित्तसदारिप
श्रापसभालमहाजसलीनो ॥८०॥ एकहिदिष्टसुचालचले श्रहित्योंमुनिराजसदाइक
चाली । 'खग्गविशानसमानरहे इकसर्वतजीइकमोक्षसभाली । खायकपूरणसर्वविषे
नभमैसभलोकेलपेगुणमाली । आतमरामलषेनभसे परचेतनवंतअसूनाविसाली ८१॥
सतकुमारथकीपुरुपासुर श्रानततेइकरंगविमानी । एकहिदिष्टविमानश्रनुत्तर एकभ
वीलवसत्तमज्ञानी । सोसभज्ञानकरीमुनिजानत भापतहैइकश्रातमध्यानी । तेमुनि
कोइकवाररिदेकरसिवनते जनउत्तमथानी ॥ ८२ ॥ जाजगमैबिबरासकही मुनिजी
वश्रजीवकिभेदसुनावे । सर्वद्रतीश्ररुदेसद्रतीमुनिदो विधसाधकरूपवतावे । श्रंत
समेमरणाविवभांतकुबाल श्रबालकुरूपदिषावे । तापगकंजश्रलीजनके दगदोश्रुति
धारसुनोसुभभावे ॥ ८३ ॥ दोविधबंधनतोडतहै दुहुभांतकुधर्मश्रनूपधरैया । दोग
तिछेदचलेविन्हू भवदोगतिऊरधमैउपजैया । लोकविपेपरलोकविषे समादिष्टसमेत

दुहूंभवथैया । तेमुनिकेपगदोहमरोसिर दोकरजोरसदाहरपैया ॥ ८४ ॥ वालेजुवा
वयवृद्धविषे उपसर्गत्रिधासहिचित्तनताव । सम्यकमिश्रम्रपालपके तिरयंचमनुक्षसु
रेसनझावे । सल्लनदंडनगारवधारत त्रैपदबोधनहेतसुनावे । तेमुनिकोतिहुवारप्रद
क्षण देप्रणमोसमतासुपञ्चावे ॥ ८५ ॥ त्रैजगजानत्रिहूभवनेयसतीनहिकालकिवा
तवतैया । तीनसुगुप्तधरीतिहुमैंचित दंसननानचरित्रसुहैया । त्रयगुणकीजगरीतल
पीत्रय लिंगविकारमिटायादिषैया । तेमुनिवंदतमोदलहोत्रय सधाविषैगुणग्रामपठैया
॥ ८६ ॥ चारकुषायकुछाडतहै गतिचारकुछाडपरेचितलाई । चारसुधर्मवषानतहै
चतुहीसरणेसुपशांतबताई । चारप्रकारकिदेवकरे जसवेदचहूंउपमामुनिपाई । तेप्र
णमोचहुसंगप्रकासक मगलचारसदासुपदाई ॥ ८७ ॥ चारप्रकारकिवुद्धजगी घटमो
क्षकिकारणचारवषाने । तीरथचारकहेशिवसाधक लोकचहूपुरुषारथजाने । दुर्लभ
हीपरसंगकहे चतुदानकिभेदसुचारपछाने । चारप्रकारलषे पुरुषाजगतांगुणचारमुषी

मुषगावे ॥ ८८ ॥ पंचप्रमादितजेसुमतीधर पंचजतिंद्रयप्राक्रमभारे । कामकिबानैन
पंचलगै जिहँपंचमहाव्रतसुद्धसवारे । भूषणपचसुज्ञानमई धरपंचमहीगतिमोचित
धारे । पंचपदेपरमेष्ठदिपावनसोप्रणमो गुणरासअपारे ॥ ८९ ॥ आश्रवरोककरे
शुभसंवर पंचचरित्रकिभेदसुनावे । थावरसूषमबादरजानत पंचविधेजगजीवबतावे।
पुन्नअनूपअनुत्तरपंचकुपंच विधेसुपउत्तमपावे । सोसभज्ञानकरीमुनिजानत बंदत
दाससदागुणगावे ॥ ९० ॥ लोकसभीषटदर्वमई लषजीवछकायकिराषणहारे । अंत
रकोपटभांतकरेतप बाहरकोषटभांतपसारे । षष्ठअवस्यकसुद्धकरे पटरुत्तविषैशिव
कारजकारे । तेमुनिगोयसदेवकरे षटरागसरागणिगीतविथारे ॥ ९१ ॥ सूषमसूष
मतेषटभांत किदूषमदूपमतेषटआरे । कालकिभेदकेहयुत लछणलेशछहूरंगरीतवि
थारे । जानतहैषटग्रंथनकामाति वेदपटंगलषेगुणधारे । तेमुनिकेपगसीसधरे पटषंड
पतीगुणग्रामउच्चारे ॥ ९२ ॥ दूतकृपादिनिषेधकिएनरकावल सातकुत्रासुनाया ।

धारमहातपसासुरधेनकु ज्ञानसुधीरसुधारसचोवे ॥ १०९ ॥ केतकसंयमवंतोत्रिया
तन केतकहैपुरुषाशिवराही । केतककृत्यनपुंसकगूरत संयमलैचित्तकीमललाही ।
भावतसोपुरषारथएकाहि द्रवत्रालिंगत्रिधात्रंघढाही।संयमधारककोकरजोर सदाप्रण
मोहरषेगुणगाही ॥ ११० ॥ चारहिंबेदयुतंगउपंग किधारकहैइतहाससुनावे । वैद
कतोनिरघंटतिलकर साठहितंत्रषटंगपढावे । योतिकछंदनिरुक्तघणे सबदागमको
ससुनायदिपावे । विप्रपतीपरवजंकपंडित तेसभजीतमुनीश्वरत्रावे ॥ १११ ॥ दानव
देवसमीपवहे गरुडामरनागपतीहितपावे । मानववैरपुरातनछाडिकि बैनसुनैरलके
जसगावे । चाहिकपोतचिडीसुसीचानेर लेगजएणससोहरित्रावे। शांतमहामुनिशां
तकियो सवजोतिनकेढिगत्रावनभावे ॥ ११२ ॥ पावकरासभवेकमलाकर नागप्रसू
नकिमालजुहोई।सिंहगजादिबलीससिका समसिष्यसमानानिवेरिपसोई। वितरक्रूर

काइ ॥ ११३ ॥ दारदपन्नगदूरभए गरुडोतमसाधरिदेविचआए । संकटबंधनटूट
गए तपवंतमहामुनिकेगुणगाए । संपतउत्तमपायलए जसवंतभएसनमानवधाए ।
कारजसिद्धभएसभहींमुनि राजाकिपायसुसीसछुहाए ॥ ११४ ॥ चदकिचाहिचकोर
करे दिननाथकुकोकउडीकरहेहैं । धेनविषेवछराहितधारत बालकमातकुमेलचेहेहै ।
मालतिसोलपटायरहै अलिचात्रिकमेघसुमोदलहेहै । साधुमहामुनिकेपगको हित
सेवकचित्तअपारगहेहै ॥ ११५ ॥ कौनगिनेघणबूंदनकोवन पत्रपयोधतरंगवतावे ।
कौनमिनेकरअंगुलसोमुरवी गिरमेरुकोतोलदिषावे । कौनतरेभुजसोरतनागर अंब
रमैउडअंतसुनावे । श्रीगुणसागरसाधुअगाध कहाकविआपनिवुद्धलगावे ॥ ११६ ॥
श्रीअरिहंतजिनेश्वरकेगुण द्वादसअष्टसुसिद्धप्रभूके । सूरिगणाधिपकेषटतीसमिलेपन
वीससुपंडतजूके । सातसुवीसरलेअणगार कियोसतअष्टमिलेनगटूके मेलाकेमालर
सालरची गुणग्राहिप्रसादिमहंतगुरूके ॥ ११७ ॥ ज्ञानछपावनहारहएयो जिनदंस

नरोकनहारविनासी । मोहमिटायतथाअंतराय हणचतुघातककर्मजुत्रासी । केवलदं
सनज्ञानसदाथिर लोकअलोकपदारथभासी । सक्तिसभीजिसमाहिमहापद पूरणब्र
ह्मसुछंदविलासी ॥ ११८ ॥ ओडकदेहउदारककी जिहकेसनरोमनहीनिषवाढे । अं
तनहीबलप्राक्रमकोसुष कोगुणकोकरुणारसगाढे । दोषनहीजिहमोषभयोढिगजीवन
अर्थमहारसठाढे । तेप्रणमोअरिहंतप्रभूभव सिंधपरेजनकेतककाढे ॥ ११९ ॥ सर्व
मईप्रभुसर्वलषीजिनसर्व सिरोमणिसर्वसुव्यापी । आतमरामअनाश्रवउत्तम ओडक
साधुअगाधप्रतापी । निश्चलचित्तनिबंधनिरामय नाकपतीप्रणमैस्तुतिथापी । कर्मनि
वारत्रियोगतजे शिवमारगमाहिचलेबलआपी ॥ १२०॥ सर्वमुक्ताक्षर ॥ घणाक्षरी
छंद ॥ कनकरजतधनरतनजडतगण सकललषणरजसमसतजनवर । हयगजरथ
भटवलगणसहचर सकलतजनगड वरननमयघर । बनवनवसनरमणसतगतमगभ
र अघरज र । उरगअमरनर करनहरषजस ज

वरजसकर ॥ १२१ ॥ मनहयवसकरतपनअनलमथ मदगजदलमलकपटसरपहर । लवठगपकरतपटकपटकवत मरकटचपलकरणपणफड़कर । रपवलअनलदहनवन मनमथपरदलदलनअनघभटहलधर । सवलकरमहरचडनअटलगड जयजयभणभवजणवरजसकर ॥ १२२ ॥ करमसवलभड अडनकठनगड लडनफडनपरदलवलछलकर । सतजनपरमधरमदलवलधर चडनचरनतपभडवरबलधर । लडनपरसपरकरणसवलबलपरदलदलन दरसलषतपवर । परहरकरमपरमपदगडचड जयजयभणभवजणवरजसकर ॥ १२३ ॥ सकलजगतपर अचलअमलवर अगम अलषपद अटलअकथजस । धरजलदहनपवनवनतसमय सकलअटकतज परम सदनषस । सरपअमरनरकरणहरपजस वचनपरमरसभवजनदसदस । जगतरवरहरपरमअनघभवभव जलतरवरजसकरहरजस ॥ १२४ ॥ कलसमालनी छंद ॥ अठदसवरषेचौसठेचेतमासे ससिमृगसितपक्षेपंचमीपापनासे । रचमुनिगुणमालामो

दंपायाकसूरे । हरजसंगुणगायानाथजीत्रासपूरे ॥ १२५॥ इतिश्रीसाधुगुणमाला
हरजसरायकृत संपूर्ण समाप्तं ॥ शुभं भवति ॥

श्रीवीतरागायनमः ॥ अथ देवाधिदेवरचणा लिष्यते ॥ दोहरा ॥

सकल जगतपति पर
न परम जोति राजत
न ॥ १ ॥ बंदो श्रीरि
अरिहंत श्री चंद्रान
यत ॥ २ ॥ श्री सीमं
मान जिनबीस बंदेह
गुण निसदीस ॥ ३ ॥

मपद पूरण पुरुष पुरा
सदा सो बंदो भगवा
षभादि जिन वर्द्धमान
नदेवथी वारिषेण पर
दर स्वामिथी विहर
रजस भक्ति धरगावे
जिन जग ज्ञान प्रका

सकर मिथ्यातिमरामिटाय ॥ भवजनकोशिवमगदीयोसोबंदोजिनराय ॥ ४ ॥ दूमल
वंदकमलबंधयुग्म ॥ परमेष्टमहापदपंचनकोपहिले प्रणम्येपाहिऊठसदा । परमारथ

देवाधिदे
वरचणा
॥ २ ॥

रातनालधवलछवसुदरआतआभेराम ॥ ९ ॥ केतप्रभुसुकुमारपदकतमंडलराज ।
चक्रवर्त्तकेतेभएनिधरतणायुतसाज ॥ १० ॥ परमउदारकत्तनाविषेराजतश्रीजिनचंद ।
सासोसाससुगंधमयबंदोपरमानंद ॥ ११ ॥ राजरिद्धसुषभोगतजगहिचारित्रमुनिवेस ।
करतपसंजमकेवलीदेतधर्मउपदेस ॥ १२ ॥ मतश्रुतिज्ञानसुअवधधरमनपर्ययवारिषरूप ।
कर्मघातकीषयकरीकेवलज्ञानअनूप ॥ १३ ॥ अवढतकचनषअघटछविविषनलगत
सुभदेह । जघिन्नसातकरओडकेपंचसैधनुगुणगेह ॥ १४ ॥ समोसर्णपदमासणेचौ
तिसअतसयसाथ । वाणीगुणपनतीससोभाषतत्रभवननाथ ॥ १५ ॥ मानवसुरतिर्यं
चजियभ०वसुनेचितलाय । निजनिजभाषामाहिसभअर्थसमझसुषपाय ॥ १६ ॥ चौ
रासीलपपु०वलग । जघिन्नबहत्तरबाससूषमदूषमअंतधरदूषमसूषमवास ॥ १७ ॥
कैजिनपगचक्रीलगैकैहरिबलवंदेह । मंडलीकरालेघणेसभाजिनभजसुपलेह ॥ १८ ॥
भर्तईरवर्त्तदसाविपेबिजयएकसौसाठ । जिनचक्रीहरिबलजन्ममध्यषंडश्रुतिपाठ ॥ १९ ॥

देवाधिदे
वरचणा
॥ २ ॥

केपथपावनको परमातमकोपहिचानमुदा भवसिंधजहाजउतारनको सिमरोमनमोव

रपंचपदा दिवके सुष
साधनको सुयदा हि
वरं रिषधर्मधरं रिषवं
रिसमान मृषारिप स
णदोषहणं भ्रमभीत
दोपहतं शिवशंकरणं
धरं प्रणमो अरिहंत

के घरभंजनको शिवं
कदा ॥ ५ ॥ रिषरूप
दयुतं रिषभादि जिन
वंहरं रिजपंथवहं रि-
हरं चितशांतकरं दुष
परम पुरुषारथ मोष
पदा रमणं ॥ ६ ॥

समुच्चेतीर्थंकरवर्णणं ॥ दोहरा ॥ आरजदेससुधर्मकुलराजवंसविष्यात । नरतन
दसविधसुभसहितमातापितासुभजात ॥ ७ ॥ वजररिषभनाराचतनसमचौरंससंठान ।

देवाधिदे
वरचणा
॥ ३ ॥

रातनालधवलछबसुदरञ्चातञ्चभिराम ॥ ९ ॥ कैतप्रभुसुकुमारपदकतमडलराज ।
चक्रवर्त्तकेतेभएनिधरतणायुतसाज ॥ १० ॥ परमउदारकतनाविषेराजतश्रीजिनचंद ।
सासोसाससुगंधमयवदोपरमानंद ॥ ११ ॥ राजरिद्धसुषभोगतजगहिचारित्रमुनिवेस ।
करतपसंजमकेवलीदेतधर्मउपदेस ॥ १२ ॥ मतश्रुतिज्ञानसुञ्चवधधरमनपर्यवारिषरूप ।
कर्मघातकीषयकरीकेवलज्ञानञ्चनूप ॥ १३ ॥ ञ्चवढतकचनषञ्चघटछविविषनलगत
सुभदेह । जघिन्नसातकरञ्चोडकेपंचसैधनुगुणगेह ॥ १४ ॥ समोसर्णपदमासणेचौ
तिसञ्चतसयसाथ । वाणीगुणपनतीससोभाषतत्रभवननाथ ॥ १५ ॥ मानवसुरतिर्यं
चजियभव्वसुनेचितलाय । निजनिजभाषामाहिसभञ्चर्थसमझसुषपाय ॥ १६ ॥ चौ
रासीलषपुव्वलग । जघिन्नबहत्तरवाससूषमदूषमञ्चंतधरदूषमसूषमवास ॥ १७ ॥
कैजिनपगचक्रीलगैकैहरिवलबंदेह । मंडलीकरालेघणेसभजिनभजसुषलेह ॥ १८ ॥
भतंईरवर्त्तदसाविषेबिजयएकसौसाठ । जिनचक्रीहरिबलजन्ममध्यषंडश्रुतिपाठ ॥ १९ ॥

जिहचक्रीतिहहारिनहीहारीढिगचक्रीनाहि । एकषेतविवहूनहीजिनहरिचक्रधराहि ॥ ॥ २० ॥ द्रव्यभावविधगुणसहितदयाधर्मअवितार । वंदोश्रीजिनधर्मगुरुसिमरेभव जलपार ॥ २१ ॥ अथ श्रीजिनमनगुण सवैया ३२ ॥ कमल बंध ॥ ४ ॥ परम

रितपरम विमल मत प
भ्रमसभ परस मुकति
ष सकलजग सवजग
तवत करमहरण व्रत
ष अमितनभ जितमद
इमरमत अडग मग
सरलमधुर सुभसरस

अनघगति परम धरम
रम विशद भग परहर
पथ परचत समदमपर
जिय हित सतसुष चि
अचल अमरनग अल
मन मथ जिणवर मन
॥ १ ॥ वचण ॥ गुण

अमृतसमसतमृदसमरससकलभविकहित । सरववरणमयसरबसुविधनयसतगतम
गवरसमज्ञतसतचित । प्रगटकरतसभसमश्रुतिअनुक्रमघरमसुविधदसदसतसहित
मित । गरजतघनमयपिकधुनरसमयसभसुरगुणधरजिणवरवचइत ॥ २ ॥ कायगु
ण ॥ मनुजसुगतमयमलनलगताजिहमदनानिकरजयमणिदुतजिणवर । मनुजअसुर
सुरमनवचतनथिरमगननिरपजिहमननअतुलकर । चिहनरुचरमयवरणसुछविजिह
दरसणअघक्षयअरुजसुगुणधर । रुधरधवलधरजिणवरवपुवरअमितसुवलजिहन
मतभगतधर ॥ ३ ॥ त्रियोगीगुण ॥ करणकरणवसकरमग्वलजितकलमलरजह
रकरणपरमसुप । करणचरणविधकठणधरणनितकवणअवरसमकहितानिपुनमुप ।
अमितअतुलजसवरननसुरपतिपरमभगतउररचणचरमरुप । सकलसकतनिधपरम
सुगुणयुतमनवचतनइमहरणजगतदुप ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ २९ ॥ मत्तगयंदछंद ॥
आतमगुण ॥ जोजनएकमहादिवकेसममोदमहासुरजोगजहाहै । प्रादभएसुभनी

चगएछपशब्दत्रिपंचअनूपमहाहै । वैरविकारनहीतिसमंडलशांतरिदेसभभव्वतहाहै
धर्मसमोसरणेप्रभुराजतपापपषंडाकिबातकहाहै ॥ २६ ॥ हेमसिंहासणमाणकमंडत
तापरतीनसुछत्रधरैया । चामरइंद्रकरैविवमूरतछक्षत्रसोकसुछायकरैया । सूरप्रका
सदिपेद्युतिमंडलऊचमहिंद्रधुजाफरकैया । गर्जतचक्रवजेसुरदुंदभिफूलवसेजिनराज
दिपैया ॥ २७ ॥ ऊचगंभीरमहासुरपंचमिमेघसिदुदभिसीमनमोहे । जोजनएकलगे
सुनतेसभभव्वजगैमतदोषनपोहे । यासुनमोदलहैसुरमानवऔतिरयंचभलेगुणटोहे
। सर्वसुभाषमईसमझेसभश्रीजिणबैणअनूपमसोहे ॥ २८ ॥ सर्वदियालसुशांत
सदाथिरसर्वमईसरवग्यसुधामी । सर्वकुदेषरहैसवव्यापकसर्वतिभिन्नचिदानंदनामी
लोकअलोकविलोकलियोप्रभुश्रीजिनराजमहापदकामी । आतमकेगुणसाथदिपेभ
वसेवकवंदतहैरुचपामी ॥ २९ ॥ सर्वगुनोधतसर्वसुशक्तिसदासुपदायकशांतरसीहै
भव्यउधारणदोषनिवारणश्रीकरुणाउरमाहिवसीहै । जाजसचंदकियोजगचां नलो

कसमस्तमुक्तांतधसीहै । श्रीजिनराजविराजतहैप्रणमोजिनकीभवपीडनसीहै ॥३०॥
श्रीगणधारआचारजसुंदररूपमनोहरतेजदिपैया । श्रीउवझायमहागुणआगरपंडत
मारगमोषदिषैया । साधुमहातपदोविधकोगहिकर्ममहारिपचूरकरैया । श्रीजिनरा
जविराजतहैयुतसेवकमोपकुकाजसधैया ॥ ३१ ॥ केवलऔधधरीमनपर्यवज्ञानधरी
परमौधधरैया । सर्वश्रुतिमुनिपूरवधारकअंगउपंगप्रकासकरैया । एकपदेअणुसार
लहैसकलागमवादजईहरपैया । लब्धअहारकवैक्रयचारणश्रीजिनराजकिसाथमुहै
या ॥ ३२ ॥ आपअनुग्रहासिद्धसमर्थपुलाककिलब्धमहाबलपाई । तेजसलेसकरीअ
पणेवससीतललेसजगीसुपदाई । औपधहोइगयोमलमूत्रसुगधमईजगरोगमिटाई ।
औरघणीविधलब्धधरीरिपश्रीजिणसाथसमाधिलागाई ॥ ३३ ॥ इंद्रविमानपतीदस
जोतिकदोभवनेश्वरवीसवपाने । वितरकेविवतीमसभीचतुसाठसुभव्यमहाबलजाने ।
श्रीजिनवंदनसेवनपूजनधर्मकथासुणहेतपछाने । कोटलिघाटसमोसरणेनहिओडक

देवत्रसंषमुथाने ॥ ३४ ॥ चक्रपतीवरकेशवश्रीबलदेवमहानृपमंडलराया। भक्तिकरी
चतुरंगचमूसजनादवजंत्रसमेतसुहाया । श्रीजिनबंदनपुछनहेतसमोसरणेपरिवारसु
आया । तीनप्रदक्षणदेचरणीनामिधर्मकथासुननेचितलाया ॥ ३५ ॥ साधुमहातमसा
ध्विकेगणश्रावकश्रावकणीमुपमिष्टी । भव्यचहूंविधदेवसुरांगणेपवरेपचरणीसमादि
ष्टी । पुन्नउदेतिरयंचतथात्रियासोभतधर्मसभागुणग्रष्टी । श्रीत्रयलोकपतीप्रभुसुंदर
सोभतमध्यसुधाघणवृष्टी ॥ ३६ ॥ जीवत्रजीवकुपुन्नकुपापकुआश्रवसंवरकोनिर्जरा
को । बंधकुमोषकुभाषतहैत्रणगारत्रगारकिधर्मधराको । सर्वहिजीवकिठामगताग
तित्रायुक्रियाचितभावगिराको। भोगसंयोगवियोगसभीजियकेप्रभुजाणतपर्मपराको
॥ ३७ ॥ दानसुसीलतपोयुतभावचहूंविधिधर्ममहाफलदाता । मोषकरैसुघस्वर्गभरै
नरलोकविषैबहुरिद्धमिलाता । दारददुषकरैचकचूरलहैजियउत्तमसंपतसाता । तीर
थनाथवषानतहैइमधर्मकथासुननेवहज्ञाता ॥ ३८ ॥ यासुनवाकविरागचढेषटपंडपती

वलदेवनरेशा । राजसुतादिकमंत्रिमहाभटसैनपतीवलवंतपगेशा । सेठधनीनरना
रिघणेसुषभोगतजेगाहिसंजमवेशा । श्रीजिनसासनमाहिभएरिषछाडदिएभुवभारक
लेशा ॥ ३९ ॥ जासप्रसादभएसुरसिद्धविमानअनुत्तरमाहिविराजे । देवभलेआहिमिं
दभएवडभागनरिंदमहाछविछाजे । देवगुरूपदइंद्रसमाणकलोकपतीपदवीगुणसाजे
चक्रपतीवलकेशवभूपमहाधनरिद्धलईजगगाजे ॥ ४० ॥ जासप्रसादफणीगजगोमृ
गनाहरवानरऔरकहेहैं । दादरपेचरभव्वघणेपिछलेभवजातपछानरहेहैं । भक्तिभ
एसुभभावकरीतपस्वर्गकिभोगविलासलहेहैं । भोगभलेजुगलाजनकेवहुरिद्धनरिंदध
नाढगहेहैं ॥ ४१ ॥ बेदपुरानपढेरचयज्ञरिझायकिदेवमहापदपाए । बादजईगुरुभा
नकवीहरवारदसारदकंठकहाए। विप्रपतीपरवर्जकगर्जतआयप्रभूढिगहीविसमाए ।
देषप्रतापलगेचरणीकुछप्रण्णकरीसमझेमगआए ॥ ४२ ॥ वेदपुरानकिधारकहैइत
हासकहैसभवैदकजाने । आठहिअंगनामित्तलषैरचअंगगुणेवहुभागपछाने । कोशध

रेबहुशव्दकोसाधानयुक्तिकरैबहुछंदवषाने । न्यायकऔरघणीविधपंडत श्रीजिनजीत
लियभ्रमभाने ॥ ४३ ॥ गौतमपंदकसोमलसोसिवरायरिषीशुकदेववषावे । याविध
भव्यअनेकतरेभवसिंधजहाजप्रभूपगमाने । आपतरेबहुतारतहैप्रभुश्रीजिनदेवाजिनं
दसुजाने । सेवकवंदतहैकरजोरकरोमुझपारदयानिधदाने ॥ ४४ ॥ साधविसाधुनि
यानकियोजिनवीरछुडायअराधिककीने । मेघकुमारगिरंतकियोथिरसारथसाथसंभा
लहिलीने । याविधऔरघणेजियकोजिनराजसमाधमहासुषदीने । सर्वजिणंदकरेइ
महीनितसेवकवंदतप्रेमकिभीने ॥ ४५ ॥ मानपलोपमसागरकोसुनाचित्रसुदंसनकोचि
तआयो । श्रीजिनताहिदिषायभवांतरदेवपणोनररूपदिषायो । पायविरागभयोमुनि
उत्तमयाविधभव्यअनेकतरायो । तोडमहाअघजालदियोसुषदेवासिरोमणनाथकहायो
॥ ४६ ॥ केशिकुमारकहापरिदेसिकुसंजतरायरिषीबनवासी ॥ सैनककोसुअनाथ
महामुनिविप्रनकोहरकेसिसुभासी ॥ श्रीजयघोपप्रवुद्धकियोद्विजभ्रातमिटायदईभव

फासी । श्रीजिनश्रीजिनकेमुनिराजकरेउपगारमहासुषरासी ॥ ४७ ॥ धर्मकथाअति
सुंदरश्रीजिनराजकहीसभहीसुषपाया । केनरनारिलियेरिषचारितकेअनुव्रत्तलईमग
आया । पुनउदेतिरयचतथात्रियश्रावककेसमदिष्टसुहाया । देवभएजगताअतिमोद
तसर्वहिभव्वनमीगुणगाया ॥ ४८ ॥ भक्तिकरेसुरराजमहापटनाटकगीतवजंत्रबजावे
अद्भुतहासासिंगारमहारससोभतहै करुणारसपावे । बीरमहारससाथसजेरससंतस
मोसरनेढिगआवे । धर्मसमोसरणअतिमोदमहानिजराजिनराजबतावे ॥ ४९ ॥
॥ दोहरा ॥ सकलजगतपरद्यालप्रभुसुकलध्यानभगवंत । वंदोश्रीजिनपर्मगुरुजिह
ढिगकरुणामंत ॥ ५० ॥ आदिअनादीरीतसुरकरेभक्तिउतसाहि । रागद्वेपतेरहितप्र
भुसर्वदर्वअनचाहि ॥ ५१ ॥ भवजनपावेभक्तिफलअघपयसुकृतबंध । इहभवपरभव
सुषलहैजगेबोधमिटअध ॥ ५२ ॥ भक्तिज्ञानविबभांतसुलहैस्वर्गसिवषेत । तिहका
रणरचणारचीनिजआतमकेहेत ॥ ५३ ॥ मत्तगयंदछंद ॥ श्रीजिनदेवमुनीसाकिदस

णआवतदेवपतीहरिषाई । सुंदरयानविमानविषेचडसाथसभीपरिवरसज्ञाई । तीन
प्रदक्षणदेचरणीनमिधर्मकथासुनप्रीतलगाई । फेरनमैकरजोडरचैवरनाटकगीतमहा
चतुराई ॥ ५४ ॥ सिंहाविलोकनछंद ॥ यमकाअलंकार ॥ सोहेसुरराजराजसं
पतयुतयुतदेवीगणदेववरै। जिनवरपगवंदवंदणाकरकरपेष्यापरसुभभक्तिकरै। दाहण
भुजकाढकाढ हतेवरदेवकुमारअनूपधरै । कुमरीबहूरूपरूपजोवणानिधवामीतेसुर
प्रादकरै ॥ ५५ ॥ किलगीसुरमुकटमुकटमालायुतमालगलेमणिमोतनकी । टीकावर
भालभालसेमणिकीमणिकुंडलछविजोतनकी । बैंसरवरनाकनाकवासीसुरसुरतधार
आभर्णगले । भूषणभुजहाथहाथपगअंगुलकटसभअंगउपंगभले ॥ ५६ ॥ गंधतव
रवरणवरणवरणोकेवर्णयोगपटकंतछवी । लेपणसुभगधगंधमुषसुंदरसुंदरवपुअषकेतु
दवी । घुमघुमघुमकंतकंतपगघघरूनेवरछणछणकारकरै । गुंजतअभिमालमालती
मोहतमोहतरससिंगारधरै ॥ ५७ ॥ कुमरीसुकुमारमाररतिजिमपटपटभूषणसजमोद

मई।पोलेमिलपेलषेलकौतुककेकौतुकविधनरलोकभई। नृत्यसहपूरपूरसपात्तमउत्तम
झालरभेरतुरी सुरगणउलसतसांतसभकेचिताचितमोजिणवरभक्तिफुरी ५८ मनवचत
नसुद्धसुद्धविवलोचनलोचनरसजससुद्धग्रहै होंवेसुरभक्तिभक्तिग्रतिउरधरधरचरणा
सिरमोदलहै। साजेवाजंत्रजंत्रवहुविधकेवहुविधगीतसुरागगहै। सातोसुरतालताल
कावाजेवाजेमादलंमोहरहै ॥ ५९ ॥ गावेगंधर्वसर्वस्वरपूरणपूरणविधगुणग्रामकरे।
नाचेनटदेवदेवरचणारचरचनाटिकनटरूपधरै। घटाघणघोरघोरघणघटरविरवटोल
कवरढोलरमै। छैऐछणकंतकंतधुनछंननाछिनछिनप्रभुपगदेवनमै॥ ६०॥ वत्तीसोभांत
भांतभांतनकेनाटकस्वागअनूपकरे। गावेसभरागरागनीसंयुतसयुतमुरछाग्रामधरै।
देषजिनचित्रचित्रनानाविधनानाविधसुररिद्धठवे जिनवरसर्वग्यसर्वदर्शीप्रभुप्रभुस
माधिथिरचित्तभवे ॥६१॥ महिमाइहिदेषदेपवहुतेजनजन्मसफलमनमानरहै धनधन
धनदेवदेवललनाधनधनजिनभक्ताप्रेमगहै। जयजयजयकारकारणेशिवपदाशिवपद

देवाधिदे
वरचणा
॥ १४ ॥

थावनहाभणे । हरहरअ्रगपुंजपुंजसुकृतगहिगहिजिनधर्मपुनीतवने ॥ ६२ ॥ कीरत रचछंदछंदयुतभूषणभूषणसजसुरकंठधरै । केतककरजोरजोरकरचितकोश्रीजिणवर कोध्यानकरै। मुर्नमनगुणधारधारसंयमतपतपतमेटाचितसुद्धभए । तरनीरसंसारसा रकेवललहिलहिपदमोषअडोलथए ॥ ६३ ॥ जोजनमितषेतषेतादिवसमाजिहसुनस वदाादकप्रादभए । फुल्लनकेटरढेरऔषधरजगंधधूपसुषदानथए । षटरितसुपदेवदेव दुंदभिधुनमंदमंदसुभवायचले । प्रभुकोउपदेसदेसदेसोकेसुरनरतिर्यंचसुनतभले ॥ ॥ ६४ ॥ सिंहासनरत्नरत्नमयऊपरप्रभुअनूपतनसोभरह्यो । छत्रोतमतीनतीनजग प्रभताचामरशक्रईशानगह्यो । भामंडलजोतिजोतकीजीतकतरुअसोकयुतरिद्धजहा राजतगुणऊचऊचनभभेदतलवुसहंसयुतकेतुमहा ॥ ६५ ॥ मणिमयवहुवर्णवर्णवहु मिश्रतधर्मचक्रगरजाटकरै । उत्तमजयवंतकंतधुनसुनकरवादीजननितपायपरै । केते
[illegible]

जिनराजथए ॥ ६६ ॥ गंधोदकवृष्ठइष्टमनमोहनपुष्पवृष्टदलवृष्टभली । दसोदिस
उद्योतहोतनिसवासरगमनागमसुरसंघमिली । चिंताभयरोगसोगदुष्टाश्रमछलभ्रम
इमअघहोरघणे । इहिहोइनकोइदोषातिसमंडलसमोसरणजिनराजतणे ॥ ६७ ॥ ॥
जिनवरचितशांतशांतदसयातिवरवरमंत्रीकरुणागरजे । सैनापतिबीरबीरद्वादसतपवर
समोसर्णसिंगारसजे । सुरगणवनभक्तिभक्तिजवपावेहासमहारसताहिविषे । प्रगटे
सुररिद्धरिद्धमुनिलब्धंताहिअद्भुतरसदक्षलिपे ॥६८॥ दानवसुरसाथसाथफणगुरुडेसुक
सीचानकपोतघणा । गजमृगमृगराजराजतेसीतलजिनवरउपउपशांतमना । इमइ
मवहुजातजातजीवनकीरलवैठेनिरवैरभए । अद्भुतरसज नजानाजिनदेपनश्रीजिनरा
जअलपथए ॥ ६९ ॥ वाणीउपदेसदेसणाअद्भुतअदभुतरसातिहमाहिथया । इकइकस
ब्दार्थअर्थसंष्यानाहिश्रुतिदेवीजिहवासलिया । सुनसुनजिनवैनचैनभवजनाचितसुधा
पानरसधायपिया । जयजयजिनराजराजअविचलजिहाजिहपगअरचनदेवाकिया ७०

आतमरिपमोहमोहकीसंततजन्ममरणदुषहानथया । तिनकोबलघंडषडचूरणकररु
द्रमहारसकाजाकिया । तनतेसबदर्वसर्वविष्ठासमसमझताहिविभछाडतहै । हिंस्या
दिकदोषमोपमगघातीताकोभयरससराजतहै ॥ ७१ ॥ आठारसरूपरूपअपनेसुशां
तरसेस्वरपासरमे । साधेसवकाजराजरचणारचपायलागवहुवारनमै । सोहिरस
शांतशांतरूपीचितचिताजिनवरकेमाहिवसै । जयजयजिनचंदचंदत्रिभुवनकोत्रिभुवन
केवलज्ञानलसै ॥ ७२ ॥ तुमसमनहीसूरसूररिपमर्दणहारिहारिविधनाहोरघणे । तव
गुणगणगेणतगणकलिपलेषकंथकतसेसगुरुकौनभणे । हैअभुजगदीसदीसानिस
वंदोवंदोभवभवश्रीधरजी । जयजयजिनदेवदेवदेवनकेकरकरुणाकरुणाकरजी ७३॥
भगवनसरवग्यसर्वदर्सीप्रभुलोकअलोकप्रकासप्युणी । रागादिककर्मभर्मतेरहितेअ
गमअगाधिअपारसुणी । घनकनवनपातरातकेतारेगिणेकौनजगमाहिगुणी । महिमा
गुणसिंद्धसिंधभवतारो णाकहिकहिथकतमुणी ॥ ७४ ॥ निश्चलसमदर्शदर्शतव

मूरततवपदपंकजपर्सणको । श्रावकमुनिवृंदवदसुभधर्मीधर्मसभातवदर्शणको । मेरे मनइछइछपूरोप्रभुप्रभतातवपरलोकभई आपणकरदासदासकोदरसणदेवोमुझमन चाहिथई ॥ ७५ ॥ दोहरा ॥ लघुवुद्धीकेतेकहुंतुमगुणअमितअनंत । अंजलमैकेते ग्रहोजलनिधजलदष्टंत ॥ ७६ ॥ तुममातातुमतातगुरुसाधुसर्णकोठाम । दर्शणदे वोनाथजीश्रीसीमंदरस्वामि ॥ ७७ ॥ भवजलशिवपुरअंतरेसजोगीधरसीम । श्री सीमंदरस्वामीजीजहावसोद नभींम ॥ ७८ ॥ अहिगजकेहरचोरतेशिषजलवनरण रोग । व्यंतरमानवदूरभयसमहीहरदुपसोग ॥ ७९ ॥ निश्चलचितसिद्धांतरसवि ध्नरहिततवसेव । इहिभवपरभवधर्मरुचरहोमुझेसुणदेव ॥ ८० ॥ मत्तगयंद छंद ॥ कोउभजेहरिशामविरंचहईद्रससीसवितापितरांको । शेसगणेसशिवादुरगाजलपा वकवायुरमाइतराको । जक्षसुरासुरनागघणेजगनायकशक्तिअनेकधराको । सर्वति उत्तमतारकश्रीजिनसेवकसेवनशांतकराको ॥ ८१ ॥ दंसनवंदनपूजनसेवनश्रीजिन

देवकुमंगलकारी । कीरतगावनध्यानलगावनरूपदिपावनमैगुणभारी । जोनरनारिसु
नेरचणादुषदोषहरैसुपशांतभंडारी । जैनजवाहरपावतसोजिनपुन्नकिएचितलायत्र
पारी ॥ ८२ ॥ दोहरा ॥ श्रीजिणवरगुणनिधअगमसुरपतिलहैनपार । नमोनमोज
गदीसजभिवजलपारउतार ॥ ८३ ॥ नवरसरंजतस्तोत्रइहछंदअनूपमअर्थ । पढत
सुनतिअतिहर्षचितशिवदिवसर्वसमर्थ ॥ ८४ ॥ गीया छंद ॥ कलस ॥ श्रीजैननाय
कषमदायकमुक्तिलायकपूजीए । गुणरतनआगरज्ञानसागरसेवनागरहूजीए । पण
साठसंमतसैअठारहिचेततिथप्रतपदभणी । विधदिनकसुरपुरनमतहरजसदेहुप्रभु
समताघणी ॥ ८५ ॥ इति श्रीदेवाधिदेवरचणा संपूर्ण ॥

अथ श्रीदेवरचणांप्रारंभ्यते ॥

॥ दोहरा ॥ अवसुरगतिरचणाकहुं सुनोभवकमनलाय । पंचिंद्रयतिर्यंचनरपुन्न जोगतेजाय ॥ १ ॥ देवविमानीजोतकीभवनपतीबनवास । चारजातवहुभेदसोंजिन वरकीयोप्रगास ॥ २ ॥ रागसाथसंजमकीएअहीधर्मव्रतपाय । वालतपस्याकष्टकर अरअकामनिजराय ॥ ३ ॥ अंतसमेसुभभावसोंमानवअरुतिरयंच । तजसरीरसु रगतिलहैरमैविषेसुपपच ॥ ४ ॥ दयादानतपभक्तियुतपुन्नतरोवरलाय । सिंचभाव जलफललहैसुरगतिरससुपपाय ॥ ५ ॥ अथनवनामपुन्नवर्णनं ॥ दोहरा ॥ षान पानथानकवसणसैनदानविधपंच । मनवचकायासुभरमणनमणपुन्ननवसंच ॥ ६ ॥ सुद्धवीजआछीधरणबीजनकीरुतहोइ । जभैषेतबहुफलकरैतिमसुकृतिफलजोइ ॥ ७ ॥ अणमोदनतेफलवधेनिंदनतेघटजाय । सुभकीकरअणमोदणापापनिंदमललाय ॥ ८ ॥ ॥ अथ पंचिंद्रयसुपकथन ॥ दोहरा ॥ नाटकगीतवजंत्रधुननिजकीरतसुनकान । श्रुतिइंद्रयसुपमनमगनपुन्नउदैफलजान ॥ ९ ॥ सुंदरवपुभूषणवसणरूपवतीसेपेल

कनकविविधमणिमयसदनदृगइंद्रयसुपमेल ॥ १० ॥ कुसमदामगंधतवसनपुष्पसै नवरधूप । हिमहिमाशुलेपनविविधघणइंद्रयसुषरूप ॥ ११ ॥ उत्तममधुरमनोज्ञर ससुधापानरसकंत । पुन्नउदेभोगेअमरभाषेश्रीभगवंत ॥ १२ ॥ सुभसपरसातियापि याकेमृदपटसेजसुपौन । सुरसफर्सइंद्रयरमैलहैपुन्नविनकौन ॥ १३ ॥ मनसुपस दाप्रमोदतावचनविलासहुलास । वलप्राक्रमदूषणरहितकायासुपपरगास ॥ १४ ॥ जोगिंद्रयमयाविषयसुपसुरभोगादिवपेत । मुणिनहिवछतशिवभजननमनदेवइसहेत ॥ १५ ॥ मत्तगयंद छंद ॥ उत्तमउत्तमसाधसरागसुसंयमदेवविमानभएहै । देस व्रतीमुनिसेवकश्रावकउत्तमसोसुरकलपगएहै । मध्यमभेदअनेककरीतपदेवचहूंविध माहिथएहै । कष्टअकामसुभायविपेमरदेवजाघिन्नाकिवासलएहै ॥ १६ ॥ कंकरकंट कपंकरजादिकनीचअपावनथोकनहीहै । यत्रनपंषिपशूनरनारिकिनोविकलिंद्रयदेव सहीहै । नित्यप्रकासनहीनिसवासरदेवमहाद्युतिहोइरहीहै । स्वर्गविषेसुपभोगतहै

सुरयाविधश्रीजिनराजकहीहै ॥ १७ ॥ भूमिभलीवरुणादिचहूसुभदिव्यसुभौनवि
मानप्रतापी । वृक्षलताकुसमाकरकाननदेवरमैसुभरूपकलापी । सीतलमिष्टसुगंध
तनीरभरीकमलायुतकेतकवापी । सैलसरोवरकेतकदेहरयारचणादिवमैविधथापी ॥
॥ १८ ॥ तप्तनसीतलविघ्नकछूतिहअंबरमाहिविकारनकोई । मारतमंदसुगंधमईजि
हरुत्तवसंतसदासुषढोई । धामलगैनगसूरससीकुजसोममईजकवीशनिहोई । पुन्न
विपाकरमैदिवमेसुरश्रीजिनभाषतनिश्चतसोई ॥ १९ ॥ ऊचाविमानदिपैमणिमोतिय
वर्णवितानअनूपसुहाई । सव्दमनोहरदुदभिघटणकोवरनाटकगीतरिझाई । गंधज
हावरमालप्रसूनसुगंधतचारसुधूपधुपाई । भोगविलासविषेविविधागतिआयुनजानत
पुन्नकमाई ॥ २० ॥ थंभघणेनगहाटककेमुकतामणिकंचणगुंथतजाली । क्रांतमणी
कविसीसनकीवरकेतुपताकमसाथविसाली । भीतवचित्रसुचित्रमईवलसिद्धपुरीन्रृत
कौतिकवाली । ताहिविषेविविधासुपभोगनपूरणइंद्रयपंचरसाली ॥ २१ ॥ गर्भनसे

जविषेउपजेतनपूरणएकमहूरतमाही । गंधतस्वासकरीटसुकुंडलहारसुभूणसोभतबा
ही । अस्तनरक्तनमासमईतनरोगजराअंगहीनतनाही । फूलकिमालसदाविकसी
सुरनाकविषेउलसंतसदाही ॥ २२ ॥ जोबनबंतसुभंतसदामनबंछतरूपसुवैक्रियसाजे
नींदनहीपलकानलगैनहिआलसप्राक्रमबंतसुछाजे । कौलअहारनहीमुषमेलनवास
एलैअपतेअतिराजे । पुन्नमहातरुकेफलभोगनलिंगत्रियापुरुषाविवबाजे ॥ २३ ॥
भूमछूहेनचलेनभमेअतिपिप्रगतीमितकौनपछाने । कारजासिद्धकरेमनकेवलऔावध
रीतिहुकालकिजाने । एकतिकाढअनेककरेतनतेबहुभांतिकिकौतिकठाने । पुन्नाकिये
भोगतहैसुरयाविधश्रीजिनराजबषाने ॥ २४ ॥ वीरजरक्तबिनारसमैथुनस्वेदनपे
या । मैलनहीश्रुतलोचननाकजिभातनकीनहिदीसतछाया । श्लेषममूत्र
। जिनराजबताया । हैसमहीचतुरंसछवीसुरपूरवपुन्नउदेदिव
ंनछवीसरस्याममणीद्युतिरक्तिमणीके । पांडुरनीलसु

गौरतनोतनसुंदरमोहनरूपगुणीके । अवररंगघणेतिनकेसिरमौलघणीविधलछणनी
के । रिद्धजघिन्नसुमध्यमओडकभेदअसंषसुवाकमुनीके ॥ २६ ॥ मूलसरीरमुमान
वमूरतउत्तररूपअनेकधरैया । अस्वगजादिकरूपघणीविधस्वामिकिआपणकाजक
रैया । थूलतिसूषमसूषमतेगुरुकौतकभांतअपारदिपैया । चित्तहुलासकलोलकरैसुर
गीतसुनाटकताथईथैया ॥ २७ ॥ भूमपहारसिषीजलकाननसर्वविषेगतिरोकनकोई
अंवरजातपतालधसैतिरछेप्रगटेसुछपैसुरसोई । जंतकिदेहप्रवेसकरैनिरजीवविपेध
सजीवसुहोई । सक्तअनेकलईतपसाकरपन्नतरोवरकोफलजोई ॥ २८ ॥ वाहनदेवण
केगजगोहयसिंहकुरंगतथामहिषंगी । मोरमरालफणीगरुडामरएकणकेषरस्वानसु
रंगी । औरघणीविधरूपधरैसूरभूषणवस्त्रसजोछविचंगी । यानविमानचडेवहुसोभत
भापतजैनपतीसरबंगी ॥ २९ ॥ वित्तरभौनपतीसुरजोतिककल्पदुहूंलगहोवनदेवी ।
तांतिगमागमअष्टमलोमनअच्चुतलौचलकेरसवेवी । आदिकिकल्पकिमोदलहैविषमे

सममाहिइशानकिलेवी । यारचणासुरकलपविषेमुनिभाषतहैजिनआगमसेवी ॥३०॥
केतकस्वामिग्रहीवरकामणकेतकहैगणकावतदेवी । रूपनिधीरतिकेलविधीगुणधाम
सजाहितकेरसभेवी । कायकरीपरसेहगसोवचसोमनसोइममैथुनसेवी । कामबली
सुरकलपलगैउपरंतवसेतिहनामनलेवी ॥ ३१ ॥ कामविकारफूरेसुरकोजवकोऊरमै
अपणीघरणीसो। कोउकुवुद्धकरीपरकेसंगकोइरमैगणकावरणीसो । वैक्रयकीरचणा
रचकेसुरभोगविलासकरैतरुणीसो । याविधभोगविलासकरैसुरशक्तिलईअपणीकर
णीसो ॥ ३२ ॥ एकसुरिंद्रकिपंचसभाउतपातसभाउपजेजिहमाही । होतअलंकृतदू
सरिमैअभिषेकसभापदवीजिहठाही । ज्ञानकलाविवसायसभाजिहपुस्तकरत्नविरा
जरहाही । पंचमिराजसभापरिवारमिलेजिहनामसुधर्मकहाही ॥ ३३ ॥ राजसभा
जिसमध्यसिंहासणईश्वरपूर्वदिसापटरानी । उत्तरवायुइशानदिशासमआयुसुरेश्वरइं
द्रसमानी । पावकदक्षणनैरतगौपरसात्रयभेदसिद्धंतवषानी । पछमबाजकरीरथपाय

कगोधुजगीतपतीनटमानी ॥ ३४ ॥ राजसिंहासनतेअगलेवलआतमरक्षचहूंदिसधा
री । चक्रकृपानगदाबरछीधनुवाणकुठारतुफंगकटारी । वज्रघणीविधसस्त्रसजेगुणचा
रसमानकतेपरिवारी । सेवकरेसमकिंकरकीनिजनाथकिपाससदाहितकारी ॥ ३५ ॥
आतमरक्षकिकेअगलेवलअंतरकीपरसाअभियोगी । तांअगलेइममध्यमकोतिनतेमुर
अंतमकिंकरलोगी । तातिघणेनृतगीतकतूंहलहासविलासदिपावनजोगी । देवसभा
दिवमाहिकहीइमयापद्ववीविनपुन्ननहोगी ॥ ३६ ॥ मानवचैतकथंभदिपैजिनअंगध
रीवररानसभाही । पुस्तकरत्नविराजतहैविवसायसभासुभथानकमाही । धर्ममहा
तमजानसभादुहुकामविकारकरेसुरनाहीं । औरतहाअटकाउनहीसुरकामकलोलकरे
चितचाही ॥ ३७ ॥ अश्वअणीगजवाहनकीरथकेधुजकीसुरपायकजोहे । पंचमगो
महपीधुजवाहनभूपणपंचअणीयुतसोहे । षष्टमगीतकलारसपूरतसातमनाटककेरस
मोहे । सातअणीयुतदेवपतीसभजैनमतीजिनआगमटोहे ॥ ३८ ॥ जेइसलोकतिऊ

रधकेसुरऊरधचालविषेश्रतिगामी । देवपतालकिवासककीश्रधुमाहिमहागतिभापत
स्वामी । सातश्रणीविचपंचकेसुरऊरद्धकेवृपभाध्वुजनामी । हेठकिदेवकेहेमहिपाध्व
जजैनकिबैनमहासुषधामी ॥ ३९ ॥ वितरभौनपतीवहुऊरद्धजोतिकश्रौधवडीतिर
छानी । देवविमानश्रधोदिसकोवहुऊंपरआपनकेतुलगानी । श्रौधजाघिन्नवनेभवने
उतकिष्टश्रनुत्तरपंचविमानी । दर्वतिषेत्रतिकालतिभावतिभेदश्रसंपकहेजिनवानी ।
॥ ४० ॥ कल्पदुहूंसुरआदिमहीश्रगलेविवदूसरतीसरहीइम । सात्तमश्राठमहीचहु
देषतपचमकल्पपरेचहुकेतिम । पष्ठमिपष्ठकहेश्रहिमिंदाकिसातमतीनपरैतिनकेजिम
हेठसभीकछुऊणअनुत्तरचारकिपंचमकेसमहीषिम ॥ ४१ ॥ वितरजोतिकइद्रनतेभ
वनेश्वरइंद्रवडीथितधारी । तांतिमहाबलप्राक्रमरिद्धविमानपतीवरइंद्रविचारी । चौस
ठइंद्रविषेवरऊरधश्रच्युतइंद्रादिपैगुणभारी । सोजिनराजकिपायलगैकरजोरनमेस्तव
छंदसवारी ॥ ४२ ॥ इंद्रसमानकलोकपतीगुरुजीश्रणलाधिपतीश्रभिजोगी । अंतर

मध्यमवाहिरवासकउत्तममध्यमनीचमलोगी । उत्तरवैक्रयकोकरुणागमनागमचाक
रठाकरयोगी । यारचनासुरकल्पलगेउपरेत्रहिमिंदमहासुपभोगी ॥४३॥ एकसुसन्द
अनंतसुकर्मकिअसंपपावनवितरइदू । दोधरणादितिहुंअसुरेंदचहुग्रहतोसतपंचरविं
दू । एकदुत्रयचतुकल्पदुगेदुगपंचसहंसचहुंकलिंपदू । लाषइकोदुतहीचतुपंत्रयये
त्रिकचोदिवअंतअनिंदू ॥ ४४ ॥ वृद्धतिवृद्धअनंतगुणासुषदेवजाघिन्नतोवित्तरइदा ।
तांतिवडोधरनादितिसोअसुरेदतिसोग्रहतोरविचंदा । कल्पदुगेदुगअष्टमलौचतुकल्प
सुरात्रकत्रयओहींमदा । चौविजयादितिसोलवसत्तमगासुपभोगनवेनजनिंदा ॥४५॥
चौसठइंद्रअनुत्तरकेसुरश्रीजिनसासनबोधकदेवा । छप्पनगौकुमरीजिनजन्ममहोस्त
वकीकरणीसमसेवा । यापदवीसभपावनहारलहेजियभव्वअभव्वनलेवा । भव्वअ
भव्वदुहूविधकेसुरभाषतसाधुमहाश्रुतिभेवी ॥ ४६ ॥ भव्वजिनागमवाकसुनेचितप्र
णउठेचरचामनलावे । सम्यकवोधलहैनरहोव्रतधारचिंद्रूपाकिजोतपिंडावे । स्वर्ग

विमानविषैसुपभुंजतमानवहोइमहामगधावे। केवलपायभवेशिवपूरणसम्यकबोधत्र्र भव्वनपावे ॥ ४७ ॥ जीवअभव्वकठोररिदाछलछिद्रमृषामतिअघगवारी। सम्यक चांदनज्ञानमहारविसैलगुफातमभीतविकारी। आगमअंगअनिष्टलगैविपरीतविषे चितकीवृतधारी। सोपकदाचलहैनरहैजगहैभवसागरकोअधकारी ॥ ४८ ॥ भव्य अभव्यसमासमदिष्टकिसुल्लभबोधकिदुल्लभबोधी। अंतभवीविनअंतभवीपरजापर जापतिसीतलक्रोधी। देवअराधिकऔरविराधिकवैरनिवारकनित्तविरोधी। धर्ममतीअ घधाद्दुविधेसुधसाधुवपानतहैश्रुतिसोधी ॥ ४९ ॥ ऊरधमध्यपतालविषेतिरछेबहुबा रधदीपनिवासे। त्रैविधसोगुणतीनमईसुरतीनहिकालअनंदहुलासे। सम्यकमिश्र मृषात्रिविधेचितभावमईत्रिदशापरगासे। त्रैपदभाषकत्रैभवनेश्वरवाककहैसुनियोभ्र मनासे ॥ ५० ॥ केतकसम्यकवंतसुज्ञानधरीजिनमारगरीझरहेहै। साधुसुश्राव ककोहितवंछकधर्मरुचीफुनधर्मलहेहै। केतकदेवमृपामतिमुछंतभोगविलासविकारच

हेहै । कैसुभसंगतितेसमताग्गहित्यागमृपामतिधर्मगहेहै ॥ ५१ ॥ एकसदार्थराचेत्त
सुशांतिश्रनिछतउत्तमभोगरमंते । एकनकेरितचाहिलगीरतिकामकतूहलफासफसंते ।
एकगंभीरश्रलालविचक्षणएकमहाचपलातिहसंते । वंछतवंदनपूजनकोइकदेवनही
इहचाहिधरंते ॥ ५२ ॥ एकनहीश्रतिसीतलकोमलमिष्टसुगंधसुउज्जललेशा । एक
नदेवनकेसुभपद्मछवीउरश्रंतरभावनवेशा । सुंदरतेजसरूपभलीविधकेतनकोचितरा
जतएशा । तीनभलीसुभभावमईवरणीजिनराजसुधर्मधरेशा ॥ ५३ ॥ एकनदेवनके
घटश्रंतरदुष्टमतीश्रधिकारकलेशा । हिंसकभावकठोररिदाछलछिद्रश्रधर्ममईउपदेशा
रूषरुतप्तमहाकटतीषणषोलहडीफलगेजिमतेशा । नीचकुगंधकुरूपमईअतिकालछ
वीइमकालकलेशा ॥ ५४ ॥ एकनदेवनकेदुरबुद्धदशादुपदायकनीलमईहै । एकनके
उरदंभदशाश्रघलोभसमेतकपोतथईहै । तीनहिनीचकहीवरणादिकतेश्ररुभावतनी
चगईहै । मूलमईवरणीप्रभुएकसुएकविषेपटभांतमईहै ॥ ५५ ॥ वर्षहजारकहीदस

आयुजघिन्नवडीतवतेत्तिससागर । मध्यविषेवहुभेदग्रसंषकहैजगदीससुज्ञानउजागर
ग्रायुवडीतिमहीदुतिशक्तिगतीवलप्राक्रमग्रौधगुणागर । वैक्रयवुद्धविचक्षणतासुषग्रा
दरारिद्धलषोमतिग्रागर ॥ ५६ ॥ ग्रायुवडीगुणतेग्रधिकेइकएकवडेपदवीगुरुपाई ।
ग्रंतमग्रायुलईसुरतेइकनूतनरिद्धलईग्रधिकाई । सम्यकधर्मकरीअधिकेपरिलोकल
गैजिहधर्मसपाई । सर्वगुणेग्रधिकेसुरउत्तमहैसरवारथसिद्धसहाई ॥ ५७ ॥ इंद्रयपंच
त्रियोगमईदसप्राणमईत्रयज्ञानत्रिदंसी । चारकपायधरीपटलेसकिएकसंठाणसमोच
उरंसी । दूसरकलपलगैकरसात्ततनूतिनऊपरघाटघटंसी । ग्रोडकहाथतिघाटग्रनुत्तर
महिजिणंदकिवैननिसंसी ॥ ५८ ॥ भूषलगैजवदेवनकोतवहीसुभगंधमईरसवाले ।
उत्तमदर्वकिवासनलैकरत्तपतिकरैचितरूपरसाले । ग्रायुजघिन्नकुएकदिनंतरवर्पसहं
सकिसागरनाले । भूषकिग्रंतरभेदघणीविधजैनाकिवैनमहाभ्रमटाले ॥ ५९ ॥ उत्तम
कोसुभभक्षसुधाफलमिष्टभलेपकवानसमेवे । नीचकरैमदमासकु

भीसुरलेवे । उत्तमनीचदुहूंविधकेकहिलेतअहारगुणीसुधदेवे । सर्वविकारमिटेसुरनि
श्चलसोप्रभुसिद्धसदाकविसेवे ॥ ६० ॥ चाहिनहीगमनागमनेकहुलब्धनफोडनतुछ
कपाई । कामविकारकुनामनहीजिहराडविवादउपाधनकाई । साथसंयोगवियोगन
हीजिहसीतलभावसदाहरपाई । पोहलहीरविश्रादिश्रनूपममध्यरमैश्रहिमिदसुहाई
॥ ६१ ॥ जोश्रतितृप्तिभएनहिचाहतभोजनतोविपयादिश्रचाही । तुष्टमहासुखमैपर
मोदलहैश्रहिमिदरहैनिजठाही । चाकरठाकरकोइनहीभयवर्जसुछंदकहैगुणग्राही ।
द्वादसकल्पकिऊपरराजतयारचणावरणीशिवराही ॥ ६२ ॥ पंचश्रनुत्तरमाहिसदा
थिरसम्यकदृष्टमहासुषकारी । हेठनवेपुरमाहिदुधासुरसम्यकवंतमृपामतिधारी ।
जोजिहदृष्टसदाथिरसोहनमिश्रदशातिहनाहिउचारी । यारचनाश्रहिमिंदपदेजिन
राजकहीगणधारविथारी ॥ ६३ ॥ जोश्रहिमिंदतणेचितमाहिउठेजवप्रश्नतदुत्तरभा
वे । जोजिनकेवलिकोधरध्यानरिदेविचप्रश्नकरेमनलावे । केवलिधाररिदेविचउत्तरदे

तसुज्ञानकरीसुरपावे । ग्रावनजावनरीतनहीनिजठामरहैचितमैगुणगावे ॥ ६४ ॥
देवविमानअनुत्तरकेचितउत्तमसम्यकग्रौधसुज्ञाने । दर्वग्रनुत्तरभावग्रनुत्तरग्रागमबो
धग्रनुत्तरध्याने । पुन्नग्रनूपसभीसुरऊपरग्रागममैनवजन्मसुथाने । सत्तसुभावदया
लरचेशिवसाधिकहैजिनवैनप्रमाने ॥ ६५ ॥ सिद्धभएसभग्रर्थजहासरवारथसिद्ध
विमानकहावे । ग्रायुवडीउतकिष्ठतथासुपसर्वसिरोमणिदेवसुभावे । एकलहैभवना
नवकोवहुरिद्धलहैफुनसंयमपावे । केवलज्ञानलहीशिवपायकिसिद्धभएजगफेरनग्रा
वे ॥ ६६ ॥ पंचमिसंपग्रसंषचहुगुणसंपकहेग्रहिमिंदनवांके । तांतिग्रसंपगुणेकल
पेतियसंपगुणीविवकलपसुरांके । तांतिग्रसंषगुणेभवनेतियसंषगुणीसुग्रसंपबनाके ।
वितरनीसुरजोतिकजोतिकनीगुणसंषातिसंषसभाके ॥ ६७ ॥ जानतहैइमकालसमा
घटक्रांतविमानसुभूषणकेरी । कल्पतरूध्रजकोकुमलावतदेषलपीविपरीतघणेरी ।
ग्रापनतेजसलेसघटीलषग्रौधधरीसमझेइममेरी । यादिवतेथितपूरिभईग्रवकर्मसहा

वलवंतकिफेरी ॥६८॥ तारिकुरूपचलेतिहुकारणवैक्रयदेवकरैजवकोई । मैथुनभोगाकि
भोगनतेअरुठामतिठामचलेजवहोई । देवकरैविजुलीदुतिगर्जतवैक्रयमैथुनमैवलठोई ।
साधुमहातपकोअपनावलआक्रमारिद्धदिषावनसोई ॥ ६९ ॥ आवतहैइतिकल्पलगै
जिनराजमहोछविकारणदेवा । वंदनपूजनपूछनकोमुनिकेतपकीमहिमालषसेवा ।
मोहकरीलपसाथपुरातनवैरकरीरिसरूपधरेवा । मंत्रअराधनध्यानक्रयानरलोकवि
पैसुरप्रादुभवेवा ॥ ७० ॥ देवभएततकालचहैनरलोकमिआवनआयनसाके । जेदु
तिलोकपदारथमुर्छतकारणतीनसुनेगुरुवांके । प्रेमभयोउतलोकाविपैहितहद्दगयोइतते
चितचांके । जाववहीकुछकालरहीइमचिंततकालगएवहुतांके ॥ ७१ ॥ देवसमूहसु
साथभयोललनाजनमाहिमहारसपाई । मानवलोककिकारजकोचितचाहिमिटीथिर
तातिहआई । घोरकुगंधअपावनहैनरलोकइसीलषचाहिमिटाई । याविधआवतना
हिईहासुरकारणतीनसुनोचितलाई ॥ ७२ ॥ जोहुयमुर्छतआवनचाहतसोतिहकारण

निश्चितआवे । जासप्रसादलहेसुरसंपातितेगुरुपूजनवंदनधावे । घोरतपीमुनिदुःकर कारकतेमुनिकेगुनआयदिपावे । मोहिरह्योजिसमातपितासुतनारिजनादिकमैहित लावे ॥७३॥ तीरथनाथकिजन्मसमैरिषहोवनमैअरकेवलपाए । लोकउद्योतप्रमोदम हासुरसंगमहासिंगारसुहाए । देवकरैसिंहनादकतूहलहासविलासहुलासवढाए । चैतकवृक्षचलेइहिलक्षणचित्रमहारसस्वर्गदिपाए ॥ ७४ ॥ आसनइंद्रनकेजुचलेतव औधधरीतिहतइमजाने । तीरथनाथमहोछवहैतिहजायकरोजिनभक्तिसुथाने । आ सनछाडनमैविधसोप्रभुसन्मुपहोइवद्वसुभध्याने । फेरसिंहासनआयसजेनरलोकमि आवनवैक्रयठाने ॥ ७५ ॥ पायकस्वामिबुलायकहैवरघंटणकोघणघोरकरावो । हो यतियारसुरलालिनादिकारिद्धसमेतप्रभूढिगआवो । तीरथनाथमहोछविहैइहिबातसु स्वर्गविपेप्रगटावो । नाथकिसाथचलोधरभक्तिमहानिजरासुभवंधनधावो ॥ ७६ ॥ केचलोइजिनभक्तिधरीचितकेइमहोछवदेपणकारण ॥ वंधनपूजनदंसणदेपणअद्भुत

स्वामिकुरूपनिहारण । कर्ममहानिजरासमझीपरलोकमहाफलजन्मसुधारण ॥ चाह नहीजुतदेवदसोदिसतेसमकालचलेसुभचारण ॥ ७७ ॥ सर्वसुरिंद्रसमागमदेपणना टकगीतवजंत्रउमाही । अद्भुतवैक्रयरूपकतूहलहासविलासविनोदउछाही । नाथकि साथसुमीतकिनेहतेकेइलपीनिजराचितचाही । इंद्रनकीसिरआनधरीइमदेवअसंपस मागमठाही ॥ ७८ ॥ केइहसेगुटकेउछलेसिंहनादकरेगरजेघणघोरे । केइभिडेभभ केदवडेबहुबोलकरेउमगेचहुओरे । एकसुएकमिलेमुसकावतहासविलासविपेचितजो रे । याविधश्रीजिनराजमहोछविमाहिरमैसुरवृंदकरोरे ॥ ७९ ॥ यानिसमातिकिकु क्षवसैप्रभुदेपउठीसुपनेदसचारो । सोमसुलीलतपुन्ननकेतुपतीउपआयसुनायविथा रो । कुंजरगोहरिश्रीअजसूरससीधुजकुंभसरोवरसारो । पीरनिधीमणिरासविमान किभौनसिपाविनधूमउदारो ॥ ८० ॥ जाजननीजठरेप्रभुआवतऔधधरीसुभशक्ति लहेहै । भक्तिकरीप्रणमैविगसैवितरादिकुवेरबुलायकहेहै । भूमिनिधानपुरानमहा

धनश्रीजिनमंदरमेलचेहहै । सोतिरजंभककोकहिकोषितसुद्धकरैमनमोदलहेहै ॥८१॥
दोहिलकारमनोरथमातकुपूरणहोतप्रमोदधरेही । जोबिनदेवनपूरणहोततवेसुरआ
यकिसिद्धकरेही । भोजनपानसुगंधभलेकुसमादिप्रभूग्रहमाहिभरेही । रुत्तसभीसम
हीसुपदायकगर्भकुपोपणदोषहरेही ॥ ८२ ॥ आठहिआठअधोदिसऊरधपूरवदक्ष
णपछमउत्तर । मध्यकिचारचहूविदिसाषतुछप्पनगोकुमरीभवसुत्तर । श्रीजिनजन्म
भएधुरआवनवंदनमातसमेतसुपुत्तर । आवनरीतसभाकरकारजगावनगीतअनूपअ
नुत्तर ॥ ८३ ॥ तीरथनाथकिजन्मभएमघवाघरआयसुमेरलियावे । सर्वसुरिंद्रमिले
तिहमज्जनआदिकरायजिनंददिपावे । सर्वविधेकरवंदनपूजननूतनस्तोत्ररचेगुणगावे
फेरघरेपहुचायसचीपतिसर्वसुरिंद्रनदीसरजावे ॥ ८४ ॥ आपनआपनथानकश्रीजि
नमंदरआयकिबिंबकुबंदन । पूजनभक्तिधरीरचनाटकगीतसुछंदप्रमादनिकंदन । हो
तमहासुभकर्मकुबंधनतत्तामिटेफरसेजिमचंदन । अष्टदिनालगमेलमहाकरआपनथा

नकजायसुनंदन ॥ ८५ ॥ श्रीजिनराजवसेग्रहवासमिउत्तमसम्यकबोधधरेही । कंज अलेपतथाप्रभुराजतदेवसभेप्रभुसेवकरेही । देसाविदेसाकिदर्वअमोलकश्रीजिनमंदरमाहिभरेही । तीरथवर्त्तनकाललपीसुरबोधकआयनमंतषरेही ॥ ८६ ॥ आठहिलापसमेतकरोरसुनैयनकोदिनएकदतारे । सोइकवर्षदियोजिनहीनरभव्यलहैजिहपुन्नउदारे । श्रीमघवादिसुरिंद्रकरेतिहकारजकीरतपुन्नपसारे । चारहिजातिकिदेवकरेकुलभक्तिविषेमनउछवभारे ॥ ८७ ॥ छाडअगारसजेअणगारपदेतवदेवपतीसभआवन । मज्जनआदिसभीविधसोकरभूषणवस्त्रसुगंधलगावन । रत्नमईशिवकासुसिंहासणनाथविठायकिइंद्रउठावन । छाडपुरीवनमारगमेचलवृक्षअशोककिहेठठरावन ॥ ८८ ॥ तौउतरेशिवकातिप्रभुपटभूषणत्यागकिलोचकरेही । इंद्रगहेकचपीरसमुंद्रमिपायणभक्तिकीरीतधरेही । श्रीजिनधारमहाव्रतसंयमशांतदयारसपूरभरेही । केतकभव्यविरागचढेतिहसाथशिवोतमपंथपरेही ॥ ८९ ॥ मोदतदेवकरें

प्रभुसेवमुखोजयकारमहारिवहोई । रूपअनूपकुकोइकरेजसत्यागविरागअसंगकु
कोई । शांतदयालअगाधमतीप्रभुमारगमोषचलावतसोई । देवकरैजसमानवसंघस
मेतरमैप्रभुसोमनढोई ॥ ९० ॥ सर्वसुरिंदनरिंदजनादिमहामहिमाकरपायलगेहे ॥
इंद्रनदीसरजायकरेदिनआठमहोछवप्रेमपगेहैं । फेरसुथानकजायरमेनिजभोगवि
लासहुलासजगेहैं । जोजिनरायकिसेवकरैजियठागम्हपातिनकोंनठगेहैं ॥ ९१ ॥
धारतपीप्रभुपारणकेदिनभिक्षलहैनरनारिदतारो । दुंदभिनादकरेविवधाजयकारअ
होइतदानउदारो । द्वादसअर्द्धकरोरसुनैयनकीवरपानभबादलसारो । नीरसुगंधप्र
सूनफलादिकवृष्टकरैचितभक्तिअपारो ॥ ९२ ॥ केवलज्ञानप्रकासभयोसभइद्रमहा
महिमाहितआए । होइविनीतलगेचरणीकरजोरटिकेचितभक्तिभराए । वैनपयूपसु
धर्मकथासुखदायकश्रीजिनराजसुनाए । जीवअजीवपदारथानिश्चितलोकअलोकाकि
भेदवताए ॥ ९३ ॥ पृष्णाकरैसुरमानवभव्यप्रभूमुपउत्तरपायअनंदे । स्तोत्रपढेवहू

छंदरचेरचनाटकगीतप्रभूपगवंदे । अष्टमदीपनदीस्वरजायमहोछवमांझप्रमादिनि
कंदे । फेरसुथानकजायरमैनिजपुन्नप्रभावरमंतसुछंदे ॥ १४ ॥ ठामतिठामविहार
करैप्रभुतौसुरभक्तिइसीविधधारे । श्रीजिनदोपगधारतिहातिहहेठजिमीसमदेववि
थारे । कंटकहेठअणीजुकरैजयकारमहारिववृंदउचारे । संपनघंटनकीघणघोरवजै
नरसिंहसनादनगारे ॥ १५ ॥ तीरथनाथकिकेवलिधारकिदुकरकारकिदंसणकारण ।
वंदनपूजनपुछनकेहितआवनदेवसदोषनिवारण । एककठेबहुसाथलिएकवहूपरवार
सजीछविधारण । जाचनबोधनसाधुसुश्रावकसंयमकोफलरिद्धदिषावण ॥ १६ ॥ कर्म
निवारसरीरकुत्यागभएनिरवाणप्रभूशिवमाही । आसनइंद्रनकेजुचलेसभआवनतो
जिनकेढिगताही । चंदनमज्जनरीतकरावनलेपनवस्त्रउढावनबाही । वर्जतहासविनो
दवियोगथीनीरझरैइमरूपउछाही ॥ १७ ॥ तेतनकोशिवकापरचाढकिचंदनकीचित
कापरल्यावे । इंद्रकिवैनसुअग्निजलावतवायुकुमारसुवायुलगावे । मेघकुमारसुशात

करैमघवादिकअंगचुनेसुभभावे । थूभबनायनदीसरजायमहोछवपूरसभीघरजावे ॥ ९८ ॥ दोहरा ॥ मानवचैतकथंभमैछीकेधरेजिणंग । अर्चसुगंधसुधूपदेनमेरमेनि जरंग ॥ ९९ ॥ मालती छंद ॥ सकलदुषविनासी पारसंसारवासी अचलअज अरूपी कर्मवरजीअनूपी ॥ १०० ॥ सकलजगतस्वामी सर्वलोकाग्रठामी जयजय जयसिधासेवतेइंद्रवुंदा ॥ १०१ ॥ दोहरा ॥ वडेदेवताजगतमे तांतैउत्तमइंद । सो जाकीसेवाकरै प्रणमोदेवजिणंद ॥ १०२ ॥ इहिविधरचणादेवकीकहीवुद्धअणुसार । अबवरणोकछुऔरभीसूनोभवकनरनारि ॥ १०३ ॥ भिन्नभिन्नवरननकरोजातजात कोरूप । यातेबाढेज्ञानबलश्रीजिनवैनअनूप ॥ १०४ ॥ रत्नप्रभाइकपांथडेतेअंतर निवास । देवअसंषभवनपती मणिउद्योतपरगास ॥ १०५ ॥ ओडकदक्षणसिंध इक उत्तरझझेरीदेव । साढेत्रयपलत्रियाथितसाढेचारतिहेव ॥ १०६ ॥ शंकरछंद ॥ तनकृष्णमणिछविरक्तपटधरमुकटमणिसुभचिह्न । दसवर्षसहंसजघिन्नथितउतकृष्ट

साधकसिंध। चौसाठलापसुभवनमणिमयवस्तअसुरकुमार । दक्षणदिसाउत्तरदिसा
दुविधेअसंपउञ्चार ॥ १०७ ॥ सुरतावतीसतेतीसउत्तमअग्रमहिषीपंच । चतुलोक
पालत्रिपर्षदायुतप्रवलसुकृतसंच । वहुदेवसहंससमानकीयुतदिपतचमरबलिंद ।
अणकाधिपतियुतसातअणकाअसुरपातिविवइंद ॥ १०८ ॥ वरभवनचारअसित्तलापे
वस्तनागकुमार । तनवर्णपांडररतनवतसुभवस्त्रनीलेधार । सिरमुकटफणिवरचिहन
मयवरदामभूषणवंत । धरणिंद्रभूतानंदविवदिसइंद्रअतिसोभंत ॥ १०९ ॥ सुरला
पवहत्तरसुभवनेश्वरस्वर्णकुमार । सुंदरसुकंचणक्रांततनसिरमुकटगरुडाकार । सित
चीरभूषणगंधउत्तमइंद्रवेणुदेव । वरवेणुदालीदूसरेजिहकरतसुरवहुसेव ॥ ११० ॥
पटसत्तलापसुभवनवासीरक्तवर्णसरीर। विद्युतकुमारसुवज्रमूरतमुकटनीलेचीर। सर
वंगभूषणमालधारीइंद्रश्रीहरकंत । उत्तरदिसाहरसिपविराजतपुन्नफलभोगंत १११
वरभवनपटसत्तरसुलापेरमतअग्रसुमार । सुभरक्तिमणिछवितनविराजतवस्त्रनीलेधार

वरचणा
२३ ॥

सिरमुकटकलससुलछणीभूषणसुगंधसुमाल । तिहआग्निशिपअरुअग्नमानवइंद्ररूप
रसाल ॥ ११२ ॥ सुरथंददीपकुमारतनछविरक्तरत्नसमान । सुभनीलवर्णसुचीरसुंद
रमुकटसिंहवपान । वरभवनलाषछहत्तरेवसरमणाचितउलसंत । विवइंद्रपूरणअरुवि
शष्टौनामकथितासिद्धंत ॥ ११३ ॥ इमदेवउद्धतकुमारपांडुरवर्णतनसुभकंत । सिरतु
रंगचिहनसुमुकटसुंदरनीलचीरसुहंत । वरभवनसुंदरषष्टसत्तरलाषमाहिनिवास ।
जलकंतजलप्रभुइंद्रविवसुषभोगपुन्नप्रगास ॥ ११४ ॥ सुरहेमवर्णसुचीरधवलेमौल
गजवरकंत । वासीछहत्तरलाषभवनेविषेसुपभोगंत । इसभांतादिशाकुमारत्रिदसासुर
पतिगुणवृंद । वरअमितगतदक्षणादिशामिनबाहनोत्तरइंद ॥११५॥तननीलवर्णसुकां
तदीपतदेवपवनकुमार । बहुरंगचीरसुगंधभूषणमुकटमकराकार । षटनवतिलाषसुभ
वनवासीइद्रदोबलवंत । वेलंबइंद्रतथाप्रभंजननामकथितसिद्धंत ॥ ११६ ॥ वरभव
नलाषछहत्तरेउलसंतमेघसुमार । तनहेमछविसितचीरमुकटेवर्द्धमानउचार । सुभना

मघोपसुरिददक्षणउत्तरेफुनजान । श्रीमहाघोपधनिंदराजतपुन्नारिद्धप्रधान ॥११७॥ उरगादिनवनीकायसुरथितदुविधओडकहोइ । दक्षणदिशापलडेडकीदेसुन्नउत्तर दोइ । पलपौनअरुदेसूनपलदेवीमहाथितजान । सभभवनवासीदससहंसजघन्नवर्प प्रमान ॥ ११८ ॥ दसजातविंशतइंद्रअतिबलमुकटकुंडलहार । सर्वांगभूषणमाल अवरजोततेजउदार । नितमुदतहासविलासतरुणीसहितचितउलसंत । जिनदेवबं दनपूजनेअतिभक्तिरूपधरंत ॥ ११९ ॥ मंत्रीसमानीअग्रमाहिपीसैनपातियुतसैन । चतुलोकपालत्रिपर्षदायुतरक्षसुरसुपदैन । सजचारयानविमानमणिमयआयवंदन देव । जैजैजिनेश्वरदेवकीजिहकरतसुरवहुसेव ॥ १२० ॥ दोहरा ॥ जातजातदक्ष णथकीउत्तरघटलपचार । संपअसंपप्रमाणमितजोजनभवनविथार ॥ १२१ ॥ इति भवनपती संपूर्णम् ॥ अथ वाणव्यंतरवर्णनं दोहरा ॥ रत्नप्रभामणिकंड मैसैसैजोजनत्याग । हेठउपरविचपेविपेविंतरसुरवडभाग ॥ १२२ ॥ सवैया छंद ॥

चिहनपिशाचकदमवृक्षकेरोसूलवृक्षकोभूतिधरंत । यक्षणगोधपटरापसनोकिंन्नरवृ
क्षत्रशोकसुहंत । चंपककिंपुरुषाकेमुकटेनागमहोरगजातादिपंत । गंधर्वाकेतूंबरतरु
कोविंत्तरलक्षणकथतासिद्धत ॥ १२३ ॥ यक्षपिशाचभूतगंधर्वाशरपशामतनछाविसो
हंत । राक्षसाकिंपुरुषाधवलाभाकिंन्नरनीलवर्णडलकंत । व्यंतरभांतभांतवरणोकेची
रसुगंधसुमालधरत । देसदेसकेवेसमनोहररहासकतूहलचितहरपंत ॥ १२४ ॥ आध
पिशाचादिकव्यंतरयहिआणपाणआदिकवसहोर । सोलसजातवतीसइंद्रातिहइमप
रिवारएकइकऔर । अग्रमहेषीचारचारसहंससमानपरषदातीन । सोलसहंससरीर
रक्षसुरत्रणकासैनपतीपरवीन ॥ १२५ ॥ कालइंद्रदक्षणपिशाचकोमहाकालउत्तर
दिसजान । भद्रसुदिसदक्षणसरूपजीप्रतिरूपेंद्रदूसरोमान । पूरनभद्रयषपतिइति
दिसमानभद्रदिसउत्रपछान । भीमइंद्रराक्षसकुलभूपणमहाभीमदूजोपहिचान १२६
किंन्नरइंद्राकिंन्नरेराजताकिंपुरुषोदूजोसुभकंत । किंपुरुषोमैवरसुपुरसजिममहापुरुष

भाषेअरहंत । अतिकायंदमायकायोविवहैभुजंगमैतेजधरंत । गीतरतीअरुगीतजसा
विवगंधरवेंद्रसुगतिरमंत ॥ १२७ ॥ सन्नहेकसनमानीदोनोंआनपानपतिइंद्रदिपंत ।
पानपतीधातादिसदक्षणउत्तरदिसाविधाताकंत । रिपइंद्ररिपपालदूसरोरिषवादिक
पतिकथतिसिद्धंत । ईश्वरइंद्रतथैवमहीश्वरभूतवादिकाइंद्रसुहंत ॥ १२८ ॥ कंदकना
थसुवच्छइंद्रऔअरुविशालद्युतियोबलवान । महाकंदकासहाहासजिमसुंदरमहासुं
दरगुणपान । स्वेतेइंद्रअरुमहास्वेतेविवकोहिंडकरेइंद्रपहिचान । पतगजातपतिपत
गनामकहुपतगरचेंदुदूसरोमान ॥ १२९ ॥ दोहरा ॥ ओडकसुरकीएकपलदेवीकी
पलआध । दससहंसवरुषायुलघुविंतरगतिवचसाध ॥ १३० ॥ भवनपतीविंतर
कहैचहुलेशामैदेव । कृष्णानीलकपोतकीतेजसधरचहुभेव ॥ १३१ ॥ परमाधरमी
पंचदसजातुअसुरमैक्रूर । दमैनरकमैनारकीरमैरुद्ररसपूर ॥ १३२ ॥ अंबेआंबरसे
कहेस्यामेसवलेजात । रुद्रविरुद्रेकालकहुमहाकालविष्यात ॥ १३३ ॥ आसिपतेधनु

धरकहैवालूकुंभीजान । बेतरणीषरसुरकहेमहाघोपपाहिचान ॥ १३४ ॥ दसविध
विंतरजातमैतिरजंभकसुरहोइ । मानेआनकुवेरकीअधिष्टातालोइ ॥ १३५ ॥ आन
पानफलफूलकेलैनसैनवथ्थेव । वीजवीयुतिरजंभकासभवथ्थाधरएव॥१३६॥ वसैसैल
विजसार्द्धपरचित्तविचित्तेवास । जमकसमककंचणागिरीसदाप्रमोदहुलास ॥ १३७ ॥
गीतनृतादिकतूंहलेहासविलाससुभाव । सुषीविपबहुसुषकरैदुपीदुषावनचाव॥१३८॥
एकपलोपमथितलगैभोगेभोगसुछद । निकटषेत्रचौसंधमैफिरैसुपायआनंद ॥१३९॥
तिरछेलोकअसंषपुरबनरूपीविगसंत । देवलोकावितरतणेभापेश्रीभगवंत ॥१४०॥
भवनेबनगतियुगलीयाअंतरदीपापाय । तथाअसंन्तीतिरयंचईओडकातिहलगजाय
॥ १४१ ॥ होइअकामीनिर्जराभूपत्रिषादिकपाय । स्नानादिकनहिंबिपेसुषवितरलघु
थितथाय ॥ १४२ ॥ परवसवंधनआदिदुषमरैकटाईअंग । सूलीफांसीडिगनविषडू
बनअग्निप्रसंग ॥ १४३ ॥ औरघणी विधकष्टसोमरैअंतसुभभाव ॥ आयुवर्षद्वादस

सहंसव्यंतरकेसुपत्राव ॥ १४४ ॥ जेउपसंतकषायकेत्रलपारंभीजीव । त्रलपविना
दिकगुणसहितरहेप्रसन्नसदीव॥ १४५॥ मातपिताकेवचनवससेवेत्रतिपितमाय ।
त्रायुवर्षचौदससहंसव्यंतरगतिसुषपाय ॥ १४६ ॥ छुद्दरविधवाविहरनीगुरुजनरो
कीतीय । सुपसिंगारत्रादिकरहितत्रलपारंभधरीय ॥ १४७ ॥ घृतदधषीरादिकस
रसतजीत्रल्पजिहचाह । व्यंतरनीहोवेसहंसचौसठकेथितमाहि ॥ १४८ ॥ त्रलपा
रंभीरसतजीकंदमूलफलफूल । जलसिवालभक्षीतपीज्ञानरहितमगभूल ॥ १४९ ॥
नानाविधकेकष्टकरलहैदेवगतिठाहि । भवनपतीविंतरविपेत्रोडकजोतिकमाहि १५०
फलत्रकामनिर्जरातणेपंचिंद्रीतिरयंच । भवनपतीविंतरतणेभोगेसुपविधपंच॥ १५१॥
द्वात्रैसतविंतरतणेइंद्रसहितपरिवार । सेवेश्रीजिनदेवकोमनवचतनसुचधार ॥१५२ ॥
ससिरविग्रहरिपतारकाचरथिरदसविधहोइ । मनुजपेत्रसंक्षातचरपरेत्रमितथिरजोइ
॥ १५३ ॥ इकससिरविपरिवारहैग्रहअठासीदेव । रिषत्रठाईतारकाकोडाकोडीएव

॥ १५४ ॥ मद्दसछिहाठनवसयापणहत्तरपरमान इकसौवत्तीगुणसभीचंरचंदादिक
जान ॥ १५५ ॥ दोचतुबारबियालफुनविवसत्तरचंद्रादि । जंबूपुहकरअर्द्धलगदीवो
दहीअनादि ॥ १५६ ॥ इकसुमेरकेपुव्वदिसदुतियोपछमहोइ । इमदक्षणउत्तराफिरे
चरजोतिकगुणदोइ ॥ १५७ ॥ इकगणकेविवभागहैनिश्चिरदिनचररूप । इमविव
दिसनिसहीरहैविवदिसदिनरविभूप ॥ १५७ ॥ इसपेत्रेतेऊचइमम्हाजोजनेजान ।
तारेसगसैनवततेनवसयलगपहिचान ॥ १५८ ॥ रविअठसैससियुतिअसीरिपतांते
युतचार । भरनीनीचेसवनतेस्वातीऊपरवार ॥ १५९॥ अभिजितअंतरसवनतेसभले
बाहरमूल । मूलाद्रांतेअयणगतिदक्षणोत्रविवतूल ॥ १६० ॥ उत्राषाढाश्रनकेसंधे
अभिजितहोइ । राजासर्वनक्षत्रकोबहुफलदायकलोय ॥ १६१ ॥ रिपतेवुद्धचहुजो
जनेतांतेतिहुतिहुचार । सितगुरुकुजशनिइमचतुरजोतिकचक्रविथार ॥ १६२ ॥ वार
हरासनक्षत्रछैनवपदकीइकरास । चारचारपदरिक्षकेपदनवांसपरगास । १६३ ॥

तीसश्रंसइकरासकेपदत्रिभागयुततीन । त्रयदसश्रंसत्रिभागइकरिपलेपापरवीन ॥
॥ १६४ ॥ रवितेससिकोश्रंतरोद्वादसश्रंसकिताय । सितएकमचौवीसलगदुतिया
श्रंतलपाय ॥ १६५ ॥ थित २ द्वादसश्रंसइमपूर्णमलौपटरास । रवितेससिससिते
रवीसमपापंतपरगास ॥ १६६ ॥ कृष्णपक्षतांतेपरैतिथतिथद्वादसश्रंस । सूरचंद्रइक
श्रंसमैअंतश्रमावसवंस ॥ १६७ ॥ पटपटश्रंसकेकर्णइकरवितेसासिलगधार । धुर
केतुथिरतापरैसातसातवसुवार ॥ १६८ ॥ ववबालवकौरवकह्योतेतलगरवनजेव ।
विष्टीचरतातेपरेतीनकर्णथिरएव ॥१६९॥ शकुनचतुष्पदनागकहुछप्पनचरथिरचार ।
साठकर्णथिततीसकेद्वादस रासमझार ॥ १७० ॥ नवजमहूरतकुछश्रधिकसातवीस
दिनमान । सभनक्षत्रकोफरससिफिरश्रावेउसथान ॥ १७१ ॥ त्रयसेपणसठदि
नगएछासठवेविरतंत । द्वादसरासीभुक्तरविफिरउसथानवदंत ॥ १७२ ॥ वामाय
णरविमंडलेसौचउरासीयुक्त । इकसौतेरासीदिवसउत्रायणइमभुक्त ॥ १७३ ॥ पण

विजयविस्यसेनोकहाश्रीजिनपरमानंद ॥ १९४ ॥ वायावच्चेउवसमेईशानेतेटेव ।
भावअप्ययेसमणकोवर्णवीसमोदेव ॥ १९५ ॥ सत्तसरंभगंधवेश्राग्निविसायणलाम ।
श्रातवश्राधवतंद्ववभूमहारिसभोनाम ॥१९६॥ फुनसवठसिद्धोकह्योराषसश्रंतमहोइ ।
यथानामफलतिमतिसोजानलहोसभकोइ ॥ १९७ ॥ दवंछाउगुणवीसदसछयचतु
त्रयढईय दोयद्धडसवायकमेदसघडीयालगथीय ॥ १९८ ॥ पौनेबाराघडीतवश्रा
धीचौदसहोइ । पायछायसतरेघडीदिनगतिरहितेजोइ ॥ १९९ ॥ वाहकसोलेसह
ससुरहयगयगोहररूप । ससिरविइंद्रविमानकेभूषणवस्त्रश्रनूप ॥ २०० ॥ श्रठग्रह
केचतुरिक्षकेतारेदोइहजार । चरविमानकेसाथहीसोभतहर्पश्रपार ॥ २०१ ॥ तारे
वाहकशीघ्रगतिरिषतांतेगतिमंद । रिपतेग्रहग्रहतेरवीमंदगतीश्रातिचंद ॥ २०२ ॥
तारेसुरतेरिक्षकीरिपतेग्रहकीवृद्ध । ग्रहतेरविकीवृद्धश्रतिचंदश्राधिकगुणारिद्ध ॥२०३॥
जोजनकेइकसठीयेभागछप्पनश्राडिश्राल । ससिरविलंभविपंभमिलअर्धऊचसंभाल

॥ २०४ ॥ ग्रहकेजोजनआधमितारिपांपाउतआध । तारेलंभविपंभमितअर्धऊचवच
साध ॥ २०५ ॥ अर्धकविठआकारसभतारेलघुसासिद्धध । मध्यऔरवहुवर्णमयतांमे
सुरयुतारिध ॥ २०६ ॥ लघुविमानतारेतणेवडोचंदगुणद्व । मध्यसर्ववहुवर्णमयता
मेसुरयुतरिद्ध ॥ २०७ ॥ वपुसुंदरपटभूपणेमालसुगंधसुहाय । तेजसलेसीहेमछवि
मुकटनाममेथाय ॥ २०८ ॥ अष्टभागपलअलपाथितवडीएकपलसोइ । वर्षसहंसअ
रुलापयुतसूरचंदकीहोइ ॥ २०९ ॥ श्रावकविरतविराधकीजोतिकसुरलगजाय ।
तापसतांमेलहैगतिभाषेश्रीजिनराय । २१० ॥ चउपटराणीचउसहससुरसमानगुन
चार । आत्मरखत्रपर्षदोसातअणीपरवार ॥ २११ ॥ चंदसूरपरिवारयुतआयनिवा
वेसीस । भक्तिकरैजगदासकीजयजयजयजगदीस ॥ २१२ ॥ इति जोतिकरचणा
संपूर्णम् ॥ दोहरा ॥ कलपोतपतिदेवगणसहितविमानीइंद । दसहीनिजपरिवार
युतपूजेआयजिनंद ॥ २१३ ॥ गीयाछंद ॥ इसभूमिथीविनसंपजोजनऊचत्रयदस

भूमिही । विवकलपलाषविमानबत्तीअरुअठाइंछविलही । पणवर्णमणिमयऊचपण
सयजोजनेऊपरधुजा । जिहदेवतेजसलेसधरसुपभोगभोगेविनरुजा ॥ २१४॥ तिह
अपरगहैयोदेवियाकेहैविमानदुहूंपुरे । पटचारलाषसुरमैकलपैप्रथमकीविपमेफुरे ॥
इतरेईशानवर्तीरमेथितलघुवतीविवधुरतणे । त्रितीएदशीतुरियेसपणदसचडतपलद
सदसभणे ॥ २१५ ॥ प्रथमेसुधर्मेकलपदीपतमुकटमृगचिहनीसुरा । थितपलजाघि
न्नविवलिंगकीसुरसिंधओडकदोधरा । त्रियास्वामिवंतीसपतपलथितइतरपलपंचा
सलौ । तिहसक्रइंद्रसुरिद्धसंयुतपुन्नभोगेअतिभलौ ॥ २१६ ॥ सुभहेमक्रातसरीरसुं
दरमुकटकुंडलजगमगै । उरहारभूपणसर्वअंगेवस्त्रउज्जलछविलगै । वाहिनसुएरात
तिकरीसुरवज्रआयुद्धधारणे । जिनराजभक्तासेवकरताधर्मकाजसवारणे ॥ २१७ ॥
तेतीससुरगुरुमित्रजिहचौरासहंससमानकी । वसअग्रमहिषीपरषदात्रयसातअणका
आनकी । त्रयलाषछत्तीसहंससुरतनरक्षजाकेजानीए । चतुलोकपालसुभोगभुंजत

सक्रइंद्रवपानीए ॥ २१८॥ जिहलगलहैगतिहिमवयअरुइणवयकेजुगलीया । जिह
लगविराधिकसाधव्रतजिहलगभवेकंदर्प्पिया । गतिसाधुश्रावककीकहीजघिन्नजिह
सम्मथोकहे । जिहलगलहेजियागर्भथीगतिसोसुधर्मालोकहै ॥ २१९ ॥ ईशानक
लपजघिन्नथितपलतेअधिकदेवीसुरे । दोसिंधुसाधिकदेवकीओडककहीजगदीश्वरे नव
पलतथापचवन्नपलओडकदेवीकीकही । सुभमहिषमूरतचिहनमुकटइंद्रईशानोसही
॥२२०॥वरवृपभवाहनशूलपानीउत्तराधिपसुरपती । तनछविसुभूपणमालअंवरशक्रव
तसुंदरसती । सुरतावतीससमानकीवसअग्रमहीपीपरपदा । चतुलोसपालसमेतसुभप
रिवारसोहेमनमुदा॥२२१॥जिहकल्पलगजुगलूलहैगागिलिंगाविवाजिहलगभवे । जिह
लगपलोकोआयुधरतनुसातकराजिहलगहवे । जिहताइमैथुनकायकरसुरलोकनामई
शानहै । ईशानइंद्रविराजतोजिनराजभक्तिसुजानहै॥२२२॥ सुरलोकसंतकुमारऔर
महिंद्रद्वादसधरणके । द्वादसतथाष्टविमानलापअकृष्णहैचतुवर्णके । शतपट्जोजन

ऊचऊपरिकेतुरिधभरेपदा । षटहस्तदेहीदिवराजताविषयसुषभोगेसदा ॥ २२३ ॥
दोजलधतेथितसातसागरलगकहाओडकसही । वैराहंलक्षणमौलधरसुरपदमगोरेछ
विलही । सुसपर्सइंद्रयकामसुषमुरलोकसंतकुमारहै । तिहइंद्रसंतकुमारसुंदरसंघको
हितकारहै ॥ २२४ ॥ कुछअधिकसागरदोइतेथितसातसाधिकलगसही । सुरसीस
मुकटेसिंहचिह्नमाहिंद्रसुरपुरसुपलही । जिहलगलहैगतिपटसंघयणीइंद्र श्रीमाहिंद्रहै
सुरपद्मगौरसपर्सभोगीभक्तिचितसुरिंद्रहै ॥ २२५ ॥ सुभब्रह्मलोकसुखेत्रसमतेअधि
कससिपूरणाजिसो । खटभूमिकंतविमानलाखसुचारवर्णात्रिधातसो । शतसप्तजोजन
ऊचधुजयुतनीलकृष्णाविवर्जते । तिहइंद्रश्रीब्रह्मेसराजतधर्मकारजगर्जते ॥ २२६ ॥
जिहलगलहैपरवर्जकीगतितमसकायजहालगे । लोकंतकीसुरजिहरमेलेसापदमति
हतालगे । जिहकामसुखहैरूपमेतनपंचहस्तपदमप्रभा । थितसप्तसागरतेदशालग
छागलक्षणमौलंभा ॥ २२७ ॥ वरकलपलंतकभूमिपंचविमानसहंसपचासको । त्रय

वर्णजोजनसातसैऊचेरतनपरगासको । सुरतनसुमेतियछविजहातितिमसुकल्लेसी जहा । सालूरलछणमुकटदीपतइंद्रश्रीलांतकतहा ॥ २२८ ॥ थितदसउद्दतलवुचतुरदसलगपचकरस्सरूपको । जिहलगलहेगतिकिलविखीसुरलोकलंतकभूपको । जिहकलपलगगतिपुव्वचौदसधारकीजिनवरकही । जिहलगगेमसंघयणपनधरजानआगमतेलही ॥ २२९ ॥ सुरलोकलंतकलंघऊपरिमहाशुक्रचतुरमही । चालीसहंसविमानजोजनआठसेऊचेसही । सितपीतवर्णसुरिद्धपूरणरमेसुरचतुकरतनू । हयचिह्नथितचौदसउदधलघुवडीसमदशीभनू ॥ २३० ॥ तिहसत्तमेदिवइंद्रसुंदरमहाशुक्रमहादुती । सर्वांगभूखणमालअंवरकामविखेसव्द्वती । जिनवचनरागीधर्मभागीभक्तिचितवधावतो । जिनचर्णकमलसपर्सनिजसिरस्तवनरचगुणगावतो । सहिसारसुरपुरकलपअष्टमचतुरमहिमयजाणिए । तिहखष्टसहंसविमानदीपतमहाशुक्रसमानिए । तनमानभोगकलोलतावतमुकटगजमूरतमई । थितलघुसतारहसागरीओडक

अठारहितिहथई ॥ २३२ ॥ जिहकल्पलगगातिलहेतिर्यंचदेसविरतिसमगती । जि
हलगगमागमणंत्रियासंघयणचतुजिहलगगती । सहिसारनामसुरिंद्रउत्तमारिद्धशक्ति
सुहावनो । जिनराजगणधरसाधुकेपदहरषमीसछुहावनो ॥ २३३ ॥ वरकल्पनव
मसुनामत्र्प्रानतसुरमुकटफणलछणी । थितउधतवसदसतेचढतउन्नीसलगतनरछणी
मनभोगरसइकवर्णउज्जलवरविमानसुहावणे । चतुकल्पनवसेजोजनेसुरतनात्रिहस्त
दिपावणे ॥ २३४ ॥ दसमेसुप्राणतकलपउत्तमथितजघिन्नउन्नीसके । उतकिष्ठसा
गरवीसगेंडेचिहनमुकटसुसीसके । विवकलपचतुषितचतुविमानशतेंद्रप्राणतनामहै ।
जिनराजबदनपूजनेत्र्प्रातिभक्तिगुणत्र्प्रभिरामहै ॥ २३५ ॥ सुरलोकत्र्प्ररणेकादसेथित
वीसतेइकीसलौ । तिहवृषभलछणमौलधरलेषाकहेजिनवचभलौ । दिवप्रथमदुतिए
त्रतियेचतुरथोत्र्प्रर्द्धचंद्राकारहै तिहतेचतुरसासिपूर्णतेफुनत्र्प्रर्द्धसासिवतचारहै ॥ २३६ ॥
सवकल्पतेउत्तममहागुणतीनसंघयणीलहै । इक्कीससागरतेचढतवाईसलगधारककहै

वरहंडमूरतचिहनमुकटेमहाजोतिप्रकासनो । चतुषितदुकलपविमानत्रैसयअच्युतिंद्र सुसासनो ॥ २३७ ॥ उतकिष्टश्रावकगतिजहालगचारपदवीगोकही । आजीवियाआभोगीयागतिदष्ठत्रयतिहलगसही । वैक्रयउत्तरजिहलगकरैसेवकपतोपदाजिह लगे । मनभोगरसचतुकलपअतमनामअच्युताजिनमगे ॥ २३८ ॥ इहिकल्पद्वादस भूमवावनवरविमानविराजते । जोजनअसंपप्रमानकेछविसंखकेछविछाजते । कल्पं तभूमिरकलपनामवडसकेघरइंद्रको । उतकिष्टथितसुपसोलहेचितधारवचनजिनंद्र कोइ ॥२३९॥ तिहइंद्रवासविमानकेदिसपुव्वसोमसुवर्णको । दक्षणादिसाजमवर्णपछ नउत्तरेवेसमनको । इसभांतचारविमानमाहिलोकपालसुरिंद्रके । वहुवुद्धवंतमहंतसुं दरवचनएहजिनंदके ॥ २४० ॥ किलविपीथितत्रैपलत्रिसागरात्रियोदसधारकसरा । वासीअधोदिसकलपविवधुरत्रितीएतुरिएघरधुरा । लंतकअहेमुपदोपकेफलऊचथान कनाहिलहे । निदादिदोपविकारसंयुतसंजमीइहुफलगहै ॥ २४१ ॥ कल्पोचवीइक

लहैतिथंकरपदलहैंइककेवलं । चक्रेसकेशवबलमहीधरसाधुश्रावककेथलं । मिथ्या
तयुतइकभ्रमेभवभवइमकहैजिनचंदजी । भवजनसूनोइहिदेवरचणाधरोचितश्रानंद
जी ॥ २४२ ॥ चौसाठइंद्रपवित्रमनवचतनभक्तिजिनदेवके । उलसंतश्रंगप्रमोदपूर
णभएप्रभुपगसेवके । श्रोडकलहेनिरवाणपदइहवचणश्रीजिनधारके । चिनभक्तिफ
लसुभगतिसुकलधनधानसुखसंसारके ॥ २४३ ॥ मत्तगयंद छंद ॥ पंचहिपंचक
हीश्रसुरेंदकीषष्टत्रियाधरनादिककेरी । व्यंतरजोतिकइंद्रनकीचतुश्रग्रहमहेपिसुरिद्ध
चगेरी । शक्रइशांनकिश्राठइमेपरवारसमेतजिनदकिचेरी । वदनपूजनप्रेमधरीजिन
वैनसुनेधररीझघनेरी ॥ २४४ ॥ चौसठसाठहजारसमानकहैचमरेंद्रबलिंद्रकिभारे ।
षष्ठसहंसयुतेधरणादिकव्यंतरजोतिकचारहजारे । चारश्रसीयश्रसीयबहत्तरसत्तर
साठपंचाससुमारे । चालिसतीससुवीसदसोमघवादिसहंससुसोभतसारे ॥ २४५ ॥

नेकवनायसवारे । संस्कृतप्राकृतदेसविदेसकिभाषमईगुणग्रामउचारे । मोदलहेनि
जरावहकर्मिझिहोतसुवधतपुन्नभंडारे ॥ २४६ ॥ साजसजेइकऊनपचासविधेदसदो
यसुतालवजावे । सातसुरेतिहुग्रामकरीषटरागसभीपरिवारसुगावे । नाटकभांतबती
सरमेबहुभांतसुछंदपढेरसपावे । भक्तिकरैसुरश्रीजिनकीकरजोरनमेजयकारवुलावे ॥
॥ २४७ ॥ दोहरा ॥ द्वादसकलपातेपरेकलपातीतकहाय । दुक्करकरणीअतितपीम
हाप्राक्रमीथाय ॥ २४८ ॥ नौग्रीवेगअनुत्तरेदोविधकहैजिनंद । जतीलिंगविनऔर
नहिपावेपदअहिमिंद ॥ २४९ ॥ भद्रसुभद्रसुजातदिवसुमनसुचौथोनाम । पियदंस
णासुदंसणीअरुअमोघसुभठाम ॥ २५० ॥ सुप्रबुद्धयसोधरोनवग्रीवेगकहत । पंच
विपेसुपअधिकसुरभुंजेमनउलसंत ॥ २५१ ॥ नवग्रीवेगेनवमहीदसमिअनुत्तरजान
वावनकल्पअकल्पदसबासठमहीविमान ॥ २५२ ॥ ऊंचेएकसहंसामितजोजननवग्री
वेक। तामेविवकरतनअमरसजेएकहीएक ॥ २५३ ॥ बाईसागरतेचढतएकएकनव

माहि । थितजघिन्नइनतेअधिकइकइकओडकताहि ॥ २५४ ॥ नवग्रीवेगेतीनात्रिकहे
ठमध्यउपरेव । तिहविमानसयतीनयुतअष्टादसभणएव ॥ २५५ ॥ इकसौग्याराहि
सातयुतसौतीजेसयएक । स्वेतरतनमयकेतुयुततामेदेवअनेक ॥ २५६ ॥ जिहलग
देवविमानीयासहितलोकंतकदेव । वासुदेवपदलेनकीभापीश्रीजिनएव ॥ २५७ ॥ अ
नियानीसनियानियाअंतअनंतभवीय । आराधिकद्रवलिंगकीजिहलगदेवसहीय ॥
॥ २५८ ॥ जिहलगभव्यअभव्यसुरसमकितअरुमिथ्यात । ज्ञानतीनअज्ञानत्रयनव
ग्रीवेगकहात ॥ २५९ ॥ इकसमादिष्टीसुद्धाचितानिःसंसेव्रतपाल । धर्माराधिकसुररुच
रदंसणज्ञानरसाल ॥ २६० ॥ इकसंसयमिथ्यातयुतसमकितरहिताचार । करकरणी
समसाधकीतहाभएअवितार ॥ २६१ ॥ उत्तमदोसंघयणकेनवग्रीवेगेआन । तांऊप
रसमदिष्टधरअमरअनुत्तविमान ॥ २६२ ॥ गतिथितकलपानीकहीप्रथमसंघयणी
थाय । थोडभवकरकर्मपयमुक्तिमहापदपाय ॥ २६३ ॥ विजयविजंतजयंतफुनअप

राजितसुविमान । सर्वार्थसिधकेचहूंदिसहीदिपतिसुथान ॥ २६४ ॥ ऊंचेजोजनएक
दसशततेऊपरकेतु । दर्वंअनुत्तरमाणिदिपततामेसुरसुपलेतु ॥ २६५ ॥ इककरतनासि
तरतनद्युतिअतिबलसुपजसशक्ति । सकलअमरासिरमुकटमणिचितजिणवरगुणशक्ति
॥ २६६ ॥ तससन्नीपंचिंदियापुरुषलिंगाजिहताय । अल्पकर्मउपमुक्तिकेदेवअनुत्तर
थाय ॥ २६७ ॥ पंचविमानअनुत्तरेपंचविजेउताकिष्ट । पंचमगतिकेपाहुणेपंचपदेचित
इष्ट ॥ २६८ ॥ चहुमेलघुइकतीसकीउतकिष्टीतेतीस । मध्यसर्वेतेतीसहीसागरकही
मुनीस ॥ २६९ ॥ जितनेसागरआयुसुरतापक्षेफुनसास । तितनेवर्पसहंसगातिभूप
करेपरगास ॥ २७० ॥ मध्यगिरदवासठखितेतांचहूदिशेत्रिकोण । चौकूणेफुनगिर
दइमधुरपितवासठहोण ॥ २७१ ॥ षितषितइकइकघटतइमअंतअनुत्तरएक । पंक
तबंधविमानइमचहुदिसअमरअनेक ॥ २७२ ॥ धुराविबलौनरपेतमितसमादिसउड
सुभनाम । अंतमजंबूदीपसमसरवार्थसिद्धठाम ॥ २७३ ॥ पंकतबंधीसर्वहीजोजन

अगनतमान । तिमहीताकेअंतरेजिनवरवचनप्रमान ॥ २७४ ॥ पुण्यकीर्णऔरस
भसंषअसंषप्रमान । दिपेसेषषितऊपरेविवधवर्णसंठान ॥ २७५ ॥ चौरासीलषसह
सयुतसत्तानवेतेईस । सबविमानषितबासठेदेषकहेजगदीस ॥ २७६ ॥ सातवीससै
धुरधराअंतमसैइक्कीस । भूविमानमिलपिंडसभजोजनसैबत्तीस ॥ २७७ ॥ आयुवर्ष
वसतेचढतकोडपुव्बलगकोइ । पालमहाव्रतदेसव्रतसुरविमानपदहोइ ॥ २७८ ॥ सो
ओडकनरदेवकेसातआठभवपाय । केवलदंसनज्ञानलहिसूधेशिवपुरजाय ॥२७९॥
कल्पातीतसुभक्तिचितप्रभुसेवेनिजटाम । ध्यावेसेवेगुणसमरमोदलहैअभिराम२८०॥
वाराजातकेकल्पलगआयकरेजिनभक्ति । वंदनपूजनथुतकरणकथासुनेचितरक्त२८१
चहुविधसुरतेहोतहैवलचक्रीसर्वज्ञ । सुरविमानजिनराजहरितिर्थंकरवचतज्ञ ॥२८२॥
तिहुंलिंगातेदेवगतितांतेतीनेलिंग । नहिनपुंससुरगतिविषेजिनवचणेनहिविंग२८३॥
त्रयलिंगीआराधकीपुरुषालिंगहीपाय । विनाअराधकलिंगविवसुरसतिमेजियथाय ॥

॥ २८४ ॥ जिनवचनेंअनुरक्तिचितपालेतिमआचार । नि मलअसकलेसतपारकरेसं
सार ॥ २८५ ॥ वहुआगमविज्ञानधरलहिसमाधिगुणगेह । आराधिकपदपायकेऊ
चीगतिकोलेह ॥ २८६ ॥ सर्वाराधिकइकतथासर्वविराधिकहैन । देसअराधिविराध
कीचहुविधज्ञातावैन ॥ २८७ ॥ सहैपरीसेक्षमाकरचहुसंघेसुपहोइ । तथाग्रहिपर
लिंगकेसर्वाराधिकसोइ ॥ २८८ ॥ सहैचतुरविधसंघकेऔरनकेनहेय। देसविराधि
कसोभएजिनवरवचनकहेय ॥ २८९ ॥ निजमतिपरमतिसवनकेसहेनकोईसोइ ।
सर्वविराधिकसोभएदृक्षहीनगुणजोइ ॥ २९० ॥ औरसवनकेसहितहैसंघोसहेनजेय
देसाराधिकदवदवादृक्षभेदतिमतेय ॥ २९१ ॥ रागसहितआराधकीदेवविमानीहोइ
पदवीपंचविपेजतीवीतरागशिवसोइ ॥ २९२ ॥ वालतपीउतकटरसीतपमानीविरीय
क्रोधीतपीनिमित्तकीअसुरजातमैथीय ॥ २९३ ॥ अरिहंताअरुधर्मकीगुरूऊपाध्या
कीय । निंदाचहुविधसंघकीसुरकिलविषीयाथीय ॥ २९४ ॥ विकथाहासकंतूहलेक

ञगनतमान । तिमहीताकेञंतरेजिनवरवचनप्रमान ॥ २७४ ॥ पुण्यकीर्णञौरस
भसंपञसंपप्रमान । दिपेसेषपितऊपरेविविधवर्णसंठान ॥ २७५ ॥ चौरासीलषसह
सयुतसत्तानवेतेईस । सवविमानपितबासठेदेषकहेजगदीस ॥ २७६ ॥ सातवीससै
धुरधराञंतमसैइक्कीस । भूविमानामिलपिंडसमजोजनसैवत्तीस ॥ २७७ ॥ ञायुवर्ष
वसतेचढतकोडपुब्बलगकोइ । पालमहाव्रतदेसव्रतसुरविमानपदहोइ ॥ २७८ ॥ सो
ओडकनरदेवकेसातञाठभवपाय । केवलदंसनज्ञानलहिसूधेशिवपुरजाय ॥ २७९ ॥
कल्पातीतसुभक्तिचितप्रभुसेवेनिजटाम । ध्यावेसेवेगुणसमरमोदलहैञभिराम२८०॥
वाराजातकेकल्पलगआयकरेजिनभक्ति । वंदनपूजनथुतकरणकथासुनेचितरक्त२८१
चहुविधसुरतेहोतहैवलचक्रीसर्वज्ञ । सुरविमानाजिनराजहारितिर्थंकरवचतज्ञ ॥२८२॥
तिहुंलिंगातेदेवगतितांतेतीनेलिंग । नहिनपुंससुरगतिविषेजिनवचणेनहिचिंग२८३॥
त्रयलिंगीञाराधकीपुरुषालिंगहीपाय । विनाञराधकलिंगविवसुरसतिसेजियथाय ॥

॥ २८४ ॥ जिनवचनेंअनुरक्तिचितपालेतिमआचार । नि.मलअंसकलेसतेपारकरेसं
सार ॥ २८५ ॥ वहुआगमविज्ञानधरलहिसमाधिगुणगेह । आराधिकपदपायकेऊ
चीगतिकोलेह ॥ २८६ ॥ सर्वाराधिकइकतथासर्वविराधिकहैन । देसअराधिविराध
कीचहुविधज्ञातावैन ॥ २८७ ॥ सहैपरीसेक्षमाकरचहुसंघेसुपहोइ । तथाआहीपर
लिंगकेसर्वाराधिकसोइ ॥ २८८ ॥ सहैचतुरविधसंघकेऔरनकेनहेय। देसविराधि
कसोभएजिनवरवचनकहेय ॥ २८९ ॥ निजमतिपरमतिसवनकेसहेनकोईसोइ ।
सर्वविराधिकसोभएव्रक्षहीनगुणजोइ ॥ २९० ॥ औरसवनकेसहितहैसंघोसहेनजेय
देसाराधिकदवदवाव्रक्षभेदतिमतेय ॥ २९१ ॥ रागसहितआराधकीदेवविमानीहोइ
पदवीपंचविपेजतीवीतरागशिवसोइ ॥ २९२ ॥ वालतपीउतकटरसीतपमानीवेरीय
क्रोधीतपीनिमित्तकीअसुरजातमैथीय ॥ २९३ ॥ अरिहंताअरुधर्मकीगुरूऊपाध्या
कीय । निंदाचहुविधसंघकीसुरकिलविषीयाथीय ॥ २९४ ॥ विकथाहासकंतूहलेक

रैचपलताकाम । इंद्रजालइमदोषघरकंदरपीगुरुठाम ॥ २९५ ॥ मंत्रयंत्रतंत्रौषदीसु
घरसारिर्द्धहेत । इत्यादिकदोषेसहितअभियोगीगातिलेत ॥ २९६ ॥ विपभक्षणआयु
द्धकरीजलअगनीइत्यादि । अनाचारसेवीमरेवधेजन्ममरणादि ॥ २९७ ॥ तपसंज
मकरणीकरेत्रिपेभोगसुपचाहि । धर्महीनधर्मांतरोद्धुपलहैभवमाहि ॥ २९८ ॥ कीए
नियानेतुछफलवहुकरणीकोजाय । रतनअमोलकमूढजिमवेचेलघुधनपाय ॥२९९॥
विपयकषायविकारवसुफोडेलमधजुकोइ । आहचितदंडलीएबिनानहीअराधिकहोइ ॥
तपसाकरणीवहुकरेकामलालसात्रीय । गणकादेवीमाहिगतिबहुसुरभोगकरीय ३०१॥
जिहइछासतानकीवालगुपालपिडाय । बहुपुतीयाजिमसोभवेकरणीकाफलपाय ३०२
कोपतपीआयुधपणेमानेबाहनहोइ । कपटसभानिरादरीलोभारिद्धलघुहोय ॥ ३०३ ॥
मुषविकारभंडहसेतपकरणीकेसाथ । भंडदेवमेउपजकेवंधेकर्मअनाथ ॥ ३०४ ॥
इत्यादिकदोषेकरीनहीआराधिकहोइ । दोपरहितमुनिअनुव्रतीआराधिकपदसोइ ३०५

आशाधिकनरभवलहैंरिद्धधर्मसयुक्त । सातआठभविओडकेपावेअविचलमुक्ति ३०६
भक्तिकरैभगवतकीदंसणवंदनगाय । चारजातकलपालगैंसेवेशमुढिगआय ॥ ३०७
सोरठा ॥ नाटकगीतरचायसुणवाणीजिनराजकी । नरभवलुभकुलपायधर्मसाहित
संपतिलहै ॥ ३०८ ॥ उत्तमसुरवरसोय जोजिनधर्मीभक्तिचित । जिनमगद्वीपीजोइ
भवसागरमैसोभ्रमै ॥ ३०९ ॥ ऊचनीचवहुभांतरचणाकहीएदेवकी । सुनोभवकाचि
तशांतधर्मसाधसुभपदलहो ॥ ३१० ॥ कवहुंसतोगुणठाणकवहुरजोगुणमैरमै ।
कवहुतमोगुणआणकरैकर्मवहुभांतके ॥ ३११ ॥ दूमल ॥ छंद ॥ कवहूं
तियसाथकलोलकरैकवहूंनृतगीतविनोदचहै । कवहूंबहिराजसभाविगसेकवहूंरिप
सोरणभूमिडहै । प्रभुसाथसपूरणभक्तिकरीकरजोरसुछंदउचारकहै । मिलमित्रहसे
हितरीतरमैइसभांतदिवोनिसमोदलहै ॥ ३१२ ॥ कितहूंनटहोकरनाचतहै कितहूंव
रजंत्रवजावतहै । कितहूंहयरूपकरीहिनकेचपलागतिवेगाजिवावतहै । गजरूपकरी

गरजाटकरै सिंहनादकरीहरग्रावतहै ।। फणधारफुंकारकरैवरहीबहुभातकिनाचदि
षावतहै ॥ ३१३ ॥ कितहूंहसवारबनेपरकेकितहूंबिनवाहणधावतहै । कितहूंहथ
यारबनेसुरकेकितहूंहथयारचलावतहै । कितहूंत्रियग्रोरचलेपुरुषाकितहूंरुचसोत्रिय
ग्रावतहै । कितहूंप्रशनोत्तरवादकहूंसुरषेलसिद्धंतदिषावतहै ॥ ३१४ ॥ कितहूंल
लनासुविनीतभईपियकेपगसीसछुहावतहै । कितहूंरिसधारगुमानभरीपियग्रातर
होइमनावतहै । कितहूंलडकेविवरलतहैहरषेनिरषेमुसकावतहै । इमहूंबहुभांतक
लोलकरैरचणागुणवंतसुनावतहै ॥ ३१५ ॥ कितहूंपरषेछलसोमुनिकोधररूपपिशा
चडरावतहै । कवहूकरजोरलगैचरणीविधसोग्रपराधषिमावतहै । ग्रतिरीझधरीसम
सेवककीमुनिकेगुणग्रामादपावतहै । कबहूंघरग्रौधलषेतपसीनिजठामनमैगुणगाव
तहै ॥ ३१६ ॥ सुरसंगमतीरथथानकहूंरिपज्ञानजगैनिरबाणसमै । कितहूंथितग्रष्ट
मचौदसपूर्णममासग्रमावसपर्वणमै । न्रतगीतठटेभटयुद्धमचेमतवादजगैकितहूंनगमै

जिनजन्ममहोछविमेरनगेवरदीपनदीश्वरमांहिरमे ३१७ जिनराजमहोछविमाहिकर
पतिकेउपजेवरवादलकी । वरषासुभगंधमईजलकीफलफूलसुगंधमईदलकी । कल
धौतमणीरजतोतमकीपटभूषणकीमुकताफलकी । सुरदुंदभिनादकरेहितसोदसहोदि
समाहिप्रभाझलकी ॥ ३१८ ॥ कितहूंवरऔषधगंधमईकरचूरणदेवउडावतहै ।
कितहूंवररत्नमईकरछालिपउत्तमधुपधुपावतहै । कितहूंवरगेंदलईविधसोनभमाहि
मुषेलदिषावतहै । कितहूंसुरवृंदवणेहितसोजयकारसुसब्दवुलावतहै ॥ ३१९ ॥
इकतीरथनीरसुकुंभभरीइकषीरसमुंद्रसुचावतहै । सललाविमलाजलगंधमईप्रभुम
ज्जनहेतअनावतहै । वरऔषधमेरुगिरीसिषरेवरचंदनआदिमंगावतहै । वहुवर्णसुपु
ष्पसुगंधमईवनचंदनआदिकलपावतहै ॥ ३२० ॥ मरदंगसुझालरभेरतुरीनुरसिंहन
घंटनसंखणकी । घणघोरमहारिवदुंदभिकीजयकारभईधुनदक्षणकी । रसहासरसिंगा
रसुवीरसजेरचणारसअद्भुतलक्षणकी । अतिमोदतदेवमहोवविकोप्रभुभक्तिकरीसुभ

पक्षणकी ॥ ३२१ ॥ सभदीपसमुंद्रअसंषणमैलघुमध्यविषंभलवानमई । इकजोज
नलाषप्रवानअयंवरजंवुसुदीपसुनामथई जगतीवरवज्रमईगिरदेचतुद्वारचहूंदिसकांत
भई । विजयेविजयंतजयंततथाअपराजितनामसदीवलई ॥ ३२२ ॥ इसदीपविषेव
रमध्यविषेगिरमेरुसुजोजनलाषतणो । तिसपूरवमछममैविवतीसमहाविजयाजिनध
मघणो । भरथोदिसदक्षणउत्तरतोसमईरवतोसभसाचभणो । सुरस्वामिअणाढिपदी
पतणोतरुजंबूसुदर्शणवासमणो ॥ ३२३ ॥ इहदीपसपूरणचंदजिसोइनकोलवणोद
धहीवलिया । विवजोजनलाषविषंभजलंविचहैदगमालजिसोढलिया । दससप्तह
जारउच्चतमईनवपंचहजारदसोछलिया । सुठियालवणोदधिनामादिपैरतनाधरसुकृत
हीफलिया ॥ ३२४ ॥ लवणोदधिकोवलियावरधातकिषंडविथारतिसोदुगणो । विय
मेरुगिरीचौसाठविजैविवहैभरथोविवउत्तरणो । इमधातकीदीपपरैजलधीजिहनामक
हावतकालपणो । तिहतेपुनपुष्करदीपइमेदुगणोदुगणोविसतारभणो ॥ ३२५ ॥

तिहपुष्करदीपतदार्धविषैविवमेरुविजयचतुसाठकही । विवईरवर्त्तोंभरथोतिहमैपदवी धरकीउत्तपतसही । इहदीपदुसार्द्धदुसिंधयुतेनरषेतकहाजिनमोषगही । इहतांइघ णाढ़िकपेचरणासुरजोतिकचालवलोकलही ॥ ३२६ ॥ जिहवादरपावककालसुका लभवेनरउत्पतिकालकरै । जिहतांइमहाव्रत्तधारमूनीव्रतद्वादसश्रावकधर्मधरे । नर रूपजिनेश्वरचक्रपतीवलकेशवकेशवजेहहरे । सर्वंग्यमुनीजुगलादिविराजितसोनर क्षेत्रसुरिद्धभरे ॥ ३२७ ॥ सभदीपवलेजलरासलहीतिहसागरकोइमपीपवले । दुग णादुगणाविसतारकहाइमहोतअसंषसिंद्धतचले । समभूरमणोदधिअंतमकोजिनवैन सुणेअमरोगठले । इनमैवहुथानकहैसुरकेसुपभोगविलासकरेसुफले ॥ ३२८ ॥ इन दीपसंमुद्रअंसषणैमैतिरयंचपचिंद्रयसंपविना । कुछदर्वनिसानिलषीपिछलीलपज न्मपुरातनधर्मगुना । व्रतधारइकादसश्रावककीतपसाकरपापपपंतघना । गतिअठ मकलपविषेतिनकीइहिवैनजिनेश्वरदेवभना ॥ ३२९ ॥ तिरयंचपचिंद्रयसन्नअसन्न

अकामभईनिजराकिफलौ । गतिभौनपतीवनदेवविषेतिथओडकभागअसंषपलौ । समदिष्ठलईसुभधर्मरुचीधुरक
सनवंतपुरातनजातलषीअहबालतपंगतिजोतिकलौ । समदिष्ठलईसुभधर्मरुचीधुरक
ल्पलगैसुभभावभलौ ॥ ३३० ॥ जुगलाथितभागअसंषपलोसभछप्पनअंतरदीपन
के । गतिभौनवनेपनहेमवएपणइर्णवएपलएकनके । धुरकल्पलगैउपजैतियतंदुतिए
लगजावनशेपनके । पिछलेसुभसिंचततेसुरहीनिजआयुसमंकहिउछनके ॥ ३३१ ॥
नगतागतिनारकिवातशिपीविकलिंद्रसमूछममानवमै । जलभूवनवादरमैउपजैनग
तागतिसूषमकेभवमै । नरतेनरभैतिरयंचनथाउपजैनअसन्नातिर्यंचनमै । जुगलूसुर
हीसुरनाहितहाउपजैइमफेरननीदिवमै ॥ ३३२ ॥ गतिसंधिलगैमरणांतसमैनरभैति
रयंचविषैसुरको । तिहमिश्रसुभावभवेसुरकोइतअंतमपावनकेधुरको । इकगर्भविषे
उपजैयुतवैक्रयऔधमहबलहैउरको । तपज्ञानतणाफलहोतइसोइहिवैनअनंतबलीगु
रुको ॥ ३३३ ॥ सुरदीपपतीगिरकूटगुफापतिद्वारपतीविजयाधिपती । वनदेवपुरी

पतिचैतपतीजलधीश्वरतारथदेवसती । द्रहवासपुरीसललाधरणीमणि औषधकीरम
णीसुमती । इमऔरघणीविधदर्वविपैहितधारकमानवलोकरती ॥ ३३४ ॥ इकहैसु
षदायककलपपतीजुगलाजनकेचितसेवनको । इकहैपरमाधरमीयमक्रूररहैनरकेदुप
देवनको । इकलोकफिरेचउसंधविपेजगसारभलीविधलेवनको। इकऊचपदारथसा
थरहेरतनादिनिधीसुपवेवनको ॥ ३३५ ॥ इकमंत्रअधीनसुरीसुरहैइकयंत्रनमेइकत
त्रनमै । मतिभेदघणेजगमाहिकहैतिनकेहितबंधघणेमनमै । इकवंदनपूजनसेवनते
सुखदायककाजविपेघनमै । इमदेवविराजतलोकविपेइकहैरषवालमहाधनमै ३३६॥
इकषेचरपेत्रविपेरमतेनरनारिविपेनहुशक्तिधरी । नभचालपतालप्रवेसविधेजलपाव
कवातघानादिकरी । तनरूपवढावनभेपधरीबहुदर्वउपावनगुप्तचरी । इमऔरघणी
जगरीतविषैवरतेमनमोहनरीतभरी ॥ ३३७ ॥ इकदेवरमैनरकीतरुणीनरसाथरमै
इकदेवत्रिया । नरलोकविपेइकमोहधरीइकदूररहैमनदूरकिया । इकमोहकरीनरसे

नवनेइकवैरकरीभयरोगादिया । रचणासुरकीवहुभांतलषीजिनजैनकिवैनपयूषपिया ॥ ३३८ ॥ इकवैरकरीनरकेधसकेरिपकोदुपदेनडरावनही । पिछलेभवमोहकरीदुषमोचनकारनकोइकजावनही । रिपसोरणमंडणकारणकोमिलनेफुनमित्रकिधावनही । सुरऊरधकेजुपतालधसेतिहकेइमऊरधआवनही ॥ ३३९ ॥ इहिलोकअधीनश्रुतागमहीसुरलोकविषेसुरसाथरहै । तिहदेषवडेश्रुतिधारककोअभिमानगलेचितसोगरहै । पछतावतहैचितवंतइसोवलप्राक्रमहोतअनादगहै । नहिउद्दमआगममाहिकीयोअवहोइनिरुद्दमपेदसहै ॥ ३४० ॥ कितहूजिनआगमकीचरचाजिनआगमसापसुनावनही । कहुवेदपुरानपठेहितसोअपलेअपनेमलभावनही । कहुछंदकलाप्रगटेरससुंदरतालसुगीतवतावनही । कहुशब्दनईवरग्रंथपठेवरवोधप्रकासदिपावनही ॥ ३४१ ॥ कितहूंसुरआपथकीअधिकोलषकेअतिआरतभाहिपरै । कितहूनिजथीलघुकोलषकेइरकैअभिमानविषादधरै । जिहपासरूपानतिरूपसपीतिहकोवहु

दोपविकारभरै । समदिष्टसषीजिहसाथरहैतिनकोदुग्दोपविकारहरै ॥ ३४२ ॥
कितहूंसुरचोरकलाधरकेदवडेग्रहरत्नत्रियापरकी । पकरैताहिदेषधनीबलसोवहुत्रा
युद्धचोटकरेकरकी । तमकायविषेछपजायकबेजहिजोतनदेवमणीधरकी । इकदुठक
लाधरदेवघणेपरमानतसीपधराधरकी ॥ ३४३ ॥ रणमाहिसुरासुरझूझतहैत्र्प्राहिदेव
सुवर्णकुमारमिली । इमहीइतरेरिपसाथभिडेवलग्र क्रमआयुधधारबली । इतनोजु
विशेषविमाननकोत्रिणकंकरपातचलायफली । वहुझतमणीमयत्र्प्रायुद्धहोरिपअंगल
गैतिहशक्तिदली ॥ ३४४ ॥ सुभसब्दसुगंधसुवर्णमईरसउत्तमनाथसपर्सभले । सुप
भोगनपंचविषेविवधामनवैनसरीरविषेकुसले । वहुअंपलोपमसागरकीजिहत्र्प्रायुज
रादिकरोगटले । इहिपुन्नमहातरुकेफलहैमुनयोनरनारिसुजानरले ॥ ३४५ ॥ सुभ
वंधनवंधनदेवतवेजवभक्तिकरैजिनकीमुनिकी । पदवंदनपूजनप्रेमधरीमहिमावरणे
तिनकेगुनकी । सुनकेसभधर्मकथारचणारचनाटकगीतमहाधुनकी । सुभकर्मविषे

सुभवंधइमेरचणारचणीजिनजीउनकी ॥ ३४६ ॥ सुरवंधनभावमलीनविषैवहुकर्मभ
विक्षतनीचमई । तनचोटलगैजवआयुधकीनमरैविनपूरणआयुथई । सुरशक्तिनआयु
वधावनकीगतिजोनछुडावनकीनभई । सभकेसिरऊपरकर्मवलीइहसारमहामुनिरा
जदई ॥ ३४७ ॥ परिलिंगग्रहीकहुध्यायकभावचढेलहैकेवलज्ञानजहा । इकदेवत
हामुनिभेषदएमहमानतहासकरंततहा । कहुदृष्टकरैपनवर्णप्रसूनसुगंधतनीरसुधूप
महा । कहुसाधुसुश्रावकदेहतजीसरभक्तिनृतादिकरंततहा ॥ ३४८ ॥ सुरथंभनस
त्रसिपीजलवातपशूनरव्यालमहावलको । षिणमैतरुवेलउगायकरैफलफूलफलीस
घणेदलको । लघुकालविषैरचवासपुरीविपनीग्रहवासमहीथलको । वहुकाजकरैनक
रैशिवकोमुनिराजकरैपदउज्जलको ॥ ३४९ ॥ जलमाहितरावनपाथरकोगिरपाटउ
डावनषेलकरै । नरनारपशूअहिकीलधरैअवसर्पनदेसुद्धबुद्धहरै । अवकोसमजीवत
देवकरैकहजीवनकोअवरूपधरै । इमशक्तिघणीविधहैसुरकीमुनिसीनहिजोभवसिंध

तरै ॥ ३५० ॥ दृगहीनसुलोचनवंतभएमुषगुंगसुवाचभएजिनते । वपुकुष्टकुगंधअन
गछवीअतिदीनमहीपभएतिनते । लघुवृद्धविचक्षणराजेथएमनवंछतरिद्धकरैछिनते ।
सुरशक्तिघणीजिनराजकहीछंदमस्तसुथाकरहेगिनते ॥ ३५१ ॥ षिणमोपहुचावण
दूरथकीलघुपेअविषैवहुधापसरे । कहुसीसग्रहैनरकोपशुकोकरचूरणदेसविदेसभरे ।
तिहफेरचुनेरचसीसधरैतिहजीवनकोनहिसारपरै । इहआक्रमदेवमहावलकोपारिश
क्तिनहीनिजमुक्तिकरै ॥ ३५२ ॥ दिनकोरजनीनिसबासरहीहिमग्रीपम २ सीतकरै ।
विनकालविषैवरुषारुत्तहीवरषारुतमैविपरीतधरै । विषअंम्रतकंकरकोमणिहीदेवपा
वककाननरिद्धभरै । लजकाथलभूमिकरैजलहीसुरशक्तिघणीमुनिवाकषरै ॥ ३५३ ॥
उदरोकहुगर्भवटावतहैचहुभांतकरैअतिषिप्रसही । नहिषेदकछुजननीगरभेसुरश
क्तिप्रभावअनंदलही । कहुनाभिथिनाभप्रवेसतहीकहुजोनथकीफुनजोनवही । कहु
नाभथिजोनाविषैअरुजोनथनाभाविषेसुरशक्तिकही ॥ ३५४ ॥ इकदेवकतूंहलषेलक

रैपशुमानवसीसवटायधरैं । तिहदेषहसैफिरठामकुठामसवारधरैमनमोदभरै । इक
देवमहावलपिप्रगतीकुछदर्वउछलचलंतफिरैं । इसदीपतणेगिरदेकितबारवनेसुझपेइ
मशक्तिसुरै ॥ ३५५ ॥ अतिप्राक्रमवंतसुजानगुणविहुकारजसाधिकलोकतणे । नहि
शक्तिमुनीव्रतकीतिनमैनहि श्रावककीव्रतदेसभणे । इसकारणसम्यकवंतसभीमुनिको
पदउत्तमऊचगिणे । तिनकेपदपंकजपूजनहीवहुभक्तिकरैजनदासबने ॥ ३५६ ॥
रिपमोहमहावलसाधुहणेनहिशक्तिसुरिंदमहावलकी । मुरतेनभवेमुनिलोकअला
कप्रकासकदुतिकेवलकी । सभदेवअशक्तिकरैकरणीमुनिमोषमहापदउज्जलकी ।
इसकारणदेवमहामुनिकोधरभक्तिभविक्षमहाफलकी ॥ ३५७ ॥ जिनराजसमोसरणे
इककोडजाघिन्नपदेसुरसेवकरै । उतकिष्टपदेसभइंद्रसमेतअसंषमितेचितमोदभरै ।
जिनजन्मसनौरिषरूपसमैवरकेवलपावनमोषवरै सभइंद्रनहोछविआयकरैसुचअंगउ
पंगसभक्तिभरै ॥ ३५८ ॥ निजकाढप्रदेससुदंडकरैबहुरत्नप्रदेसग्रहेसचुने । तिहमे

चणा
६० ॥

लरचैसुरवैक्रयकोवहुरूपंवनेयुतच्छंदगुणे । वहुदंवरचेयुतारिद्धपुरीविनासिंधुचमूइमऋौर
मुने । सुरशक्तिघणीनहिमुक्तिमईमुणिमुक्तिकरेतहिंदेवथुने ॥ ३५९ ॥ गुणपूरणसंयम
वंतमुनीसुरतेजउलंघचलेस्वबले । इकमासप्रवर्जतविंतरकोउरगादिदुमासउलंघचले
इममासाहिमासवधेतवतेऋसुरोग्रहतोइमइंद्रवले । इककल्पदुगेदुगचौनवतेपनतेमुनि
उत्तमसर्वथले ॥ ३६० ॥ इसलोकविषेनरनारिघणेसुरवंदनसेवनमंत्रलिषे । करध्या
नरचेविधपूजनकीसुषसंपतिकोवहुकाजविषे । जगकाजकुकाजकहैजिनजीशिवकाज
सुकाजसिद्धतलिखे । इसकारणदेवनमेंमुनिकोहमवंदतहैमुनिकोहरिखे ॥ ३६१ ॥
धुरएकमहूरतऋंतरमाहिऋजानऋपूरणआदिदशा । उपरंतसपूरणदेहमईदुतियासु
खभोगमईसरिसा । जवऋायुरहीखटमासतवेंत्रितियादुखसोकवियोगवसा । इसका
रणभाखतहैत्रिदशासुभकर्मकरीसुरलोकधसा ॥ ३६२ ॥ ऋथनवरसरचणा ॥
दूमल छंद ॥ तनरूपप्रभापटभूखणकीभवनादिछवैसुसिंगारकहै । वलप्राक्रमवैक्र

यकोकरुणारनमेरसबीरस्वरूपलहै । दुखमोचनकोसुखदेवनकोसुरद्यालभएकरुणा सुगहै । रिसवंतभएभयकेकरणेरणखेत्रविखेरसरुद्ररहै ॥ ३६३ ॥ सुखभोगविलास हुलासविखेनृतगीतरसेरसहासभवे । अपवित्रकुगंधकुरूपविखेअमनोगममांहिगिला नठवै । लखकालसमापरकेडरतेभयवंतभएरसभीतलवे । रसचित्रजिनंदविभूतलखे रससंतसमोसरणेसुहवे ॥३६४॥ दिसदक्षणउत्तरलोकदुधासुरवासदुधातिहइंद्रदुधा कुछआयुवडीबलरिद्धतथादिसदक्षणतेइतरेविबुधा । सभलोकतणेविचमेरुगिरीजगम ध्यदिशातिहतेवसुधा । दिगपालकरीसुरसाथसजेजिनकोजिनवैनपयूपछुधा ॥३६५॥ दिसदक्षणलोकपतालविषेचमरिंद्रविराजतभौनपती । तिनकेसिरऊपरऊरद्धलोकसु सक्रसुरिंद्रअनूपमती । इमहीबलइंद्रसुउत्तरमैतिहऊपरइंद्रइशानवती । इमहीइन केउनकेउपरेवरइंद्रविमानपतीसुगती ॥ ३६६ ॥ कवहूंमघवासुईशानमिलेइकठाम विपहितरीतकरे । कवहूंकितकाणयुद्धसजेवलप्राक्रमफोरनसेनभरे । थकजावतशक्र

ईशानजवैतवसंतकुमारकुध्यानधरै । वहुआदभएजिहसीषदएवहुमानलएचितवैरहरै
॥ ३६७ ॥ सुरउत्तरवैक्रयरूपकरीउत्तरेइत्तरेइतआवतहै । कवहूंकितकारणतेनिज
मूलसरीरलईफुनधावतहै । इकतेगिणसंषअसंपलगैतनधारणशक्तिसुहावतहै । रच
णासुरकल्पलगैवरणीउपरैनहिलभ्धफुरावतहै ॥ ३६८ ॥ तनभागअसंषमअंगुलको
भवधारणआदिसमस्ततणे । उतकिष्टपदेकरसातलगेविचभेदअसंषजिणंदभणे ।
सुरउत्तरवैक्रयरूपलघूमितसपमभागजाघिन्नपणे । उतकिष्टसुजोजनलाषलगैइसअं
तरभेदअसंपवणे ॥ ३६९ ॥ षटमासरहैजवआयुतवेकुमलावतफूलकिमालगले ।
सुरचीरमलीनलपेअपनेबलहीनहुलासविनोदटले । लषकालसमाअतिआरतहीत्रि
यमित्रवियोगदुपादिरले । नहिदेवकोजीवनहोततवेइमभाषतहैमुनिराजभले ३७०॥
लषकालधरैसुरआरतकोहमरेदिवभोगविलासटरे । इततेचलगर्भविषेपरकेघुरवीर
जरक्तिअहारकरै । वहुमासलगैतमघोरविपेदुरगंधमहादुषगर्भभरै । जिसदेवजिनै

श्वरहोवनहैइमसोनहिचिंततशोकधरै ॥ ३७१ ॥ लखजन्मभविक्षतमानवकोत्र्परुआ
रजदेससुधर्मकुले । हरषेसुरसुंदरभावधरैचित्तेफुनधर्मकरोसुफले । जलभूवनमैति
रयंचविषेसुरझूरणआरतमाहिरले । निजकर्ममहाबलवंतभएइमभाषतहैमुनिराज
भलै ॥ ३७२ ॥ इकषेत्रसवारणआवतहैजिहमाहिभविक्षतमानलिया । अपवित्रप
दारथदूरकरैसुभपुग्गलासिंचतषेत्राकिया । रिषरूपधरीशिवहेतकहूंउपमातापिताभए
वैनाठिया । तुमरोसुतहोवनजोगग्रहेतुमनोअटकावतमोहिहिया ॥ ३७३ ॥ सुरका
लकरैत्रियाजीवतहाउपजैसुरहोरसुभोगकरै । चवजातत्रियातिहहोरभईमिलभोग
करेचितशोकहरै । विरहाउपजंतजाघिन्नसमोउताकिष्टपदेषटमासपरै परिवारमिलाप
वियोगइमेसुरकलपलगैमुनिवाकपरै ॥ ३७४ ॥ दुहुकलपलगैजलभूवनमैथितसंष
मईतिरयंचनरे । सुरअष्टमकलपलगैनरऔतिरयंचपचिंद्रयदेहधरै । उपरेनरजोनवि
षेउपजैनसमूछमसुषममाहिपरै । जिनधर्मअराधिकधर्मलहैशिवस्वर्गविषेनिजवास

करे ॥ ३७५ ॥ सगदिष्टआराधिकसंयमकेसुभदेसद्दतीसुरहोइच्युता । नरलोकविषे
भवमानवकोवहुरिद्धजहाधनधानमता । ग्रहषेत्रपशूवहुदाससपावपुसुंदरभूषणचातु
रता । कुलऊचसुआयुअरोगपणाइहिपावतहैमुनिजीकथिता ॥ ३७६ ॥ दसजातप
तालसुभौनपतीसगकोरवहत्तरलाखविषे । सुरविंतरषोडशजातदुधातिरछेजुअसंख
पुरेहरिषे । नभचंदरवीग्रहरिष्यउडूदसजातचराचरभेदलिषे । वहुऊरद्धद्वादसकल्प
परेनवपंचाविधेआहिमिंदसुखे ॥ ३७७ ॥ अथसिद्ध अस्तुति ॥ दूमत छंद ॥
सुरलोकसभीजिहहेठरहेशिवस्वछअनूपप्रभाधरणी । तिनकेकछुऊपरसिद्धप्रभूमाहि
मातिनकीजिनजीवरणी । नहिजन्मजराम्रतरोगछुदाभयसोगउपाधक्रयाकरणी ।
परमेश्वरपूरणब्रह्मसदामुनिराजभएतिनकीसरणी ॥ ३७८ ॥ सभजानरहेसभदेख
रहेदुखसुखअवेदसमाधिथई । अविकारअचाहिअमूरतहैनहिगोतसुभासुभभांतलई
नहिवंधनआयुअनायुभएसभव्यापकआतमरामभई । वसुकर्महणेगुणअष्टदिपैभव

सिंधतरैलहिमोंखगई ॥ ३७९ ॥ चितरूपाचिदानंदचेतनहैंअविकल्पानिरंजनलोक
पती । ध्रुवआदिअनंतअनादिकहैंअविनाशअखंडअनूपगती । असरीरअनिंद्रयप्रा
णनहीमहिमाश्रुतिवाकविखेवरती । प्रणमोपरमेश्वरसिद्धसदाचितमोचितमीसमता
सुमती ॥ ३८० ॥ जगदीश्वरलोकअधारप्रभूजगमस्तकउत्तमऊचवसै । सभकेसिर
ऊपरलोकशिषाजिममंदरऊपरकेतूलसे । सरवग्यलषैनिरपेतिनकोछदमस्तसुध्याव
नसांतरसै । प्रणमोपरमातमजोतमईजिहकेसिमरेअघपुंजनसै ॥३८१॥ कमलवंध
दूमलवंदयुग्म अनुघंअरुजंअमितंअतुलंअकुलंकयसंअरघंतपदं । अजअव्वाथिरअ
नकंपतकंअछिदं अजयंअभयंसुषदं अलषंअभुजंतुचराचरलघअनूपमसंरमणंजयदं
प्रणमोअमरंसभतेअधकंप्रभुसिधपयंसभमंगलदं ॥३८२॥ परमेश्वरहोपरमातमहोप
रमोतमहोपरमोचकहो। परमामहिमापरमागममै परवीनरिदेपरतीततहो । परवर्ज
तहोशिवसासतहो अजरामरहोतवसर्वगहो । सुरनागसुमानवभव्यनमै प्रणमोशि
वदेवसशांचितहो । ३८३ ॥ अथ मुक्ताक्षरछप्पय ॥ छंद ॥ परमपरमपद रमण

करमरज वरज अमलसत । अजरअमरअज अटलकरणमन तनवचवरजत । अच

लअषयवर अनघ
अकथमन थकन
नगण गणधरवर
मणसत घटसदन
लतरण तससरण
जयजय परम अभ
कमल बंधसर्वल
सुमनसुपतवर सुम
घरसुकृतकरसुचमन

प्रणमों सिव वसुधा चित
रबीनहिं रतीततहो प्रव
व्यन रमानवहो रमावीहो
शिवसा रमातमहो
प जिनवर रमोतमहों रमोबकहों
रमेश्वरहों

अलषजस अगम
अमर नरसरपसम
नन । जसधरणस
अघगण हरभवज
परण सभभयटरण
य करण ॥ ३८४ ॥
घु ॥ सवैया ॥ ३२ ॥
ति अमितधर सु
वचतन सुकविविवि

धिविधसुजसकरणरति सुविरचपदवरसुजसकथनगन परमहरपउरविकसतदग

रचणा
६८ ॥

वरवदनहरषधर परमभगतबन । शिवशिवशिवनिधसकलजगतपति जयजयजय

करसरण परतजन
लंकार सवैया ३२
तुरचतुरविध वरण
रविध । रचत रचत
त आगम आगमप्रभु
जस जस ससियर
सपरम दुति शिव
हरषहरपाचितभगत
नितलहिलहि वुध

॥ ३८५ ॥ यमका
अमर अमरपति च
वरणजस रुचरुच
थुतथकत थकताचि
अलष अलष सिध
धवल धवलकरपर
शिव शिव निध ।
भगतकरनमतनमत
रिध ॥ ३८६ ॥

सर्वदीर्घ सवैया ॥ ३१ ॥ वैमानीदेवादेविंदातारास्वामीतारावृंदातियंलोकेहै जेदेवा

जेपतालेभव्वाहीं । सबैंमानेवंदेपूजेतंत्रैलोकधीसं सिद्धंअंगोपंगोछाहेनित्यंआछीभा
तेसव्वाहीं । याकोध्यावेसास्त्रवेता श्रीसिद्धंतेवेदसापाकव्योचारी कव्यापारेयाकीसो
भाभापीहै । तंस्वामीकोवंदोनित्यंयासेवेविश्रामोचित्यंपावेमेधासातावित्तंएसीआ
सारापीहै ॥ ३८७ ॥ मोषेकंखीब्रह्मानंदीज्ञानीसाधूध्यावे याकोतातेतामैवासापावे
पोपेचित्तंसुष्याते । याकोध्यावेवंदेपूजेरूरीरीतेसोभागाथेजीवापूटेपापांकूरेछूटेसारेदु
ष्याते । देविंदीचक्कहीलछीइंदत्तंपुज्जतामित्तं रिद्धीसिद्धीवुद्धीकित्तीपावेभव्वायाहीते ।
तंवंदेत्तलोयाधीसंभारवीकित्तीचित्तानंदे सम्मंदिठीमेहामायासव्वापावाताहीते ॥
॥ ३८८ ॥ दंतोष्ठ असपर्समत्तगयंद छंद ॥ याजगठाकरकेठहरेहिय चाहिगईह
ठकेअघकेरी । आठडरैअरुआठजगेढिग आरजकाजकिरीझघणेरी । जाचकहीझ
ठकेअघठागहटाय किछारकिकाचकिढेरी । जागरहीघटठाहरठीककिजोजगठाकर
केढिगचेरी ॥ ३८९ ॥ रसनावध ॥ मत्तगयंद ॥ छंद ॥ मेहाविपेवगकेकिपपीहकु

पेमहियेकविवाककहेहै । कोकिहियेअहिमाहिगएपिक माहकहूहियपेमगहेहै । का मकिवामहियेहियकामकुआगगहीषगपेषवहेहै । काकिकुमोहमहापियमाउमुहोपहु कीमहिमाकिपहेहै ॥ ३९० ॥ एकस्थानीकंठवर्ण दोहरा ॥ गाहागाहाकहेकहा ह। अहिअघहाअ

अहआअकह आगा खगगाह ॥ ३९१॥

हआ कहाकहाकहै लंब ॥ छंद ॥ पर

सहरा बंधद्दुति बि नंतजी परमनानसु

मजोति अनादि अ शक्ति अनूप मरिद्ध

दंसन वंतजी परम प्रभुसिद्धजी ३९२

जी परमशांतनमो

औतअनादिअनंतजी

नानसुदंसनवंतजी

परम

सक्तिअनूपमरिद्धजी

शातनमोप्रभुसिद्धजी

॥ इति सिद्धस्तुति संपूर्ण ॥ अथ जिनेद्रउस्तवर्णणं ॥ द्वादससुरअनुक्रमी थकन ॥ दोहरा ॥ सरवसाधुसिरसीममणिसुपदसूरगुणसेत । सैनासोभतसौंयढि

गसंतनमतसःदेत ॥ ३९३ ॥ करमकालकिलकीनषयकुमतिकूटकेअंत । केजुकोट कोमोपदयकतरूपकःसंत ॥ ३९४ ॥ इहिविधरचणालोककीकहीजिनेश्वरदेव । प्रग टकरैसभदर्वेजगसोजिनजीकोसेव ॥ ३९५ ॥ दूमल ॥ छंद ॥ सभहीदिसभौनवि मानपुरेगिरकूटवनेछविछाजितहै । वरऊरधमध्यपतालविपे जिनमंदरविंबविराजित है । सुरवंदनपूजनसेवनही नृतगीतवजंत्रसुसाजतहै । प्रणमोप्रभुदेवनिरंजनको महिमापरमागमवाजतहै ॥ ३९६ ॥ समदिष्ठविसुद्धसवुद्धवधैचितशांतभवेगुणवृंद जगे । परतापवधेमहिमाफरसेरिपभाजचलेइकपायलगै । निजरावहुकर्मपुरातनकी नववंधतपुन्नसमोपमगै । जिनवंदनपूजनसेवनतेफलहोतम्रपामतिनाहिठगै ॥३९७ तनरोगहरैमनसोगहरैवचचूकहरैदुरकर्महरै । शिववासकरैदिवभोगभरैनरलोकविषै पदऊचवरै । जगवल्लभतापरिलोकतथासुखसंपतराजमहंतकरै । जिनभक्तिभलीनर नारिसुनोभवसागरपारउतारधरै ॥ ३९८ ॥ गुणमूलइकीससपासजियोदसएकसपी

सजसाथवने । समदृष्टसुव्रतसमायकपोषधसीलदिनेदिनरैनतणे । नकरेजुआरंभक
रायनहीतिहहेतकरैसुतजेसुमने । मुनिवेसस्वछदइकादसमीइहिसाथसअर्चनस्तोत्र
गुने ॥ ३९९ ॥ इमचेतनमित्रसखीयुतहोइकरैप्रभुभक्तिनमादिथुने । तिहकोप्रभुद्वा
दसकल्पविषेसुरसंपतदेतपदोचतने । गुणमूलसपासंगवीसजहासजनीदसदोयस
रूपघने । मिलसेवकरैतिहकल्पअकल्पादिएशिवशंइमग्रंथभने ॥ ४०० ॥ चहुभांत
सबुद्धगहोचतुरोचहुभांतसिधंतलपोअमलो । तजचारकषायगहोसरणेचतुधर्मचहूवि
धधारमलो । चहुसंघविषेजसपायलहोजिनपादभजोअघपुंजदलो । सिवसाधनसा
धसमाधगहोगतिचारगंईभवछेदचलो ॥ ४०१ ॥ सवसागरमाहिवडोचरमोगिरऊ
चपणेवरमेरुगिरी । सवदेवविमानविषेसरवारथसिद्धअनुत्तररिद्धभरी । सुरराजमहा
वलअद्भुतकीलवसत्तमगासुरआयुकरी । जिनसासनतुल्यनसासनहैजिनदेवसमान
नधर्मधरी ॥ ४०२ ॥ नहिकल्पसमानतरोवरहीसुरराजमतंगसमानकरी । नहिश्रौ

पधपारदसिधसमोजिमकेसारंसहसमानहरी । रवितेजसमोग्रहरिक्षनहीजिनदेवस
माननधर्मधरी । इसकारणसम्यकवंतसभीजिनदेवभजेचितभक्तिभरी ॥ ४०३ ॥
दिनरात्रकहामणिकाचकहाविषश्रम्रतहिंसकचालकहा । हरिस्यालकहापरनागकहा
वहुश्रंतरपंडितमूढमहा । नृपसुंदरभीलकुचीलविषेधनवंतमहानरदीनजहा । जिन
सासनमाहिम्रपामगमाहिअमावसपूनमरात्रतहा ॥ ४०४ ॥ जलविंदकहावरसिंध
कहाषसपाससुमेरुप्रमानमहा । नररंककहासुकुवेरकहाजगस्वानत्रियासुरधेनकहा
पगकागअपावनहंसकहातिलकुल्लरश्रौपरमन्नजहा । गणकाकहुसीलसतीचतुराइम
श्रंतरोधर्मअधर्मतहा ॥ ४०५ ॥ विनसीलनरूपसुहावतहै नदयाविनधर्मसिधंताविषे
नहिदानविनाधनवंतजसीविनसुद्धक्रयानहिमोपपपे । विनजीवसरीरनकाजकिसो
जिमश्रंकविनाबहुसूनालिपे । जिनदेवभजेविनासिद्धनहीभवजीवसुनोसिमरोहारिषे ।
॥ ४०६ ॥ गजछंदनगर्जतसिंहजहाजिहमोरश्रहीपसरेनतहा । खगसंघनसंतासिचा

सोमामिच्छाभोगीजाईहंतीकीजाईगुंजीहै । भव्वामानीचित्तेञानमोषेदारेदेवाव।
सेतालाषोलीकुंजीहै । संसारेनिरोधनावामंगलीकलाणीभरीसाहूकप्पेपुंजीहै । जेणा
राहीबाणीदेवीनंलद्धीओकिठीसिधीसाचीसाताभुंजीहै ॥ ४२८ ॥ कोहंसाणंलद्धीभारी
माननागासिंहंगज्जीमायाजालंछंकीहै । लोहंभूतंमंताराहीमोहंसत्तूतिष्षीसत्तीसाहूसूरे
फंकीहै । षाटेफीकेतीपेतूवेनिद्दाछिद्दादोसवज्जानिधूलीनिप्पंकीहै । सावज्जंजोगंवज्जे
तीधारंतीपोषंतीसूधीनिक्कषीनिस्संकीहै ॥ ४२९ ॥ कामंगारंपाणीधारापाषंडंमेहंबा
धारावेगाववीभारीहै । हिंस्साचंडालीपाविठीतंहंतीनोहिंसावम्मीसुद्धासुठाचारीहै ।
दुठाचारंभिल्लसूरंताडंतीभूवालीसेनावीराधीराधारीहै । संघोजालेपष्येसोहेराकाराई
सोमासूधाभव्वासुष्याकारीहै ॥ ४३० ॥ अद्दंरुद्दंकोठंटाहेधम्मंसुकावासंमंडेनिव्वा
णंसंदाईहै । कम्मोजाणंदाहेजोईसूधेहूएकंवासासीसूतेवेदेगाईहै । अन्नानेकुवेसपत्ती
कादतीरज्जभारीसीनाणावासासालाहै । लोगंटोहेदष्पामोहेएसीबाणीदेवीसोहेदव्ये

कंठेमालाहै ॥ ४३१ ॥ संसारेकंतारेघोरेतासंतेजीवाणीकाढेमोपेढावींदेवीहै । जंम्मं रंवुढतंकालंरोगंसोगंदुक्खंहंतीसाहंदेवीसेवीहै। चित्तारूवीउन्हाहतीयुव्वावाऊसायादा ईमोदमेहंवासंती । सुम्मुषंधारिजंजोगंदेवीवाणीगोसेमासीनानंसूरंभासंती॥४३२॥ लच्छीदेवीसालंकारीसातुठेदारिद्दचूरेएईवाणीमाईजू । सव्वंदुष्यंदोसंचूरेसुक्खंसुहंग्गं संपूरेसाचीसातादाईजू लच्छीदेवीपच्छीअच्छीयालंकारीहंसिंधूकीपेटीमोतादव्वाकी एवंवाणीदेवीपूरीरिद्धीसिद्धीवुद्धीकित्तीसुषंदव्वासव्वाकी ॥ ४३३ ॥ वादीहथीज्जुं हंभीमंगजंतीवजंतीसिंहीवादेनादंपूरंती केईवुद्धासिष्यापुत्राकेईभठानठावादेमिछाग भचूरंती । सव्वेसुत्तेसथ्थेवेदेसव्वंलोगंगेयारूवीहेयादेयाकारीहै । मग्गंधाईधम्मंदा ईकल्लाणंनिव्वाणंसाईतिथ्थाधीसोचारीहै ॥ ४३४ ॥ वाणीजूकीसोभादीपेउज्जालीच दाभागगाहीरामोतीजोतीसी । हंसीगोसेताभाचांदीगोदूधीधाराफेणाभाकुंदूमाला पोतीसी । चिट्ठीचिट्ठीसरीसेतीमिठ्ठीमिठ्ठीसारीजीतीऊचीऊचीसेतहीं । वदोपूजोरू

रीरीतभव्वोजीवोत्र्प्राणोचित्तजोचाहोसोदेतींहै ॥ ४३५ ॥ निस्संकीनिदोसीचोघीस
स्मादिठीमेहाविज्ञानाणदेवोदेवीजी। रोगसोगभीतटारोअन्नाणदोससंघारोदेवीदेवा
सेवीजी । दोपाणीजोरीहूंवदोउठाहैचित्तेत्र्प्राणदोइच्छापूरोमाईजी । थारीकित्तीरूवा
णतीइंदाईनोपारंपत्तेसाचीसायादाईजी ॥ ४३६ ॥ अथ ज्ञानमहात्मप्रथमचार
पुरुषार्थरचणा ॥ दोहरा ॥ जहाजीवनिजशक्तिसोत्र्प्राक्रमकरबललाय । सोपुरुषा
रथचतुरविधसतजनदेतवताय ॥ ४३७ ॥ चौपई ॥ धर्मत्र्प्रर्थअरुकामकाहिज्जे चौथे
मोपनामकहिदिज्जे । समदिठीवरतैसमयामे थिथ्यातीमिथ्यातदशामे ॥ ४३८ ॥
मत्तगयंद ॥ छंद ॥ मूरपधर्मकहैकुलरीतकुदण्यदयादिकसुष्टवतावे । हेमनगादित्र्प
जानकहैधनज्ञानमहाधनधीधरपावे । कामिकहैरतिकामकलोलकुंपंडितकामनकाम
सुनावे । मोषगिनेदिवकीगतिकोसठसतत्र्प्रबधकुमोपठरावे ॥ ४३९ ॥ धर्मक्षमादिद
सांगदयामयसाधनधर्ममहापुरुषारथ । सत्तसिधंतपडेगाहित्र्प्रर्थत्र्प्रटूटत्र्प्रनूपमत्र्प्रथपदा

रथ । द्वादसभांतमहातपकीजिहकामनकामसुनामयथारथ । कर्मनिवारअबंधअडाल
किएनिजमोषमहापरमारथ ॥ ४४० ॥ सोरठा ॥ इहिपुरुषारथचारज्ञानीनिजबल
सोकरै । अज्ञानीसंसारभ्रमैनिबलहुयकर्मवस ॥ ४४१ ॥ दोहरा ॥ वरतेविषेकपा
यमैपापपुन्नमैलीन । सोविवहारीजीवहैबंधनसहितमलीन ॥ ४४२ ॥ जोवैरागीस
मगतीविषेकपायमिटाय । सोशिवगामीशिवभयोवंदोमनवचकाय ॥ ४४३ ॥ अथ
नवरसवर्णनं ॥ दोहरा ॥ नवरसरचणाजगतमैभांतभांतकीहोइ । नवरसरचणज्ञा
नीरमैकहैसमकतीसोइ ॥ ४४४ ॥ छप्पय छंद ॥ वटणातपऔषधमिलायउपसम
रसमज्जन । सीलचीरमतिगंधध्यानलेपनसोसज्जन । मुकटजिनेश्वरआनत्रभुवचकुंड
लकाने । दयाहारउरकंठस्तवनकरछापसुदाने । समदमसतसंतोपगुणभूषणनाना
भांत । पहिरचढेमनहयसजेरसासिंगारसुभक्रांत ॥ ४४५ ॥ अघकुलफोडउषाडभूमि
घटसुद्धसवाररी । धर्मबीचबहुबोयषेतफललहैअपारी । तपसंजमविवहारबहुतउद

नसोकीनो । कर्मअरिसोभिडेराजधनसुभपदलीनो धर्मअर्थपुरपारथीपायोजसजग
सूर । सोभतसुंदरवीररसकरवैरीचकचूर ॥ ४४६ ॥ जगतजतदुपदेपदयाचितवेसुभ
भावे । कर्मपिंजरेबंधजालतेतुरतछुडावे अश्नाक्षुधाहरंततोपपकवानपवावे । बंधनसा
लाकुगतिताहिकोत्रासमिटावे । अंधकूपअज्ञानथीकाढेसतसुपदेत । करुणारसरूपा
दिपतवंदोशिवसुपेहत ॥ ४४७ ॥ जिनवरगणधरसाधुसतीदरसणअतिहरिखे । वंद
नपूजनभगतिप्रेमसुनवचगुनपरिखे । विकसतमुषदृगकर्मरोमराईउलसंते । चितमेंअ
तिआनंदपायसुभकाजकरंते । हासमहारसरूपसजसोभतज्ञानगंभीर । समतासज
नीसंगरनपावेभवजलतीर ॥ ४४८ ॥ प्राक्रमधनुतपबाणषडगतीषणवरज्ञानं । वर
छीविरतविवेकतबरसिरपरसुध्यानं । क्षायकचक्रप्रहरणधारसंग्रामसचाया । मोह
सैनपतिभूपसाथझूझेवललाया । रुद्रमहारसरूपधरमोहादिकअरिचूर । चिदानंदज
यश्रीलहीवसैमुक्तिपुरसूर ॥ ४४९ ॥ रक्तिबिंदउत्पत्तअसुचपूरणनाहिथिरतन । कुवि

सनघरअघमूलकुगतिदायकचंचलधन । बिषयभोगबहुरोगकष्ठदायकजगमाहीं । दारासुतपरिवारषेदकारीसंगनाहीं । सर्वदर्वनासीलषीसभथीभएउदास । रसभिव ससीरूपमैरमैत्यागभवत्रास ॥ ४५९ ॥ अटवीइहिसंसारघोरतिहकर्ममहावन । विपरसमैफलफूलपत्रसाषाजडदारण । कालजरारोगादिसिंहअहिसूकरवारण । कुगतिषानअतिविषमसर्वहीदुषकोकारण । इहिविधलषसंसारकीभएमहाभयभीत । भयरसरूपीसमगतीताकीएसीरीत । अद्भुतवाणीसुणीअर्थअद्भुतमैजानै । अद्भुतप्रभुकोरूपशक्तिबलगुणदरसाने । अद्भुतमुनिवरलब्धधर्मसीलादिदिपंते । तपसंजमफलदेवरिद्धवैक्रीयधरंते अद्भुतआतमरामबललषराजतगुणधाम ज्ञानीज्ञानविलासइमअद्भुतरसअभिराम ॥ ४६० ॥ विषयकषायमिटायसुद्धचेतनअविकारी । अलषअपंडअनंतज्ञानकेभएभंडारी । वंधजालकोतोडसुद्धसंबरनिजराहीं । मनपाम्योविश्रामअनूपमशिवमाहीं । कर्मघातकीचारहणचहुकोकरबलपीन । संतभएसंतीकरणसंतरसेसर

लीन ॥ ४६१ ॥ गाथापतिसिंगारवीरसैनापतिसोहै । करुणासंतीकरणहाससुविलासेमोहै । कोटवालरसरुद्रविभतसीदुष्टहटावे । भयञ्चरिदलनेभयोचित्ररसमंत्रीभावे । सांतरायकैउपवसेसभरससोरसशांत । ज्ञानरायकोमित्रञ्चतिवसैसाथसुभक्रांत ॥ ४६२ ॥ सोरठा ॥ चिदानंदमैज्ञानज्ञानविषेचेतनवसै । यततजिमपरमाननहिवियोगपावैकबै ॥ ४६३ ॥ मत्तगयद छंद ॥ सत्तकुसत्तञ्चसत्तञ्चसत्तकुजोगुणदर्वकुसोगुणजाने । संसयनाशप्रकासकलोककुसाधकमोषकुचेतनमाने । जीवञ्चजीवकुभिन्नकरैञ्चघपुन्नलपैसमञ्चाश्रवभाने । सर्वथापरचेनिजराफुनबंधकुतोडरसेशिवथाने ॥ ४६४ ॥ सर्वसुव्यापकज्ञाकरूपञ्चलेपवसेश्रुतिवेदपुराने । नित्यञ्चनादिञ्चनंतञ्चषंडअनूपमशक्तिचिदानंदजाने । ऊरधमध्यपतालविषेगुणग्रामकरैबहुलोकसियाने । ञ्चातमरामकुप्राणमईप्रभुज्ञानस्वरूपजिनंदवषाने ॥ ४६५ ॥ छप्पय ॥
छद ॥ समदमसतसंतोषसीलसंवरविवेकतप । दंसणचरणसुध्यानधीरसवेगपरमपप

दानादिकबहुसूरसंगजाकेअतिसोहे । सपीपमाकरुणादिरूपवंतीमनमोहे । जिहअटू
टभडारधनअमितअनंतअगाध । समतानगरीराजथिरनमोज्ञानसिवसाध ॥ ४६६॥
रिसमदछलसठलोभसोगसंतापपरमभय । आरतरुद्रप्रमादिकाभाचितभावविपमनय
दुष्टाचारविकारसूरजिहसाथघणेरे । घरणीहिंसाकुमतिआदिभटपापबतेरे । बंधरूप
मिथ्यातपतिहैगलीमअज्ञान । ताकेभयभंजनअरथसेवोश्रीपतिनान ॥ ४६७ ॥ स
मगतिअनुवृतमहावरतछदमस्तपुरोके । देवसुपबहुभांतलोकपरलोकपुरोके । परमा
नदअनूपपुरेकेवलसंजोगी । शांतअजोगीदेतजीवताहिहोतअभोगी । कर्मचूरससार
तजबधनतोडसुछंद । सिद्धभएजिहकेभजेजयोज्ञानजगचंद ॥ ४६८ ॥ करणीज्ञान
समेतऊचपददेवणहारी । ज्ञानविनादुपदेतजन्ममरणेसंसारी । अंकविनाबहुसूनका
मनहिआवनलेपे । ज्ञानविनाकरतूतएमपंडितजनदेपे । परममित्रहैजीवकोज्ञानराय
गुणवंत । वंदेविवकरजोरकैहरजसचितहरषंत ॥ ४६९ ॥ दोहरा ॥ रविसासिमणि

दीपकतडतत्रगनत्रादिजगदर्व । ज्ञानप्रकाससमाननहिनमोज्ञानगुणसर्व ॥ ४७० ॥
हैशिवलाभकलाभलीज्ञानकलासुषदैन । कर्मकलाकुकलाजगतभाषतैहैजिनवैन ॥
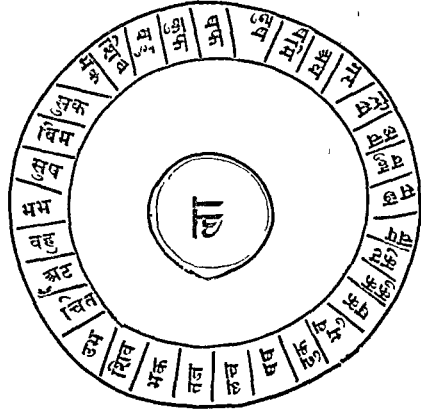
दूमल छंद ॥ कम — लबंधयुग्म ॥ भुव
लापकलाकुकलाकु — टलाचपलासछला
वहुलालचला । रि — सलागरलात्रघला
पमिलाढुपलापफला — कुफलावहुला शिवला
भकलासुकला विम — लासुषलाभलावहु
लाअटिला चितला — उभला लिवलाभक
लातजलालचलाषप — लाढुकला ॥ ४७२ ॥
मुनिलालभलायुत — लाजसलासरलातन

लालचलाहिषला । शिवलाभकलामनलाइरला सुहुलासविलासमिलात्रचला ।

सुकलाधवलासवलाकमलाअ्पलागरलाभथलाअतुला । अघलापदलासुधलापफ

ला चितलइ भला शिवलाभकला ।

॥ ४७३ ॥ न वका ॥ दोहरा ॥

सदाज्ञानवनमोरमो धरम धामसुभवास

सावधानहुयभगाति धरहोवोप्रभुकेदास

॥ ४७४ ॥ वंधनजी वअ्रजीवामिलअ्रावपु

नअ्राश्रवहोइ । संव रनिजराते मुकतिअ्र

यत्रिकनवतसोइ ॥ ॥ ४७५ ॥ पापरु

प्यको दुप्यफलपुन्न रुपफलसुक्ष । दोऊ

वधन जगतसै टूटेवधनमुक्ष ॥ ४७६ ॥ भुयंगप्रयात ॥ छंद ॥ घणाहीनमाता

ला

पितानारिपूते । धनोधामवासोसुचीरोविभूते । महारोगपीडयेण अंगहीने । जिसे

पापकीने तिसेदुक्ष लीने ॥ ४७७ ॥

रसावल ॥ छंद ॥ हिंसामृषा । अदित्त

कामपरिग्रहि रिस मानं । कपटलोभ

हितवैरकला हिअवि पानवपानं । पिसुन

रित्तअरित्त कूडछल मिलयाजाही । मि

थ्यादिष्टीभावपापअ ठारहिमाही ॥४७८॥
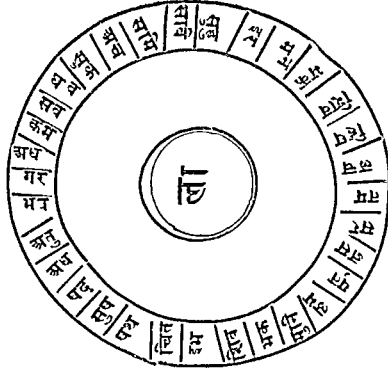
॥ अथ पुन्यफलदाति विलच ॥ छंद ॥ कनकवर्णसरीरनिरामयं । कनक

मानकभूषणसंचयं । कनकमंदरसेजसुहावनी । कनकमानकमंडतभामणी ४७९ ॥

कनकदंडधरीकिंक रचने । कनकशा

लकुठारभरेघणे । कनकसाजत नाग

रंथहयं । कनक संचयंपुन्नफले.दयं

॥ ४८० ॥ नराच ॥ छंद ॥ सुभाक्ति

नीरथानक सुसैन चीरदिजिया । स

नोसुवैन देहसोत थाग्रनामकीजिया

भवंतपुन्नतै विधेमु नोसुवुढवंतजीकरंत

जीवजोइहीहुवंतपुन्नवतजी ॥ कडका ॥ छंद ॥ ४८१ ॥ जीवतोनित्यसो

निलचेतनसदाकर्मसंजोगगतिजोनधारी । पापलोहेमईपुन्नंहाटकघडीदुविधवेडी

महामोहमारी तो डवेडी छुटमोहकी

फंदते मुक्तपुरराज थिरलहि अनंतो ।

सच्चदानंद परमात मादेवजी नमोकर

जोरहरजस करंतो ॥ दोहरा ॥ श्री

जिनवाणी स्वरस्व ती अमित अनादि

अनंत । कहाकहे कवि अलपमति प

गवतनभाविरतत ॥ ॥ ४८२ ॥ वंदोवा

मृतनयभवजनमुदितहर्णदुवदोष

ल स्यसंयमसुद्धधारसतो

रपदपायरिद्धकौतुककी

भलपधर्मकर्मभलहरक

णीदेवसति । जोभाषीएस्वाम । वंदोनाणीसवयती । सोभाकीहै धाम ॥ ४८३ ॥
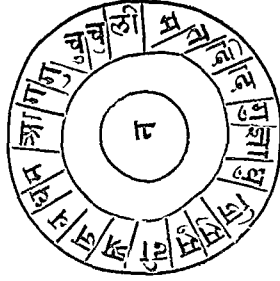
॥ यमदा ॥ अलंकार ॥ दोहरा ॥ जिहजिहवाणी सरदही तिहतिहसमग
तिपाय । करकर करणी कर्म पयाशि
वशिवपहुचेजाय ॥ ॥ ४८४ ॥ चक्र
वध ॥ दोहरा ॥ सुनसुन जिनधुन
ज्ञानगुन दिनदिन तनमनलीन । चुन
चुनगुनगण आन मनधनधनजन अ
नदीन ॥ ४८५ ॥ सरूबंध । सवैया
सुनजिनवचन रुच रअमृतमयभवजन
मुदितहरणदुपदोप । सुपकोधाममहासोभामयसंपतसुद्धारसंतोष सुरपदपाय

रिद्धकौतिककीभोगेभोगअतुलमनपोप । सुभलपधर्मकर्ममलहरकर अविचलअमि

लपरमपदमोप ॥ ॥ ४८६ ॥ दोहरा

समगतिमै सुभग तिवसैसेवोसदा सु

जान । सासनमैम हिमावधै पावोऊच

स्थान ॥ ४८७ ॥ अष्टकोण ॥ पदा

कार तिलक वसंत ॥ दंछ ॥ देवाधिदे

वजिनदेवनमामितु थ्यांतुभ्यां नमंतमु

नयश्चनेरेंद्र भव्यां भव्यांसरोर गगन

रचयंतपूज्यां । पूज्यांविलोकहरपांतिसुभाक्तिदेवा ॥ ४८८ ॥ वृक्षबंधमालनी छंद॥

जलजसरसजेतीवक्रशोभाग्रभूकी । जलजसरससेतीदंतभानाथजूकी । जलजसर सताईकोमलाईकरोकी । जलजसरसगंधोस्वासलेतेस्वरोकी ॥ ४८९ ॥ शंकर ॥

पशुगतिगमनभयहरदुरतदलपर
रपकरभगतचितधरश्रचंजिनवर
नरसुरश्रसुरउडगणगहितजिनपद
फलककरजनतमभमजिनचरमसमपम

छंद ॥ सरवर ॥ बंध ॥ नरकपशुगतिगमनभय हरदुरतदलपरहरण । नरहरष करभगगतचितधरश्ररचंजिनवरचरन । नरचतुरसुरश्रसुरउडगणगहितजिनपदस
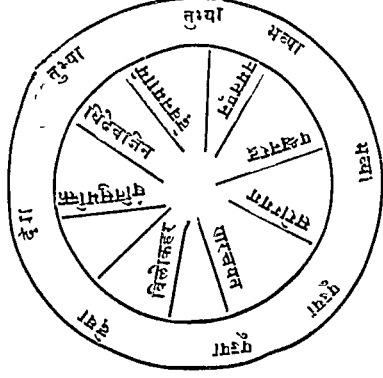
रन । नरसफलकरजनमभज जिनधर्मसभसुभकरन ॥ ४९० ॥ इंद्रवज्र ॥ छंद ॥
कोकर्मचूरेजिनधर्मनीको कोकष्टकाटेयपनाथजीको । कोदेवपूजोमुनिराजटीको को

नेमाराधी
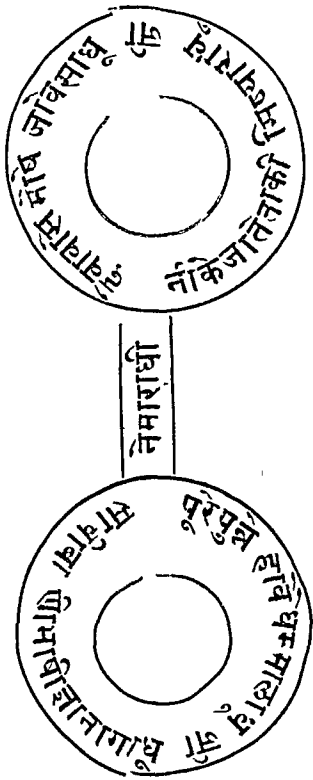
नित्यवासेगतिपंचमीको ॥ ४९१ ॥ सारंगी छंद ॥ सर्वगुरुवर्णछणकणाबंध ॥

मानेसाचीवाणीभापीज्ञानागाधजी । धीरामानेपूरेपुन्नेहोवेधम्मालाधूजी ॥ ४९२ ॥

॥ चैाको वध ॥ शंकर ॥ छंद ॥ वसुदेवदानोनरफणीसेऊजिने संसारसोमारश्री

व
सु दे व
दा नो न र फ
णी से ऊ जि ए सं सा
र सो मा र श्री जि न रा ज
जी त्यो चि त प्र मो द अ पा र वै
कुं ठ का र न त प त प्यो
प्र भु द मो गो स त
से व सा चो सु
वा क त्रि
लो

जिनराजजीत्योचितप्रमोदअपार । वैकुंठकारणतपतप्योप्रभुदमोगोसतसेव । साचो

सुवाकत्रिलोकसामीनमोश्रीजिनदेव ॥ ४९३ ॥ साटक ॥ छंद ॥ चौपड बंध ॥

व दै स के न जि धू सा   ध·वत्मा दा सके ता यो रि

सो

सोसाधूजिनकेसदैवसमतादेवसभापजसो । सोतारूभवासिंधघोरतरणेसोभेज

जिसो । सोज्ञानीगुणसिंद्वरत्नभरियोताकेसदात्मावसो । सोवंदोशिवहेतपापहरणं

शो ल प शो इ

ता म स औ म द

गावेयशोपारसो ॥ ४८४ ॥ गतागतमत्तगयंद ॥ छंद ॥ साथीया वंध ॥ तामस

इसोपलरोकहनेतमता ॥ एकसकार ॥ वरणी ॥ दोहरा ॥ सुरसूसासीसीस
सोसससीसिसोसीस । संसेसोससीससोससोसाससुसीस॥४९५॥आदिअंतएक
स्वर दूमल ॥ छंद ॥ विगरेपयकांजिकिछीटपयाकलधौतकुधातपयाविगरे । विग
रेतपपुंजकणायचढेपदऊचकुसंगतितेविगरे। विगरेकुलजातकलंकलगैनृपराजअनीत
करीविगरे । विगरेहितमित्रजहाछलहै सुभधर्मम्रपामतितेविगरे ॥ ४९६ ॥ सुधरे
सठ पंडित संगतिते अविनीत कला धरते सुधरे । सुधरे मिल पारस लोहसही
अरुताम्र रसायणते सुधरे । सुधरे विप औपध वैदनते मलयागरते तरुवा सुधरे
सुधरे ठगहिसक साध थकी भवकोड अघा तपते सुधरे ॥ ४९७ ॥
अथकामधेन कबित्तरचणा दोहरा ॥ चौपई दोहे सोरठे ॥ उौर अडिल्ल कवित्त
एकसवैयेमोप्रगट । कामधेनसुणमित्त ॥ ४९८ ॥ मत्तगयंद ॥ छंद ॥ श्रीजिनचंद
मुनिदकु वदनदेवमनुष्यहियेहितधारण । भक्तिकरीअघवृंदकु षंडणध्यानधनुक्षसभी

तनिवारण । मेटमहाभ्रममोहकुनाटकज्ञानकुरासकुरूपविथारण । जौंमिलपारसलो
हसुहाटकवानकुपाससुभूषणकारण ॥ ४९९ ॥ चौपई ॥ श्रीजिनदेवमुनिंदकुवंदन
भक्तिकरीअघवृंदकुषंडन । मेटमहाभ्रममोहकुनाटक ज्यौंमिलपारसलोहसुंहाटक ॥
॥ ५०० ॥ देवमनुष्याहियेहितधारण । ध्यानधनुक्षसभीतनिवारण । ज्ञानकुरासकु
रूपविथारण । बाणकुषाससुभूषणकारण ॥ ५०१ ॥ दोहरा ॥ श्रीजिनचंदमुनिंद
को वंदनदेवमनुष्य । भक्तिकरीअघवृंदकों षंडणध्यानधनुष्य ॥ ५०२ ॥ मेटमहा
भ्रममोहको नाटकज्ञानकोरास । ज्यौंमिलपारसलोहसुंहाटकवानकुपास ॥ ५०३॥
॥ सोरठा ॥ श्रीजिनचंदमुनिंद वंदनदेवमनुष्यही । भक्तिकरीअघवृंद षंडणध्यान
धनुष्यसो ॥ ५०४॥ मेटमहाभ्रममोह नाटकज्ञानकुरासकों । ज्यौंमिलपारसलोह
हाटकवाणकुषासकु ॥ ५०५ ॥ अडिल्ल ॥ श्रीजिनचंदमुनिंदकुवंदनदेवमनु ।
भक्तिकरीअघवृंदकुषंडणध्यानधनू । मेटमहाभ्रममोहकुनाटकज्ञानकों । ज्यौंमिल

पारसलोहसुहाटकवानकों ॥ ५०६ ॥ कबित्त॥ श्रीजिनचंदमुनिंदकुवंदनदेवमनुष्य हियेहितधार । भक्तिकरीअघवृंदकुपंडणध्यानधनुष्यसभीतनिवार । मेटमहाभ्रममोहकुनाटकज्ञानकुशसकुरूपविथार । ज्यौंमिलपारसलोहसुहाटकवाणकुषाससुभूषणकार ॥ ५०७ ॥ इति कामद्धेन ॥ सोरठा ॥ समकितपाईजीव ओडकाशिवपुरजावसै । मिथ्यावंतसदीव जनममरणगहिभवभ्रमै ॥५०८॥ छप्पय छंद ॥ इकध्यावेविवतोडतीनधरचारपछारे । पंचजीतपटपालसातमैचितनाहिडारे । आठमथेनवसाजधारदसइकदशमाने । बारहरचतेरहहटाय चौदहथितजाने । पनदसविधिप्रभुउरधरैसोलसहरसतेरधरै । होइअठारहरहितहींअजरामरपदवीवरै ॥ ५०९ ॥ जहानक्तसंसारजनममृतालिंगजोगवय । गतिसन्नानकपायदेहइंद्रियनवरणमय । लेसाप्रजासंठाणसमुदघाताभयनाहीं । कर्मअंकनाहिप्राणचिहनमूरतनहिताहीं । अलपअमितअविचलअगमपरमजोतिपरवेश सर्वलोकसिरमुकटहोरमोसदासरवेश

॥ ५१० ॥ मत्तगयंद ॥ छंद ॥ पातकरीरलहेनकबेजबरुत्तवसंतसुधाघणहोई । जातकुअंधलषेनहिरूपधनंतरसेजवऔषधढोई । पावकगर्भपाषानजलेरहिकालघणे विनआगनसोई । त्यौंनलहैसमभेदमिथ्यातअभव्यसुणेजिनआगमजोई ॥ ५११ ॥ दोहरा आदिअंतनहिलोककों तामैजीवअनंत । विनासिद्धभवभेदकहु पणसैतेसठ वंत ॥ ५१२ ॥ ॥ छप्पय ॥ छंद ॥ इकसौइकनरभेदनाडिअवेसुरकेजानो । पुटवी पाणीअगनिवायदोदोविधिठानो । त्रयवनस्पतिभेदतीनविगलिंदियगिणयाति । दस त्रियंचसगनरकसर्वदोसैइकात्रिंशति । इसविधिगिणतपरजापतेइसोअपरजापातिजवे इकसौइकसंमुछममनुजपंचसैसुतेसठसवे ॥ ५१३ ॥ आडिल्ल ॥ कर्मभूमिनरजो निपंचदसजानिए । तीसअकरमीभूमिजुगलीएमानिए । छप्पणअंतरदीपजुगलीए हैसही । इकसौइकनरभेदसिधंतेइमकही ॥ ५१४ ॥ भवनपतीदसपनरापरमाहा मिया । सोलसव्यंतरदसोत्रिजंभकनामिया । दसोजोइसीदेवतीनहैकिलविषी ।

नवलोकंतकदेवलोकछव्वीसुपा॥४१५॥ सूषमवादरभूजलपावकवायके। इनाविवबणे त्रितीयश्रनंतीकायके । विगलावितिचउरिंदिजलेचरथलगया । षेचरभुजपरउरपर सन्निअसन्निया ॥ ५१६ ॥ घम्मावंसासेलाश्रजणानामहैं । रिठामघामाघवईदुःख कोठामहैं । रतनसकरवालूहपंकधूमपहा । तमातमतमानरकगोतसातेकहा ॥ ॥ ५१७ ॥ इकसौइकनरभेदतहांतिउपाजिया । विष्टादिकदसचारविषेसंमुछिया । परजापूरीतीनरुपरचतुराथिया । मरउपजेनरतिरियचाबिपेविनजुगलिया ॥ ५१८ ॥ ॥ दोहरा ॥ दयासिंधुचितशांतिरसशिवपुरवारेवंत । त्रिभुवनपतिसरपूज्यप्रभु । नमोदेवश्ररिहंत ॥ ५१९ ॥ सर्वज्ञानदर्शणकरी जिहपायोजगमर्म । तिहभाष्योउप गारहित जैनजवाहरधर्म ॥ ५२० ॥ समथथोडेपुरुषनरात्रियतांतेसंष्यात । वादर श्रग्निप्रजापती । श्रसंष्यातगुणथात ॥ ५२१ ॥ देवश्रनुत्तरवासके तांतेगुणेश्रसंष । तिहतेनवग्रीवेगके ऊपरकेगुणसंप ॥ ५२२ ॥ तिहतेमध्यमहेठइमश्रचुयश्ररणतहेव

पाणतआणतलगसभी । गुणसंखिज्जागिणेव ॥ ५२३ ॥ असंपिज्जगुणचहुदसे सत्तम
खितछठीव । कल्पआठमेसातमे पचमिनरकेजीव ॥ ५२४ ॥ लंतकदिवचउथीनरक
तांतेपंचमस्वर्ग तीजीनर्कचतुर्थदिव । त्रितियकल्पसुरवर्ग ॥ ५२५ ॥ दुतियनर्कनर
गर्भविन दुतियकल्पसुरताय । गुणअसंपपणवीसइह बोलकहैजिनराय ॥ ५२६ ॥
दुतियकल्पात्रियप्रथमसुर तांतियगुणसषेव । तांतेभवणदेवगण गुणअसंखभणएव ।
॥ ५२७ ॥ तांदेवीसेषजगुणअसंषेजगुणठान । धुरनरकेपंषीपुरुष बोलवतीसमजान
॥ ५२८ ॥ खचरीथलचरथलचरी । जलचरजलचरनीय । व्यंतरव्यंतरणितथा
जोतिकसुरतिहतीय ॥ ५२९ ॥ खेचरथलचरजलचरं लिंगनपुंसकतीन । गुणसंष्या
तसभमांहिगिण चउतालीसप्रवीन ॥ ५३० ॥ चउरिंदियपज्जत्तगा तांतेगुणसंष्यात
पंचिंद्रियपज्जत्तगा विसेसाहिएजात ॥ ५३१ ॥ बेतेइंद्रियप्रजापति विसेसाहीएदोइ
पंचिंदियअपज्जत्तगा असंखिज्जगुणहोइ ॥ ५३२ ॥ चउतेबेइंदियधरा अपजत्तगणि

एजीव । विसेसाहियातीनमै ब।वएबोलकहीव ॥ ५३३ ॥ बादरपंचप्रजापती अप
जत्तगछैजान । असंखिज्जगुणइकदसे तेसठमपहिचान ॥ ५३४ ॥ वनपत्तेयनिगो
दभू जलवाऊपएएह । तेउपत्तेयनिगोदभू नीरपवनछइतेह ॥ ५३५ ॥ अपजत्तग
सूषमअगनि गुणअसपचउसठ । अपजत्तगभूसूहमे विसेसाहिपणासठ ॥ ५३६ ॥
अपजत्तगजलवाउदे मूषमसैभीएम सूषमतेऊप्रजापती । संख्यातेगुणतेम ॥५३७॥
सूषमपुटवीजलपवन प्रजापतीएबोल । विसेसाहिएलषलहो । इगसत्तरमोटोल ॥
॥ ५३८ ॥ गुणअसंषअपजत्तगा सूषमजीवनिगोद । गुणसंषज्जसोप्रजापति लषो
ज्ञानधरमोद ॥ ५३९ ॥ तिहतेअधिकअभव्यहै पडिवाईतिहतेय । सिद्धप्रभूबादर
वणे प्रजापतीअधिकेय ॥ ५४० ॥ गणअनंतइहचहुविषे सत्ततरमोजान । प्रजाप
तीबादरसभी विसेसाहीएमान ॥ ५४१ ॥ अपजत्तगबनबादरे असंखिज्जगुणहोइ
अपजत्तगबादरसभी । विसेसाहिएसोइ ॥ ५४२ ॥ विसेसाहीएसभकहै बादराजि

णवरदेव। अपजत्तगवनसूहमे गुणअसंषभणएव ॥ ५४३ ॥ समसूषमअपजत्तगा
विसेसाहियाजीव। सूषमवणेप्रजापती गुणसंखिज्जसदीव ॥ ५४४ ॥ प्रजापती
सूषमसभी विसेसाहिएजान। समसूषमइमहाअधिक पटअसीतमोठान ॥ ५४५ ॥
बारहबोलामाहिकहु विसेसाहिएहोण। भवनिगोदवनस्पती एकिंदियतिखजोण ॥
॥ ५४६ ॥ मिछादिठअविरतीय, सकसाईछउमथ। संजोगीसंसारीया सर्वजीवइ
सअथ ॥ ५४७ ॥ इहविधिबोलअठानवे पन्नवणासोजान। इणमैंवरतबासठा ल्प
हरजसधरध्यान ॥ ५४८ ॥ एकिंदियसूषमइतर विगलिंदियतिहुजाति। सन्निअस
न्निपानिंदिया सातबोलविहुभांति ॥ ५४९ ॥ प्रजापतीअप्रजापती। इमचउदसाजि
यभेव गुणठाणेचउदेकहे जोगपंचदसएव ॥ ५५० ॥ उपयोगेबारहसहित लेस्या
छहुकेसाथ अल्पाबोलजोबासठा कह्यामुनीश्वरनाथ ॥ ५५१ ॥ बोलबोलमैंबासठा
ल्पाभांतिबहुहोइ। समकितधारीसद्दहै सोउडकशिवढोइ ॥ ५५२ ॥ इति अल्प

पावोध वोलकी दोहरा ॥ नमस्कारभगवानकों करोंसुगुरुकीसेव कर्मआठकेभेद
अब कहोंसिमरजिनदेव ॥ ५५३ ॥ **मरहटा छंद** ॥ सुणज्ञानावरणीदरसआवरणी
औरवेदनीआउ मोहनिनामायंगोत्रंत्रायं अष्टकर्मइहनाउ । अठकर्मुतपातीशिवमग
घातीइहबंधणसंसार । इहहतसुखपावै सिद्धकहावैश्रीजिनकह्योविचार ॥ ५५४ ॥
कवित्त ॥ मतिज्ञानावरणीपहलीसुण श्रुतिज्ञानावरणीदूजीय। औधज्ञानआवरणी
तीजीमनपरजोज्ञानावरणीय । पंचमकेवलज्ञानावरणी जोक्षयसोइज्ञानप्रगटीय ।
पांचोक्षयेभएकेवलधरजिनअरिहंतसर्वज्ञानीय ॥ ५५५ ॥ चक्षुदरसणावरणीकही
एवीजीनामसुणोजुअचक्षु औधदरसणावरणीतीजी केवलिदरसणवरणप्रत्यक्षु निंद्रा
अरुनिंद्रानिद्राफुनिप्रचलाप्रचलाप्रचलाअक्षु थीनद्धीनवदरसण वरणीक्षएसरवदर
सीपदलक्ष ॥ ५५६ ॥ कर्मवेदणीसाताकहीएपुन्यउदयदुखदायकहोइ । दूजीनाम
असाताकहीए पापउदयदुखदायकसोइ । बधेजीवदुहूंविधिबंधणस्वर्णलोहबेडीस

णवरदेव । श्रपजत्तगवनसूहमे गुणश्रसंषभणएव ॥ ५४३ ॥ सभसूपमश्रपजत्तगा विसेसाहियाजीव । सूषमवणेप्रजापती गुणसंखिज्जसदीव ॥ ५४४ ॥ प्रजापती सूपमसभी विसेसाहिएजान । सभसूषमइमहाश्रधिक षटश्रसीतमोठान ॥ ५४५ ॥ वारहवोलामाहिकहु विसेसाहिएहोण । भवनिगोदवनस्पती एकिंदियतिखजोण ॥ ॥ ५४६ ॥ मिछादिठश्रविरतीय सकसाईछउमथ । संजोगीसंसारीया सर्वजीवइ मअथ ॥ ५४७ ॥ इहविधिबोलश्रठानवे पन्नवणासोजान । इणमैंवरतबासठा रूप हरजसधरध्यान ॥ ५४८ ॥ एकिंदियसूषमइतर विगलिंदियतिहुजाति । सन्निश्रस न्निपनिंदिया सातबोलविहुभांति ॥ ५४९ ॥ प्रजापतीश्रप्रजापती । इमचउदसाजि यभेव गुणठाणेचउदेकहे जोगपंचदसएव ॥ ५५० ॥ उपयोगेबारहसहित लेस्या छहुकेसाथ श्रलपाबोलजोबासठा कह्यामुनीश्वरनाथ ॥ ५५१ ॥ बोलबोलमैंबासठा रूपोभांतिवहहोइ । समकितधारीसदहे सोउोडकशिवढोइ ॥ ५५२ ॥ इति श्रल

पावोध वोलकी दोहरा ॥ नमस्कारभगवानकों करोंसुगुरुकीसेव कर्मआठकेभेद
अव कहोसिमरजिनदेव ॥ ५५३ ॥ **मरहटा छंद** ॥ सुणज्ञानावरणीदरसणावरणी
औरवेदनीआउ मोहनिनामायंगोत्रंत्रायं अष्टकर्मइहनाउ । अठकर्मुतपातीशिवमग
घातीइहवंधणसंसार । इहहतसुखपावै सिद्धकहावैश्रीजिनकह्योविचार ॥ ५५४ ॥
कवित्त ॥ मतिज्ञानावरणीपहलीसुण श्रुतिज्ञानावरणीदूजीय। औधज्ञानआवरणी
तीजीमनपरजोज्ञानावरणीय । पंचमकेवलज्ञानावरणी जोक्षयसोइज्ञानप्रगटीय ।
पांचोक्षयेभएकेवलधरजिनआरिहंतसर्वज्ञानीय ॥ ५५५ ॥ चक्षुदरसणावरणीकही
एवीजीनामसुणोजुअचक्षु औधदरसणावरणीतीजी केवलिदरसणवरणप्रत्यक्षु निंद्रा
अरुनिंद्रानिद्राफुनिप्रचलाप्रचलाप्रचलाअक्षु थीनद्धीनवदरसणा वरणीक्षएसरवदर
सीपदलक्ष ॥ ५५६ ॥ कर्मवेदणीसाताकहीएपुन्यउदयदुखदायकहोइ । दूजीनाम
असाताकहीए पापउदयदुखदायकसोइ । बधेजीवदुहूंविधिवंधणस्वर्णलोहवेडीस

नयकरिभएसिद्धप्रभुजगतसिरोमणिषदनकोइ ॥ ५५७ ॥ अनुतानु

रिसमदकपटलोभचहुचहुविधिपोडसभेद

व ।परतापानीपरतापानीसंजुलमित्त । समकितमिश्र

कषायप्रकृत्त। हाससोगरतिअरतिदुरगंछाभयात्रिवेदपणवीसकहित्त ।

मिथ्यातमोहणीसभक्षययथाख्यातचारित्त ॥ ५५८ ॥ आउनरकातिरयंचमनुजकीसुर

कीचहुविधिकहीसिद्धंत। घेरेसरवजीवसंसारीजनममरणभवाथितिविरतत । जघनस

मेतेअंतमहूरतउोडकउदधितेतीसधारंत । चहक्षयकीएसिद्धअविनासी अविचलअक्ष

यअपंडअनंत ॥ ५५९ ॥ ऊचगोत्रपदवीइंद्रादिकराजादिकसुखभोगधरीव । नीच

गोत्रचंडालादिकनरनारकीतिरयचकुगतिकलीव। नीचऊचदोबंधणबंधेरायरंकरूपो

जगजीव । दोक्षयकरश्रीसिद्धविराजे सर्वलोकासिरमुकटसदीव ॥ ५६० ॥ गताचा

इंद्रीपांचोगिणपंचदेहत्रिउपांगवषान । बंधनपंचपंचसंघातणछयसंघयणाछयसं

। पंचवरणदोगंधपंचरसअष्ठफरसदोचालपछान । चराणुपुरवीदसत्रसत्रादिक

विनयधारइहमदअघमूचे ॥ ५८२ ॥ देतेदाननिवारेजोई । वधेदानअंतरासोई ।
परकेलाभअंतरापावे । लाभअंतराबहुदुखआवे ॥ ५८३ ॥ भोगभोगतेकोंअंत्राई ।
आपणभोगनसैदुखथाई । इमहीउपभोगनमैंजानो । इमहींवलप्राक्रमसैंमानो५८४॥
पांचोअतरायक्षयकीनी । सभव्यापककेवलपितलीनी । सर्वामांहीसभतेन्यारे । चार
कर्मक्षयचहुयुतसारे ॥ ५८५ ॥ मनवचकायातिहुंजोगनते । करणकरावणअणमोद
नते । बधेकर्मसुभासुभप्रानी । भवभवभ्रमैंजनममरनानी ॥ ५८६ ॥ इसभवकृत
इकइसभवपावे । पिछलेकृतइकइसभवआवे । इकइतकृतआगेपावेंगे ॥ इकापिछ
लेआगेआवेंगे ॥ ५८७ ॥ कर्मबधचहुधाजिनवानी । प्रकृतिबंधथितिबंधप्रानी ।
फुनिअनुभागतथापरदेसा । उदयआइभोगेसरवेसा ॥ ५८८ ॥ जोअघएकसत्व
हणतांते । गुणअनंतइकभूतवधाते । तिहतेगुणअसंघप्रानीको । पंचादियहणसंघ
गुणीको ॥ ५८९ ॥ वेइंदियतेलपतेइंदिय । सहसगुणेतिहतेचउरिंदिय । सौगुणप

चिदियवधयाको । तिरयचतेअधिकोमनुजाको ॥ ५९० ॥ समदिष्टीहणतांअघमारी
तिहतेवहुअघहणव्रतधारी । तिहतेसंयमवंतहणीकों । रुलेनरकतिरयंचघणीको ॥
॥ ५९१ ॥ इमअघअधिकअधिकतेथाता । इमहींपुन्यफलेंदियसाता । तीर्थंकरचक्री
हरबलधर । राजादिकसेठादिजुगलनर ॥ ५९२ ॥ पुन्नसुफलभोगेजगमांही । पा
पफलेनरकेतिर्यंचजांही । तजोपापहिंसादिकसारे । धर्मकरोजोभवजलतारे ५९३॥
॥ दोहरा ॥ नरभवआरजखितसुकुल । इंद्रियपंचअहीन । अरुजदेहथितिसुगुरु
मिल । जिनवाणीसुणलीन ॥ ५९४ ॥ सरधाकरणीधर्मकों । इहदसदुर्लभजान ।
महापुन्यतेधुरलहै । अधिकअधिकतेआन ॥ ५९५ ॥ घणेजीववसुलगलहै । नवसै
एकवतकेइ । पूरेपुन्नोदयलहै । आराधिकपदजेइ ॥ ५९६ ॥ सुरउपजेनाहिफिर
दिवै । नहिनरकेगतिपाइ । इमादेवनरकननारकी । विवनरतिरयंचथाइ ॥५९७॥
चौपई ॥ कहूंगतागतिजीवांकेरी । सुणोभवकजनरीतिचंगेरी । प्रथमनरकजावेप

णवीसो । नरपणदसकर्मकभूमसो ॥ ५९८ ॥ तिरियपणिंदियसन्निअसन्नी । इहद
ससर्वपापफलमन्नी । दुतियअसन्नीवर्जतविंशत । जावत्ततीयवर्जभुजपरगति ॥
॥ ५९९ ॥ चउथीपेचररहितअठारह । पंचमिथलचरविनासतारह । उरपरविनपो
डसपष्ठीसो । सप्तमत्रियविनसोलसहीसो ॥ ६०० ॥ महापापसोंइहगतिहोई । वि
नभोगेछूटेनहिकोई । नरकपेत्रदुखदसविधिभारो । परमाधरमीसाथदुखारो ६०१
धुरतेपष्टीलगजीवांकी । गतिनरतिरयंचमाहिभवांकी । विंशतसन्नीमोसोआवे । स
प्तमितिरयंचपंचकहावे ॥ ६०२ ॥ भवनपतीव्यंतरमोआगति । इकसउइकनरजो
निप्रजांपति । दसतिरयंचप्रजापतियांकी । इकसौग्यारहइणबोलांकी ॥ ६०३ ॥
जोतिकसुरधुरकलपलगामो । आवेपंचासामोतामो । कर्मअकर्मभूमिपणताली । नर
तिरयंचपंचमननाली । चालीदुतियकलपमोंआवे । हेमईणवयदसेहटावे । भवनप
तीव्यंतरजोइसिया । चउउपजेतेईसंवसिया ॥ ६०४ ॥ कर्मभूमिनरातिरयंचवसे ।

वादरभूजलवणेतेईसे । इमहीकल्पसुधर्मीशानो । उपजेजिनवरवचनप्रमानो ॥
॥ ६०५ ॥ तृतीयकल्पतेअष्टमतांई । आगतिगतिवीसामोथाई । कर्मभूमिनरतिरयं
चमाही । उपरेनरहीतिरयचनाहीं ॥ ६०६ ॥ भूजलवणेदुसयतेताली । आवेविर
वासुणोसंभाली । भवणोविंतरपरमाधरमी । तिरजंभकजोतिकनिंदकरमी ॥६०७॥
दोइकल्पलगचौसठसारे । अठतालीतिरयचउचारे । तीसदुविधिनरकर्मभूमिया ।
इकसौइकसंमूछमनूया ॥ ६०८ ॥ गतितिरयचअठतालीमांहीं । इकसौएकत्तीनर
तांहीं । तेउवाउइकसोउनासी । नरतिर्यंचभेदजिनभासी ॥ ६०९ ॥ तेउवाउति
र्यंचहिजावे । अठतालीबोलामोंआवे । इकसौऊनासीनरतिरिया । त्रयविगलिंदि
यगतिआगतिया ॥ ६१० ॥ संमूछिमपंचिंदियतिरिया । इकसौऊनासीआगतीया
नरतिर्यंचनर्कधुरउपजत । इकपचासव्यंतरभवणेयुत ॥ ६११ ॥ नरसंमूछिमइकसौ
उनासी । नरतिरयंचतिहमोगतिभासी । तेउवाउताजिइकसोइघत्तर । आवेतहांल

घोश्रुतपत्तर ॥ ६१२ ॥ सन्नीतिर्यंचामोआगति । एकासीसुरसप्तनरकगति । अठ
तालीतिरयंचासेती । इकसौएकतीनरएती ॥ ६१३ ॥ जावेनरकामांहिकाहिजिम ।
अष्टमकल्पलगैसुरमैतिम । नरतिर्यंचसभनमैंजावन । पुन्नपापकृतफलकोंपावन ॥
॥ ६१४ ॥ तेउवाउसत्तमाषितजुगला । इहाविननरगतिआवेसगला । मानसजोनी
सभमेजाई । गर्भजकीगतिइहाविधिथाई ॥ ६१५॥ कर्मभूमिनरतिर्यंचसन्नी । अजा
पतैजुगलामैंपुन्नी । आवेजावेसुरगतिमांही । परमाधर्मीकिलविषनाही ॥ ६१६ ॥
कहीगतागातिजीवाकेरी । पदवीधरकोसुणोचगेरी । तीर्थंकरआठतीमासेती । आयो
होइकहीगुरुएती ॥ ६१७ ॥ नवलोकंतकछव्वीसुरपुर । तीननर्कतेआयोचितधर ।
पहलेपापकरीनरकाऊ । वंधीपीछेपुन्नादिपाऊ ॥ ६१८ ॥ सोधुरनर्कजाइदुखभोगे ।
निकससुपदवीपाइसुजोगे । वीसबोलउतकृष्टाराधै । सोतीर्थंकरपदवीलाधै ॥६१९॥
केईवीसआराधैसारे । केईतामैंकेतेधारे । अतिउतकृष्टभावसुभकारे । निजरेकोटकर्म

वहुभारे ॥ ६२० ॥ जवउतकृष्टमहारसआवे । तवतीर्थंकरगोतबंधावे । केईजिनच
क्रीपदसाहितं । वंधेपदवीसभदुखरहितं ॥ ६२१ ॥ अरिहंताकीकीरतिकरते । सिद्ध
प्रभूकेसुजसउचरते । अष्टप्रवचनमातगुणकहते । श्रीन्रतगुरुजीकेगुणगहते ६२२॥
थेवरजीकेगुणगणगाए । बहुश्रुतधारकगुणदीपाए । श्रीतपसीजीकेगुणगावे । वत
सलकरणेइहसुभभावे ॥ ६२३ ॥ समकितसुद्धपालनाचोपी । विनयरीतिसोंआतम
पोपी । षष्ठअवस्यकसुद्धकरंते । अतीचारविनसीलधरंते ॥ ६२४ ॥ पिणलवादिप
रमादमिटावे । अतिरुचिसोंतपकरहरपावे । तजिगिलानवीयावचकरणी । सुद्धस
माधिचित्तमोधरणी ॥ ६२५ ॥ ज्ञानअपूरवगहणोपावे । श्रीसिद्धंतकीभक्तिदिपावे ।
श्रीजिनवचनसिद्धंतप्रकासे । करप्रभावणाधर्महुलासे ॥ ६२६ ॥ वधनतीर्थंकरपद
वीके । वीसबोलजानोइहनीके । मल्लिनाथअधिकारेभाष । ग्याताश्रुतिसमवांगे
आपे ॥ ६२७ ॥ तीर्थंकररचणाधुरभाषी । तिहअतिसयसंषेपीराषी । अववरणो

करोगा । विनसजाइजिनराजसंजोगा । इहचउतियअतिसययुतस्वामी । सदानमै
हरजससिरनामी ॥ ६४४ ॥ श्रीजिणवरजगगुरुजगदीसो । प्रभुअरिहंतसर्वज्ञानी
सो । श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकर । वीतरागकरुणाकरशंकर ॥ ६४५ ॥ धर्मोत्तमपुरुषो
त्तममुनिवर । धर्मदेसणादायकसुषकर । इंद्रपूज्यभगवंतजसंसी । उत्तममातपिता
कुलवंसी ॥ ६४६ ॥ भवजलतारकधर्मजहाजी । भवदुषहरशिवपुरसुपसाजी । स्व
यंबुद्धिरिषिधर्मविथारी । मिथ्यातमहरसमदुतिकारी ॥ ६४७ ॥ कर्मशत्रूहणानिर्भय
स्वामी । सुद्धसमाधिवंतशिवकामी । दंसणनाणचरणपरमोत्तम । जतीधरमदसधा
कथतोत्तम ॥ ६४८ ॥ जांकीभक्तिकीयाअघनासे । प्रगटेबुद्धिरिद्धिसुहुलासे । लहै
भव्यशिवदिबमैवासो । नरभवराजभोगधनरासो ॥ ६४९ ॥ ऐसोश्रीपरमेश्वरमेरो
मनवंछितसुखदेतचंगेरो । वंदोमनवचकायसजोगे। चाहतहौंपहुचोशिवलोगे ६५०
दोहरा ॥ श्रीतीर्थंकरदेवकी रचणाकहीवपान । सकलकर्मक्षयकरभए अटलसिद्ध

भगवान ॥ ६५१ ॥ इति तीर्थंकरस्वरूप ॥ दोहरा ॥ नागोत्तमपुरुषोत्तमो। चक्र
वर्त्तिपदएहमहापुन्यफलतेलहै । तारचणासुणलेह ॥ ६५२ ॥ चौपई ॥ चक्रवर्त्तिके
बोलबियासी । एकनरकसुरभेदइकासी । परमाधर्मीकिलविपरहिया । महापुन्यच
क्रीपदलहीया ॥ ६५३ ॥ दानसुपात्रअभयअतिभावें । साधुभक्तिविनयादिदिपावें
तपचारतश्रुतपठणपढावन । महाकपायविकारहटावन ॥ ६५४ ॥ घणेजीवकोंसा
तादीनी । सर्लभावकरणीसमकीनी । सलिपालनिर्दोपादिपावन । गुणअनेकचक्री
पदपावन ॥ ६५५ ॥ वंधचक्रपदइकभयलेवें । तांतेचक्रपतीपदवेवें । उत्तममंडली
कभूपतिके । पुत्रहोइजननीसतवातिके ॥ ६५६ ॥ घणाकालभूपतिपदभोगे । चक्र
रतनआवेसुभजोगे । अनुक्रमचउदेरतनसुगाए । यक्षसहसइकइकयुतआए ६५७॥
तनरपवालसहसदोदेवा । सोलसहंसयक्षकरसेवा । तीनदिसालवणोदधितांई । उ
तरादिसाचुलहेमवंतताई ॥ ६५८ ॥ यामैंदेससहंसबतीसा । तांपतिआज्ञामांहिस

धीरो ॥ ६७४ ॥ भोगेभोगअनूपमसारे । मनवंछितयुतसमपरिवारे । पुरुषरतन
चतुनिजपुरहोवें । हयगजगिरिविताडवनढोवे ॥ ६७५ ॥ आयोचक्रसुआयुधसाला
सुरसहंसयुतरूपरसाला । पडगदंडअरुछत्रतथाही । आयुधशालाचारोताही ॥
॥ ६७६ ॥ मणीकागणीचरमजुआवे । आघरतेंसुरसाथसुहावे । श्रीचक्रीश्रीघर
ढीगआवे । नवनिधिनवनिधीसतेंपावे ॥ ६७७ ॥ नेसप्पेपंडगइहनामो ॥ पिंगल
सर्वरतनसुखधामो । महापदमअरुकालकहिज्जे । महाकालमानगभणिज्जे ॥ ६७८ ॥
संखनिधीवनमोइहनामो । नवनिधानसुरपूरणकामो । चलेचलेटिकपाटकजावे ।
गुतभूमिप्रभुहेठसुहावे ॥ ६७९ ॥ वासीधरविजयाधविचाले । महानदीदुहअंतर
वाले । उत्तराढत्रयषंडसुलक्षण । जलधिविताढवीचत्रयदक्षण ॥ ६८० ॥ गुफापोल
गजसीसमणीधर । तिहचढकागणीकरेसुदुतिवर । पुलबनाइढकउमगानिमगजल ।
ढपंडकेविचलेथल ॥ ६८१ ॥ षटषंडनाथआपविचलेदुह । रमप्रशेषसैनापति

पसिमुह । आनमनाइरतनवहुल्यावे । प्रभुकीभेटकरेजसपावे ॥ ६८२ ॥ हयगय रथपायकचतुरंगी । सैनासजीअपारसुरंगी । षटपंडसाधस्वैपुरप्रभुआवे । महाम होछवकरहरपावे ॥ ६८३ ॥ भोगेभोगअनूपमपूरे । उदयभएमुकतअंकूरे । केईच क्रपतीसुभजोगे । धर्मरुचीवैरागीभोगे ॥ ६८४ ॥ जनममरणदुखतेंभयभीते । त्या गसर्वसंयमपदलीते । कर्मषपायसिद्धप्रभुहोए । केंसरासंयमपदलोए ॥ ६८५ ॥ क ल्पाकल्पाविषयअवितारी । थोरेभवशिवपदअधिकारी । केईगृहीरहैसुखकारी । द यादानसुकृतविस्तारी ॥ ६८६ ॥ सोसुरगतिपावेसुभभोगे । सुखदुखहैसभकर्मसं जोगे । जेनहिधर्मविषेमनलाई । महारंभपरिग्रहसकसाई ॥ ६८७ ॥ भोगभोगतृ ष्णारसमाते । वहुतजीवाहिंसामोराते । घणेकरमबंधेमरतांते । नरकगएधुरतेसप्ताते ॥ ६८८ ॥ सुभकर्माकासुभफलहोई । असुभतणाफलअसुभजोई । चक्रवर्त्तिरचणाइ हभाखी । हैवहुतीमैथोरीआखी ॥ ६८९ ॥ जंवूदीपपएणतीमांही । कहीभरथचक्रीकी

तांही । इमलखलहोसरवकीरचणा । भवकप्रतीतिधरोजिनवचणा ॥ ६९० ॥ तीर्थं
करचक्रीहरिहलधर । प्रतिहरतेसठपुरुपोत्तमवर । वज्ररिपभनाराचसंघयणी । सम
चउरंससंठाणसुनयणी ॥ ६९१ ॥ इतिचक्रवर्त्तिरचणा ॥ दोहरा ॥ सकलजगत
पतिसिद्धप्रभु । वंदोमनवचकाय । हरिहलधररचणाकहूं । सुणोभवकचितलाय ॥
॥ ६८२ ॥ चौपई ॥ पहलेहरिहलधरतेहोई । हरिवैरीप्रतिहरिपदसोई । सोलसहं
शकेराजे । तांकीआज्ञामांहिविराजे ॥ ६९३ ॥ चिरत्रिषंडराजसुखभोगे । हलध
रिउपजेविधिजोगे । हलधरतेयासीबोलाते । दोइनरकइक्कासिसुराते ॥ ६९४ ॥
ंविवतीसनरकविवहीसो । नवलोकंतकदिव्वइकीसो । हरिहलधरपदवीदोभ्राता
विवन्यारीमाता ॥ ६९५ ॥ प्रथमरामहरिपीछैहोवे । हरिम्रतहलधरसंयम
छलेभवविवसंगीप्यारे । महामोहआपसमोभारे ॥ ६९६ ॥ इकदुक्करकरणी
। साथनियाणहरिपदवंधो । पापेबंधनरकगतिजानो । पीछेसूकृतसाथानि

यानो ॥ ६९७ ॥ महापुन्यफलश्रतिवलवानो । वासुदेवइमनर्केविमानो । दुतीयोसा
थकर्मसंजोगे । उसीठामकेभएवियोगे ॥ ६९८ ॥ पदवीरामधर्मयुतपुन्ने । वंधीइम
उत्तमदुहुन्ने । उदयहोइदुहुकोइकठामे । हलधरहरिभ्राताछविकामे ॥ ६९९ ॥ अनु
क्रमजोवनवयबलवंते । सूरवीररणधीरधरंते । होणहारतेप्रतिहरिसेती । कलहउठी
किसकारणहेती ॥ ७०० ॥ दोनोदलसैनासाजिआए । महाप्राक्रमीरूपसुहाए । ना
नाविधिआयुधधरविज्ञा । युद्धभूमिसजमदबहुकिज्ञा ॥ ७०१ ॥ संपपंचजनलुठीए
दीनो । धनुपगदारथसुरतेलीनो । औरशस्त्रबलविद्याकेती । हरिकोसुरदीनीहित
सेती ॥ ७०२ ॥ गरजेप्रतिहरिहलधरदेवा । दुहपक्षेसुरकरतेसेवा । घणायुद्धकीना
भिडसूरे । हरिशविसमारिपुतमबलचूरे ॥ ७०३ ॥ भिडेपरस्परप्रातिहारिहरजी । शस्त्र
घणेविद्याबलधरजी । ओडकप्रतिहरिचक्रचलावे । सोहरिहाथआइविगसावे ॥
॥ ७०४ ॥ पूजचक्रहरिदेवचलावे । सोप्रतिहीरसिरछेदल्यावे । भईजीतिहारिहल

धरजीकी । फूलवृष्टिसुरनभनेमूकी ॥ ७०५ ॥ सर्वभूपसिरआइनिवाए । वासुदेव
पदवीप्रगटाए । राजसहंसदेससोलाका । निर्भयकरणसरणनिवलाका ॥ ७०६ ॥
परणीराजसुतावहुसुंदर । भोगभोगकनकमणिमंदर । सबदरूपरसगंधरुपरसी ।
मनवचकायकरासुषसरसी ॥ ७०७ ॥ वासुदेवकेसवहरिनामी । चक्रगदाधरत्रय
पंडस्वामी । संपपंचजनपूरणहारो । नारायणरणगर्जणभारो ॥ ७०८ ॥ कोडिपु
रुपबलधररणसूरो । रिपुमदमर्दणप्राक्रमपूरो । आठमहाबलहलमुसलायुध । रमेरा
मबलदेवसघृतवध ॥७०९॥ घणाकालसुपभोगेभारी । कीरतिजगतिमांहिविस्तारी
धर्मरुचीसुनिजिणवरवानी । श्रीजिनकेवलसाधुबषानी ॥ ७१० ॥ दानदयासुकृति
बहुदीने । मुनिवरहुवतिमहोछवकीने । पिछलेकीएनियाणेकारण । संयमअंतराय
हरिधारण ॥ ७११ ॥ वासुदेवसंयमनाहिपावे । मोहहेतुभाईनहिजावे । हरियुद्धादि
महाकरिंकरमे । नर्कआयबंधेविनधरमे ॥७१२॥ आऊखीनभएमृतहोवे । नरकजाई

दुखमांहिपरोवे । आर्त्तवियोगवडोदुखबलधर । फुनिविवेकलहिचितसमाधिकर ॥
॥ ७१३ ॥ संयमधारसाधुपदसाधे । कर्मपपावेमुक्तिअराधे । केईकेवलज्ञानीहोई ।
मुकतिभएनहिआवेंसोई ॥ ७१४ ॥ कैसरागसंयमपदधारी । सुरविमानीयामोंअ
वितारी । थोरेभवकरिशिवगतिपावें । दोऊसापसिद्धंतसूणावें ॥ ७१५ ॥ इमहरि
हलधररचणाजानो । सभतेवडोधरमहींमानो । सभसुखदायकधर्मसहीहै । धरम
कीर्त्तिसिद्धंतकहीहै ॥ ७१६ ॥ इति वासुदेवबलदेवरचणा ॥ दोहरा ॥ अटोत्त
रशतनामतें । आइभवेसरवग्य । नरपणदशतिरयंचपण । सुरइकयासीवग्य ॥
॥ ७१७ ॥ नर्कचारजलभूवने । प्रजापतीम्भजान । केवलदंसणज्ञानकी । गतिइक
मुकतिवषान ॥ ७१८ ॥ दोसउपछत्तरथकी । आयोहोइमुनीस । पंचनरकसुरनवन
वति । कर्मभूमिनरतीस ॥ ७१९ ॥ इकसउइकसंमुछिमा । तिरयचचालिजान । तेउ
वाउविनइमसभी । गतिसुरऊचविमान ॥ ७२० ॥ सोरठा ॥ पष्ठमनरकमिलाइ ।

दोसउछिहत्तरथकी । आयोपदवीपाइ । मंडलीकश्रावकतथा ॥ ७२१ ॥ दो० ॥
मंडलीककोचारगति । श्रावकसुरगतिपाइ । आराधिककल्पाविषे । इतरसुधर्मैताइ
॥ ७२२ ॥ जोश्रावककेकहेहै । सत्तमापितअधिकाइ । दोसउसत्तत्तरथकी । आयोस
मकितपाइ ॥ ७२३ ॥ संष्याउनरतिर्यंचमो । पटनरकालगजाइ । तीनविगलजल
भूवने । एकासीसुरथाइ ॥ ७२४ ॥ सैनापतिगाथापती । विसकर्माद्विजजीय । दोस
उएवत्तरथकी । रतनात्रियाइमहीय ॥ ७२५ ॥ षष्टनरकचउरानवे । देवअनुत्तरटाल
कर्मभूमिनरतीसते । चालीतिरयचभाल ॥ ७२६ ॥ इकसउइकसंमूछिना । एवत्तरस
उदोइ । चक्रीकेपाचोरतन । इनतेआएहोइ ॥ ७२७ ॥ दोसउसत्ताहठकी । हयग
यरतनकहीस । एकासीसुरसगनरक । तिरयचअठचालीस ॥ ७२८ ॥ कर्मभूमि
नरतीसतें । मनुजसमूछिमजेइ । इकसउइकइहसभमिले । आगतिथानकनेइ ॥
॥ ७२९ ॥ रतनइगिंदियसातकी । दोसउतेतालीय । चउसठसुरविवकलपलग ।

आणमिलेउत्पतिकहै । क्षयेआणमरणेव । भववासीजियहैसही । अविनासीनिज
देव ॥ ७४० ॥ नरेनविनपूरीप्रजा । सुरनारकिजुगलाहि । तेसठपदवीऔरबहु ।
कह्येजिनागममांहि ॥ ७४१ ॥ कीएकर्मजीयआपने । भोगेपरकेनाहि । मातापि
तासुतनारिपति । भ्रातादिकजगमाहि ॥ ७४२ ॥ मिलबंधेकितहूंकर्म । सोमिलभो
गेजीव । कीएकराइसलाहके । साथीभएसहीव ॥ ७४३ ॥ जीवअजीवभवेनहीं ।
तिमेअजीवनहिजीव । जोहैसोसोईरहै । भवमेमिल्योसदीव ॥ ७४४ ॥ जौलौजी
वअजीवयुत । तौलौसंसारीह । तजिअजीवनिजशक्तिसों । सिद्धअटलपद
वीह ॥ ७४५ ॥ इति गतागति ॥ अथ प्रहेलकाअलंकार ॥ अंत्रालापका ॥
छप्पयछंद ॥ कौणउताणजोगजगतसुखकितामितलागो । कोमुनितपपरतापकौण
गतिभोजनत्यागो । सूकरकिहताजिजाहधर्मकिहकालसुहोता । रिपुसोंकिंकृतजोग
कौणधुरभोजनदाता । किहसमअगिणतसुगुरुगुणकहांलहैहरिहरपमन । किहवदे

पूजेसुगतिरिषभादिकतीरथकरन ॥ ७४६ ॥ उत्तर रिण १ पण २ भान ३ दिन ४ कण ५ तीन ६ रण ७ थण ८ कण ९ रण १० रिषभादिकतीरथकरण ११ सवैया किंसभचाहतकोपुनरष्यरकोंणालिपेथपिमाकिनबंधी । कोसभैंकिहरूपधरयोलघु कोवनपोपककोकुलसंधी । कौणभलौगुणकाहिधरैकविचालसुकौणभईबहुधंधी । काहितजैसुविरागचंढेनृपकंचणभूपणकंजसुगंधी ॥ ७४७॥ उत्तरएकएकअक्षरका । क. सुप १ च. पुनः २ न. निषेधे ३ भू. धरती ४ पं.नभ ५ न. नगन ६ कं.जल ७ जं. पुत्र ८ सु. सुष्ठार्थे ९ गं. गतार्थे १० धी. बुद्धी. ११ कंचणभूषणकंजसुगंधी १२ विहिलापिका ॥ दोहरा ॥ सूधीसाईमोक्षकी । उलटीदुर्गतिदेत । तीनवरणजानो चतुर । विवलघुइकगुरुहेत ॥ ७४८ ॥ उत्तर ॥ समता ॥ सूधात्यागणजोगहै । उलटाधारणजोग । इकवरजनइकदेवणे । दोअक्षरमयहोग ॥ ७४९ ॥ उत्तर ॥ मद ॥ दोहरा ॥ बहुमैंविचमैंसुखविषै । तीनवरणचितधार । सुभकारजगुणकोंकरै । सत

जनकहैविचार ॥ ७५० ॥ उत्तर विवेक ॥ दोहरा ॥ जिनजतिसुरनरपशू । परमजी
ततिसजीत दोइवरणउलटेत्रिया । जिहमोहेजगरीत ॥ ७५१ ॥ उत्तर ॥ रना ॥
जेहडे अक्षरप्रमाणके ओही उत्तरके दोहरा ॥ कागजकीछलनीत्रिया । कावलवा
लीनार किन्नरमोहेसुरकरी । कंद्रपजितसार ॥ ७५२ ॥ कोकरतात्र्यघजालकों ।
कोहरताहितसित्त । कामरतीडरतीनहीं । कालगतीअपवित्त ॥ ७५३ ॥ बहिलापक्ष
दोहरा ॥ कोवरजनकाविनयरिपु । किहफुनिचाहतदेत । जिहविनकेवलहरिविनाहि
जगगैउतमएत ॥ ७५४ ॥ प्रथमोमंडणगृहीकों । दूजोवरजनसोइ । तीजोसुतती
नोमिले । वडेपुन्नसोंहोइ ॥ ७५५ ॥ धुरविनकायररणगहै । विचविनद्वादशभांति
अंतविनामुनिवरनजे । तांगणपतिहिमक्रांति ॥ ७५६ ॥ उत्तरतीनोदोहरेका । मान
स ॥ दोहरा ॥ कोरिपजितकातनविना । केत्रियकोसुतछंद । कासुपङ्गसंसयहरा ।
जिणवाणीगुणासिंधु ॥ ७५७ ॥ उत्तर जिण १ वाणी २ गुण ३ सिंधु ४ जिणवाणीगु

णसिंधु ५ छप्पयछंद ॥ कोसोभतनिसधामकौणश्रुतिमांहिसुहाई । दुरवुद्धीनरकौ
णदरवविनकौणकहाई । कवभोजननहिकरैसुव्रतधरगुणकोजोवे । मत्रयत्रतंत्रादिसि
द्धवहुतेकवहोवे । श्रीजिनवरचौवीसमोकवसीझैजगप्यात । उत्तरसभणाकाकहादी
वालीकीरात ॥ ७५८ ॥ उत्तर दीवा १ वाली २ लीकी.लीकलगानणवाला ३ कीरा
४ रात ५ दीवालीकीरात ६ दीवालीकीरात ७ छप्पय ॥ काचपलाकोसहदेहकोव
रजनमांही । कौणठाकमोकौणदंडधरकुतीयोआही । किहतेहीणोसीतकौणमहिपा
लकहाही । कोवारहविधितपेकवैनरक्रोडामांही । वहुधरमोनरनारिकहुकहांधरैहित
चाह । सभकाउत्तरइहकहामाहोमांहीमाह ॥७५९ ॥ उत्तर मा १ हो २ मा ३ ही ४
गाहो ५ माही ६ माह ७ माहोमाहीमाह ८ ईही ९ सवैया ॥ सतगुरुमिलेतवेकया
कहीएझूठसभाकिहतजीएसाथ । किहकोभ्रमणनिवारणवेछोकौणऊपमासदकेमाथ
कौणसोभतोसैनामांही किहपालेमानवपशुसाथ । कौणजापकरवहुसुपहोवे इहतुम

लीन । श्रीरिषिदिन्नदयानिधिस्वामीजांकेचउसठइंद्रअधीन । श्रीजिनराजपदमप्र
भुवंदोसेवोजिमजलचाहतमीन । श्रीव्रतधारजिनेसरपूजोपावोधिषणाहोइप्रवीन ॥
॥ ७६८ ॥ श्रीसुपासजिननायकसिमरोजिहजीतेमोहादिकसूर । वंदोशामचंदगुणसा
गरसुंदरकरुणानिधिभरपूर । श्रीचंद्राप्रभुकेगुणगावोजननमरणदुखजावणदूर ।
युक्तसेणप्रभुदीरघवाहूवंदोजिहझाडीअघधूर ॥ ७६९ ॥ वीतरागश्रीसुविधिनाथजी
पुष्फदंतसोहेभगवान । उतश्रीअजितसेणाजिनराजतधर्मोत्तमपुरुषोत्तमजान । श्री
सीतलदिवशिवसुपदायकसाथमुनोगणगणधरदेव । सत्तसेणासियसेणप्रभुभजसक
लसुरासुरकीनीसेव ॥ ७७० ॥ श्रीदेवाधिदेवश्रीयंशंवंदोभक्तिधरीमनमांहि । देवश
रमजीकेपगपूजनतेसुखहोतदोषदुखजाहि । वासपूजजीकेपगपूजनतेपाएसुखअच
लअनत श्रीनिष्पतिशस्तश्रीयंशंवंदेचउसठइंद्रमहंत ॥७७१ ॥ जिहासिमरेचितहो
इविमलअतिविमलनाथसेवोचितलाय । श्रीयंशेज्वलजिनवरवंदोईरवरततीरथपति

थाय । श्रीअनंतजिनगुणअनंतमयवहुजनतारतरेभवनीर । श्रीअनंतसिंहसेणनाम
प्रभुउतथेत्रेसोहतवरवीर ॥ ७७२ ॥ धर्मोत्तमश्रीधर्मनाथजीधर्मसंघशिवपंथनिवाह
श्रीउपशांतिजिनेसरपूजोभवअनेककेपातकलाह । धरमचक्रपतिशांतिनाथजीशां
तिकरेसेवोधरभाव । उतश्रीगुपतिसेणधरमोत्तमतीनजोगसजगुणगणगाव ॥ ७७३
नयश्रीकुंथनाथअरिमर्दणसर्वज्ञानदर्शणगुणवंत । नमोनमोअतिपार्श्वस्वामजीवहु
जनतारतरेभगवंत । कर्मशत्रुहणराजलीयोथिरश्रीअरिनाथधर्मचक्रेश । श्रीसुपास
जिनस्वयंवुद्धिप्रभुजिहसेवेसुरउरगनरेश ॥ ७७४ ॥ सीलगुणोदधिमल्लिनाथजीकरे
सिद्धिभवजनकेकाज । जगन्नाथमरुदेवमहामुनित्रिभुवनतिलकमुकतिपुरराज । श्री
मुनिसुव्रततीर्थंकरकोंधरैध्यानमनवंछितासिद्ध । श्रीनिरवाणगतंवरवंदोलहोअनूपम
अविचलरिद्धि ॥ ७७५ ॥ श्रीनमिनाथहाथदिवशिवसुखसेवकलहेरहेथिरहोइ ।
खीणदुःखश्रीशामकोष्टजीजांकाजसपसरयोतिहुलोइ । दयानिधानअरिष्टनेमीजीसे

नमथआदिशत्रुसभजीत । अग्निसेणजिणमहासेणजिनकीनीमुकतिरमणिसोप्रीत ॥ ॥ ७७६ ॥ श्रीजिनपार्श्वनाथजगविश्रुतिवंदोसेवोचितउचरंग । नमोखीणरजमुत्तउ त्तजीजिहलगुचारजामपंचरंग । अंतमवर्द्धमानप्रगटेजिनपंचमहाव्रतधरसितचीर । उतश्रीवारिषेणजिननायकजंबूदीपतरेभवनीर ॥ ७७७ ॥ भरथईरवर्तपंचपंचमैचउ वीसीहोवेजिनधर्म । गणधरसाधुसाधवीश्रावकहरेकर्मपावेवरशरम । श्रीजिनभक्ति भक्तिमैउत्तमदुर्गतिहरैसुगतिफलदेत । हरजससेवलहोसभहींसुखउोडकासिद्धषेतके हेत ॥ ७७८ ॥ इति भरथईरवर्तजुगलचउवीसी ॥ दोहरा ॥ मोहमहाभटजीतके संयोगीपुरराज । नमोंदेवअरिहंतजी । करोसिद्धमोकाज ॥ ७७९ ॥ गीयाछंद ॥ इसभरथमोचउवीसजिनवरचक्रपतिद्वादसभए । नवरामकेशवारिपुबलीनवमाराति हहरिजसलए । तेसठपदोत्तमकोकमांहीप्रगटश्रीजिनवरकहे । जिसभांतिअनुक्रम सोकहाजिहकेसुणेजनसुघलहै ॥ ७८० ॥ श्रीरिषभदेवजिनंदप्रथमोभरथचक्रीशिव

गए । श्रीअजितनाथजिनंदमासणसगरचक्रीरिपिभए । संभवप्रभूअभिनंदनोत्तम
सुमतिपद्मप्रभंनमो । जिनवरसुपारसचंदप्रभुजीसुविधिसीतलपगरमो ॥ ७८१ ॥
इहअष्टजिनवारेनचक्रीरामकेशवनाहिभए । जिनभक्तिभूपतिमंडलीकासेवश्रीजिन
सुपलए । श्रीअंसदेवत्रिपृष्टकेशवअचलरामविराजियो । हयग्रीवारिपुहणकरमहा
एणहरपसोंहरिगाजियो ॥ ७८२ ॥ श्रीवासुपूज्यजिनदप्रगटेहारिद्विपिष्ठविजयवलो
हरिशत्रुतारकअतिवलीतिहमारिहरिराजतभलो । श्रीविमलनाथजिनंदसोभतहारि
स्वयंभूतवभएयो । बलदेवभद्रसुनामसुंदरशत्रमेरुकहरिहएयो ॥ ७८३ ॥ देवाधिदे
वअनंततवपुरुषोत्तमोहरियशधरी । तिसभ्रातमोप्रभुवलधरोमधुकैटभंभंज्योहरी ।
श्रीधर्मनाथजिनदकेशवपुरुपसिंहवषानिए । हलधरसुदर्शणरिपुनिशुभंहरिहण्योइ
मजानिए ॥ ७८४ ॥ पीछेतिसेश्रीमघवचक्रीआउपणलषवरसही । सुखभोगतज
रिपिहोइशिवलहिजगतमहिमासरसही । कुछकालवीतेभएचक्रीनामशांतिकुमारजी

अणगारपदवीपाइकेवलसिद्धकर्मनिवारजी ॥ ७८५ ॥ इहदोइचक्रपतीजिनंतरमां
हिहोएहैंसही । श्रीशांतिकुंथजिनंदअरिजिनचक्रवरतीजिनवही । बलशत्रुमारत्रिपं
डस्वामीपुरुषपुंडरीकाक्षए । वलदेवनामअनदरिषहुइशिवगयोइमभाक्षए ॥ ७८६ ॥
तिहतेभयोसंभूमिचक्रीजलधिमरनरकेगयो । पहलादरिपुहणदत्तकेशवनंदणोहलध
रथयो । श्रीमल्लिनाथउनीसमोजिनकर्मक्षयकरशिवगमै । मुनिसुव्रतोत्तमदेवकेपग
महापदमैतेनमै ॥ ७८७ ॥ जिनअंतरेहरिशत्रूरावणमारलछमणजसलह्यो । श्रीरा
मचन्द्रसुभ्रातनामीपदमनामतथाकह्यो । नमिनाथजिनहरिषेणचक्रीपालसंयमशिव
लहीं । जिनअंतरेजयचक्रवरतीमुनीपंचमिगतिकही ॥ ७८८ ॥ हरिवंशदेवअरिष्ठ
नेमीकृष्णकेशवशोभते । रिपुजरासिंधुपछारश्रीवलभद्रयुतधरमेरते । जिनअंतरेमो
चक्रवरतब्रह्मदत्तसुवारमा । जिनदेवपारसनाथश्रीजिनवर्द्धमानसदानमो ॥ ७८९ ॥
इतितेसठशिलाघापुरुषरचणा ॥ दोहरा ॥ विहरमानजिनबीसजी । महाविदेह

विराज । गुणग्राहीवंदनकरै । भवतारोजिनराज ॥७९०॥ कामणीमोहना छंद ॥
वीसअरिहंतकाध्यानधरचित्तही । गाईएजासुगुणवदीएनित्तही । देवतानाथचउसठ
सोध्यावते । जासुकीरतिकरअंतनाहिपावते ॥ ७९१ ॥ देवअरिहंतसीमंधरस्वामजी
दूसरोदेवसुजुगंधरोनामजी । वाहुजिनवंदीएध्यानधरध्याईए । देवसुवाहूगुणभावधर
गाइए ॥ ७९२॥ देवसुजातजीमोक्षपददेतहै । श्रीसुसयप्रभूजासुगुणसेतहै । सिधु
भवताररिषिभाननोस्वामजी । ईसरानंतवीरजविभोनामजी ॥ ७९३ ॥ देवभगवंत
सूरीप्रभूध्याईए । नाथजिनदेवसुविशालगुणगाईए । हूंकरूंवंदणावज्जरंधारजी ।
तारचंद्राननासिंधुभवपारजी ॥ ७९४ ॥ ध्यानधरवंदीएचंदरवाहुजी । देवसुभुयंग
मध्याउशिवचाहुजी । भालनितभावधरईशरवंदीए । नेमिप्रभुध्याइकेदुःखनिकंदीए
॥ ७९५ ॥ देहुआनंदचितवीरसनेसजी । सेवीएभावधरमहाभद्रेसजी । संतिचित
मांहिश्रीदेवयशाकरो । अजितवीरजप्रभूदुःखजगकोहरो ॥ ७९६ ॥ प्रथमसंघय

णतनप्रथमसंठानियं । एकहजारअठलक्षणजानियं। पंचसैधनुषतनतेजरविजानिए
देवजघन्यइककोडिलगमानिए ॥ ७९७ ॥ परिपदाद्वादशीमांहिअभिरामते । निर
पजनसंतिआनंदसुखपावते । देतउपदेसपयूपसमवैनहैं । पिवैनरभव्यसुहुलास
चितचैनहैं ॥ ७९८ ॥ दीपजंवूविषेचारजिणजानिए । धातकीषंडमैंअष्ठजिनमानिए
अष्टजिनअर्धपुहकरविषैहैसही । सत्ताचित्तआनभगवानजीजोकही ॥ ७९९ ॥ सो०
विहरमानअरिहंतप्रणमोतुमरेचरणकों । चिंताहरचितसंतकरोसुदर्शणदीजीयो ॥
॥ ८०० ॥ इति ॥ **वीसविहरमानजिनस्तवनं** ॥ दोहरा ॥ सागरकोडाकोडिए ।
ऊणवियालिहजार । वरसअंतराधुरचरम । जिणवरमुकतिपधार ॥ ८०१ ॥ चौपै ॥
वंदोरिपभदेवजिनचंद । सिद्धभएपदपरमानंद । सागरकोडिलाखपंचास । अजित
नाथतवशिवपुरवास ॥ ८०२ ॥ तीसलाषकोडिजवगए । श्रीसंभवशिवगामीभए ।
लाषकोडिदससागरजवै । श्रीअभिनंदनसीझैतवै ॥ ८०३ ॥ तातेलाषकोडिनवथए

सुमतिनाथअविचलपदलए । नवतिहजारकोडिजलरासि । पदमप्रभूशिवपुरीनिवास ॥ ८०४ ॥ नवेहजारकोडिगतिकाल । श्रीसुपाससीझैभवटाल । नवसउकोडिजलधिगतिजवै । मुकतिगएचंदाप्रभुतवै ॥ ८०५ ॥ नवेकोडिसागरगतिजान । सीझैसुवधिनाथभगवान । कोडीनवसागरबीतंत । सिद्धभएसीतलभगवंत ॥ ८०६ ॥ लापछिहाहठवरसछवीस । सउसागरकेसाथकहीस । घाटकोटिसागरतेएह । श्रयिंशेश्वरसिद्धकहेहैं ॥ ८०७ ॥ तिहतेचउपणसागरगए । वासुपूज्यमुकतेसरथए । तिहतेतीससागरोजान । बिमलनाथशिववासवषान ॥ ८०८ ॥ तिहतेनवसागरभगवंत । सिद्धभएजिनदेवअनंत । सागरचारगएतिहसमै । धर्मनाथशिवथानकरमै ॥ ॥ ८०९ ॥ त्रैसागरपौणापलहीन । शंतिनाथसिद्धामोलीन । आधपलोपमबीतेकाल कुंथनाथभवभ्रमणाटाल ॥ ८१० ॥ घाटहजारकोडिइकवर्स । पलकाचउथाभागजुफर्स । इतेकालअरिजिनभगवान । सिद्धभएजगमुकटवखान ॥ ८११ ॥ एकहजार

कोडिवरसंत । मल्लिनाथकीनोभवअंन । चउपणलापवर्पगतिजोइ । श्रीमुनिसुव्रत
शिवसुषहोइ ॥ ८१२ ॥ तांतिवरसलाषघटगए । श्रीनमिनाथसिद्धपदथए । लाषपं
चवरसांकेअंत । सिद्धअरिष्टनेमिभगवंत ॥ ८१३ ॥ सहसतियासीसगसयसाथ ।
वरसपंचासापारसनाथ । सिद्धभएटाईसौबर्स । वर्द्धमानसिद्धाकोंफर्स ॥ ८१४ ॥
तीसवर्षलगरहैगृहस्त । वारइवर्ससाधुछदमस्त । जबवयलीवरसांकेथए । सर्वज्ञान
दर्शणमयभए ॥ ८१५ ॥ चउसठइंद्रमहोछवकिया । इकदसगणधरपदरिषिथया
चउतालीसयसाधुसुजान । ताकीरचणाकहूंवषान ॥८१६॥ पृथवीमातापितावसुभूत
गौतमगोत्रविप्रअदभूत । तांकेत्रयसुतविद्यावंत । आएत्रभुढिगअनुक्रमसत ८१७॥
चरचाकरसंसयसभटाल । शिष्यभएपरिवारोनाल । इंद्रभूतगौतमपरसिद्ध । दुती
योअग्निभूतिगुणरिद्धि ॥ ८१८ ॥ वायुभूतितृतीयोगुणमाल । पंचपंचसयसाथीनाल
हेयगेयउपादेजान । भएदुवालसअंगीभान ॥ ८१९ ॥ चउथोगणधरहैभरद्वाज ।

गौतमनामावियत्तविराज । पचमञ्चगानिविशायणगोत । मोरियपुतोकाशवहोत ॥
॥ ८२० ॥ साडित्रयत्रयसैसंगरली । संयमैपालीब्रतभली । गौतमगोतञ्चकंपतनाम
ञ्चयलभायहरियायणस्वाम ॥८२१॥ मेयव्वेयपभासेदोइ । कोंडिन्नागोतीतिरिषिहोइ
चारोतीनतीनसैनाल ॥ गणधरपदवीगुणेविशाल ॥ ८२२ ॥ समचउदेपूरवधरदेव
द्वादशांगाविद्याधरएव । रूपञ्चनूपगुणोदधिपूर । मोहादिकारिपुजीतनसूर ॥ ८२३॥
श्रीजिनविद्यमाननवसिद्धि । राजग्रहीनगरीसुप्रसिद्ध । इद्रभूतसुधर्मास्वाम । पछि
सिद्धभएसुपधाम ॥ ८२४ ॥ दसकीशिषसाषानाहिरही । रहीसुधर्मस्वामकीसही ।
जंबूस्वामीकाशवगोत । तांकेशिष्यसुगुणमयहोत ॥ ८२५ ॥ चरमकेवलीपहुचेमुक्ति
तांकेपट्टदिपैगुणयुक्ति । प्रभवस्वामिकच्चायणगोत । जिणमारगमैरविसमजोत ॥
॥ ८२६ ॥ तांकेशिष्यसिज्जंभवनाम । मणकपितानामीगुणधाम । वछसगोतमणग
केहेत । दसमीकालकरचीसुपेत ॥ ८२७ ॥ तांकेश्रीजसभद्रमुनीस । गोततुंगयाय

कोडिवरसंत । मल्लिनाथकीनोभवत्रंन । चउपणलाषवर्षगतिजोइ । श्रीमुनिसुव्रत
शिवसुषहोइ ॥ ८१२ ॥ तांतिवरसलाषपटगए । श्रीनमिनाथसिद्धपदथए । लाषपं
चवरसांकेअंत । सिद्धअरिष्टनेमिभगवंत ॥ ८१३ ॥ सहसतियासीसगसयसाथ ।
वरसपंचासापारसनाथ । सिद्धभएटाईसौवर्स । वर्द्धमानसिद्धाकोंफर्स ॥ ८१४ ॥
तीसवर्षलगरहैग्रहस्त । वारइवर्ससाधुछद्मस्त । जववयलीवरसांकेथए । सर्वज्ञान
दर्शणमयभए ॥ ८१५ ॥ चउसठइंद्रमहोछवकिया । इकदसगणधरपदरिषिथया
चउतालीसयसाधुसुजान ।ताकीरचणाकहूंवपान ॥८१६॥ पृथवीमातापितावसुभूत
गौतमगौत्रविप्रअदभूत । तांकेत्रयसुतविद्यावंत । आएप्रभुढिगअनुक्रमसत ८१७॥
चरचाकरसंसयसभटाल । शिष्यभएपरिवारोनाल । इंद्रभूतगौतमपरसिद्ध । दुती
योअग्निभूतिगुणरिद्धि ॥ ८१८ ॥ वायुभूतितृतीयोगुणमाल । पंचपंचसयसाथीनाल
हेयगेयउपादेजान । भएदुवालसअंगीमान ॥ ८१९ ॥ चउथोगणधरहैभरद्वाज ।

गोतमनामवियत्तविराज । पचमअगानिविशायणगोत । मोरियपुतोकाशवहोत ॥
॥ ८२० ॥ साडत्रयत्रयसैसंगरली । संयमैपालीव्रतभली । गौतमगोतअकंपतनाम
अयलभायहरियायणस्वाम ॥८२१॥ मेयव्वेयपभासेदोइ । कोडिन्नगोततिरिथिहोइ
चारोतीनतीनसैनाल ॥ गणधरपदवीगुणेविशाल ॥ ८२२ ॥ सभचउदेपूरवधरदेव
द्वादशांगविद्याधरएव । रूपअनूपगुणोदधिपूर । मोहादिकरिपुजीतनसूर ॥ ८२३॥
श्रीजिनविद्यमाननवसिद्वि । राजग्रहीनगरीसुप्रसिद्व । इन्द्रभूतसुधर्मास्वाम । पछि
सिद्वभएसुषधाम ॥ ८२४ ॥ दसकीशिषसाषानाहिरही । रहीसुधर्मस्वामकीसही ।
जंबूस्वामीकाशवगोत । तांकेशिष्यसुगुणमयहोत ॥८२५ ॥ चरमकेवलीपहुचेमुक्ति
तांकेपट्टदिपैगुणयुक्ति । प्रभवस्वामिकच्चायणगोत । जिणमारगमैरविसमजोत ॥
॥ ८२६ ॥ तांकेशिष्यसिजंभवनाम । मणकपितानामीगुणधाम । वछसगोतमणग
केहेत । दसमीकालकरचीसुपेत ॥ ८२७ ॥ तांकेश्रीजसभद्रमुनीस । गोततुंगयाय

णदिनईस । सासंखित्तवायणाकहै । तातेथेरावलीजुग्रहै ॥ ८२८ ॥ जसोभद्रजीके
विवजान । साधुसाधवीमैपरधान । आर्यसंभूतविजयरिषराज । माटरगोतकरैशिव
काज ॥ ८२९ ॥ भाद्रबाहुजीपायणगोत । श्रीजिनसासणमांहिउद्योत । शिष्यसंभू
तविजयकेसूर । थूलभद्रगोतमगुणपूर ॥ ८३० ॥ सातेभगणीसतीसमेत । सयमप
लेनिजराहेत । तारीकोस्यावेस्यानारि । काममहाभटकोमदमारि ॥ ८३१ ॥ थूलभ
द्रजीकेदुइभए । महागिरीएलावछथए । गोतवसिठसुहथ्थीनाम । दोनोसूरिमहागु
णधाम ॥ ८३२ ॥ सोहस्तीजीकेशिषदुए । सुठीयसुपाडिबुद्धोहुए । तिहकेइंदरदिन
सिषथए । आरजदिनतिसपीछेभए ॥ ८३३ ॥ सिंहगिरीसिंहनीपारिसूर । तपकर
कर्मकीएचकचूर । बालपणेजातीसरन्न । दसपूरवधरहुइइकमन्न ॥ ८३४ ॥ पन्नव
णाउद्धरताजान । आरजस्वामीकरैवषान । दिवढापमाश्रमलागोपाय । जनमजनम
केपातकजाय ॥ ८३५ ॥ वलिबाहूबलआद्रकुमार । जिससमरणहुइभवदधिपार ।

रचणा
४८॥

कहीपटावलिआगमसार । सेवककोंकरभवदधिपार ॥ ८३६ ॥ दोहरा ॥ जैनदि
पावनजगलक्षण । कर्मनिर्जराहेत । रचीसुररचणाज्ञानहित । पावणअविचलखेत ॥
॥ ८३७ ॥ भूलचूकयामैजुकछु । सतजनलेहुसुधार । खिमाकरोवखसोमुझे । तुमरो
इहउपगार ॥ ८३८ ॥ निश्चलसमकितधर्मरुचि । निर्भयसुखसतसग । होइप्रभूतु
मरीसदा । भक्तिमजीठरंग ॥८३९॥ श्रीसीमंदरस्वामिजी । वंदोमांगोएह । समो
सरणतवचरणनमि । देखोतवछविजेह ॥ ८४० ॥ श्रवणसुनोवाणीसुधा । पूछोप्र
घ्नअनूप । पूरोइछानाथजी । त्रिभुवनतिलकसरूप ॥ ८४१ ॥ दर्शणज्ञानचारित्रबल
चारअनंतसमेत । सोभतहौजगदीसजी । भवजनतारणहेत ॥ ८४२ ॥ छप्पय ॥
॥ छंद ॥ कलस ॥ छद ॥ अठारहसयसत्तरेवपंचमिथितमांहे । बुदादिनउत्तरमीनचं
दसुवसतउछांहे । कुसपुरवासीओसवालहरजसरचलीनी । सुररचणाजिनधर्मपुष्ठ
समकितरसभीनी । जिहसुतपठचितअरथधरवढैज्ञानसतवुद्ध । नमोदेवअरिहंतजी ।

जोसुरत्रया विभ्रम अरंभ मननाडिगयो । तुमकौन अचंभअचलचलावे प्रलेसमीर मेरुसिपर डिगमगेनधीर ॥१६॥ धूमरहित वातीगतिनेह प्रकासकत्रभवनघरएह । वातगम्मनाही प्रचंड अपरदीप तुवबल्योअखंड ॥ १७ ॥ षिपहुनलिपहुनराहुकी छाहि जगतप्रकासतहै छिनमाहि । घनआवरतन दाहनिवार रवितेअधकधरेगुन सार ॥ १८ ॥ सदाउदित विदलिततममोह । विकटितमेहराह अवरोह तुनमुख कमल अपूर्बचंद जगतप्रकासी जोतअमंद ॥ १९ ॥ निसदिनससी रवीकोनहि काम । तुममुषचंदहरेतमधाम जोसुभावते उपजेनाज । सजलमेघ तांकोनहिकाज ॥ २० ॥ जोसुवुधसोहे तुममाहि हरिहरादिक मेसोनाहि । जोद्युतिमहारत्नमेहोइ काचखंडनाहिपावेसोइ ॥ २१ ॥ नाराचछंद ॥ सरागदेवदेषमे भलोवसेषमानियां सरूपजहादेपवीतराग तोपछानिया । कछुनतोयदेषके जहांतुहीवशेपिए मनोगाचित्त चोर और भूलहुंनपेषिए ॥ २२ ॥ अनेकपुत्र वंतनीनतवनीसपूतहै । नतोसमानपुत्र

ऋौर माततेप्रसूतहै । दिसाधरंततारका ऋनेककोटकोगिणे दिनेसतेजवंत एकपुब्ब
हीदिसाजणे ॥ २३ ॥ पुरानहोपुमानाहो पुनीतपुन्नवानहो । कहेमुनीसअंधकार
नासकोसुभानहो । महंततोयजानके न होइवस्सकालके । नऋौर मोखमोखपंथदे
वतोयटालके ॥ २४ ॥ ऋनंतनितचित्तकी ऋगम्यरमऋादिहो । ऋसंषसर्वव्यापिवि
ष्णब्रह्माहोऋनादिहो । महेसकामकेत जोगईसजोगजानहो । ऋनेकएकज्ञानरूप
सुधसंतवानहो ॥ २५ ॥ तुहीजिणेसबुधहै सुबुधकेप्रमानते । तुहीजिणेसशंकरो ज
गत्रसेविधानते । तुहीविधातहैसही सुमोषपंथधारते । नरोतमोतुहीप्रासिध अर्थकेवि
चारते ॥ २६ ॥ नमोकरोजिणेसतोय ऋापदानिवारहो । नमोकरोसभूर भूमलोकके
सिंगारहो । नमोकरोभवारनी रराससोषहेतहों । नमोनमोमहेसतोयमोषपंथदेतहो
॥ २७ ॥ चौपई तुमपूरणजवगुनगनभरे दोषगर्भकरतेपरहरे । ऋौरदेवगणआश्र
यपाय सुपननदेषेफिरतुमऋाय ॥ २८ ॥ तरुऋसोकदलकिरनउदार तुमतनसोभतहै

अविकार । मेघनिकटज्युंतेजफुरंत दिनकरदिपेतिमरनिहंत ॥ २९ ॥ सिंघासनम
णिकिरनविचित्र तिसपरकंचनवरनपवित्र । तुमतनसोभतकिरनविथार ज्युंउदिया
चलरवितमहार ॥ ३० ॥ कुंदपुष्फसिरचमरढुलंत कनकवरणतुमतनसोभंत । ज्या
सुमेरुतटनिरमलकांत झरणाझरेनीरउमगांत ॥ ३१ ॥ ऊंचेरहेसूरदुतिलोप तीनछत्र
तुमदिपेअगोप । तीनलोककीप्रभताकहे मोतीझालरसोछवलहे ॥ ३२ ॥ दुंदभीश
ब्दगहरगंभीर चहुदिसहोइतुम्हारोधीर । त्रभवनजनशिवसंगमकरे मनोजयजयर
वउचरे ॥ ३३ ॥ मंदपवनगंधोदकइष्ट बिवधकल्पतरुपुष्फसविष्ट । देवकरेबिकसत
दलसार मानोतुझपंकतिअवतार ॥ ३४ ॥ तुमतनभामंडलजिनचंद सभदुतिवंतकर
तहोमंद कोटसंषरवितेजछपाय । ससिनिरमल निसकरेअछाय ॥ ३५ ॥ सुरगमो
षमार्गसंकेत । परमधर्मउपदेसनहेत दिव्यवचनमुषपिरेअगाध । सभभाषागर्भित
हितसाध ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ विकसतसोवनकमलदुति नषदुतिमिलचमकाय । तुम

पदपंकजजहांधरे तहांसुरकनलरचाय ॥ ३७ ॥ ऐसीमहिमातुमविषे औरधरेनहि
कोइ । सूरजमेजोजोतहै नहितारागनसोइ ॥ ३८ ॥ ढालकिंकपत्रकी । मदस्रवलि
पतकपोल मूलअलिकुलझंकारे । तिनसुनसब्दप्रचंड क्रोधउधतगतिधारे । काल
वर्णविकाल कालवतसनमुखआवे । ऐरापतिकी सरससकलजन भयउपजावे ।
देषगयंदनभयकरे । तुमपदमहिमालीन विपतरहितसंपतसहित वरेतभक्तिअधीन
॥३९॥ अतिमयमत्तगयंद कुंभथलनषनविदारे । मोतीरक्तसमेत डारभूतलसिनगारे
वांकीदाढविशाल वदनमेरसनालोले । भीमभयंकररूप देपजनथरहरडोले । ऐसे
म्रगपतिपगतले जोनरआयाहोइ । सरनगहेतुमचरनकी वाधाकरेनसोइ ॥ ४० ॥
प्रलेपव्वनकर उठीआगजोतीसपटंतर । वमेफुलिंग सिपाउतंगपर जलेनिरंतर ॥
जगतसमस्त निकलकेभस्मकरेगीमानो । तडतराटदवानल जोचहुदिसाउठानो । सो
इकछिनमे उपसमेनामनीरतुमलेत । होइसरोवरप्रणमे विकसतकमलसमेत ॥ ४१ ॥

कोकिलकंठसमान शामतनक्रोधजलंता। रक्तनैनफुंकारमार विसकोउगलंता। फण
कोऊचाकरे बेगहीसनमुषधाया। तवजनहोइ निसंकदेषफणपतिको आयाजोचंपेनि
जपावको व्यापेविषनलगार। नागदमनतुमनामकोजिनकेहै अधकार॥४२॥ जिसर
नमाहिभयानकशब्दजोकरे। तुरंगमघनसेगजागिरजाय मत्तमानोगिरजंगम अतिको
लाहलमाहि। वातजिहनाहिसुनिज्जे राजनकोवलचंडदेपवलधीरजछिज्जे। नाथतुम्हा
रेनामते सोछिनमाहिपुलाय। ज्योंदिनकरपरकासते अंधकारबिनसाय॥४३॥ मारे
जहांगयंद कुंभहथयारबिदारे। उमगेरुद्रप्रवाहबेगज जलसोविसतारे होइतरनअस
मर्थ महायोधाबलपूरे। तिसरनमेजनतोयभक्ति तिहहैरनसूरे। दुरजिहअरिकुलजी
जयपावेनिःकलंक। तुमपदपंकजमनवसे तेनरसदानिसंक॥४४॥ नक्रचक्रमकरा
कर भयउपजावे। जामेबडवाअग्नि तेजनिजनीरजलावे पारनपायोजासथाह
एजांकी। गरजेगहरगंभीर लैहरकीगिनतनताकी। सुषसोतरेसमुंद्रको जोतुम

गुनसमराहि लोलकलोलनकेसिपर । पारजानलेजाहि ॥ ४५ ॥ महाजलोदररोग
भारपीरतनरजेहै । वातपित्तकफकुष्ट आदिजिहरोगगहेहै । सोचतरहेउदास नही
जीवनकीआसा । अतिघनावनदेह धरेदुर्गंधनिवासा । तुमपदपंकजधूलको जोलावे
निजअंगते निरोगसरीरलहे । छिनमेहोइअनग ॥ ४६ ॥ पावकंठतेलेकरवांधे सां
कलभारी गाढीवेडीपयरमाहि जिनजंगविदारी । भूपप्यासचिंतासरीर दुषजेविल
लाने सरननहिजनकोइ । भूपकेवंधीपाने तुमसिमरनस्वैमेवही । वंधनसभपुलजाय
छिनमेतसंपतिलहे चिंताभयबिनसाय ॥ ४७ ॥ महामत्तगजराज औरम्रगराजद
वानल । फणपतिरनपरचड नीरनिधरोगमहावल । वंधनएभयआठ दरवकरमानो
नासे । तुमसिमरनाछिनमाहि अभयथानकपरकासे । इसअपारसंसारमे सरननही
अरुकोइ । यातेतुमपदभक्तिकी भक्तिसहाईहोइ ॥ ४८ ॥ इहगुनमालविसाल नाथ
तवगुननसवारी विवधवरणमैपुष्फ । गुंथमैभक्तिविस्तारी जेनरपहरेकंठभावना ।

मनमेभावे मानतुंगतेनिजाधीन शिवलक्ष्मीपावे । भाषाभक्तामरकी योहेमराजहित हेत । जेनरपढेसुभावते तेपावेशिवखेत ॥ ४९ ॥ इति भाषाभक्तामरसमाप्तं ॥

अथबालवतीसीप्रारंभ्यते ॥ सवैया ॥ अजरअमरपरमेश्वरकुंध्याईए ॥ सकलपातकहर विमलकेवलधर जाकोंवासशिवपुर तासोंलिवलाईए ॥ नादाबिंदरूपरंग पाणीपादउतमंग आदिअंतमधभंग जाकोंनहिपाईए ॥ संघयणसंठाण जाणनाहीकोईउनमान ताहिकोधरतध्यान शिवपुरजाईए ॥ भणैमुनिवालचंद सुणहुभवकवृंद ॥ अज. ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत देवदेवकरजाणीए ॥ जाकोंक्रोधनाहिमूरमानमायालोभदूर कर्मकीएचकचूर जिनमोंनआणीए जाकोंनमैइंदचंद सुरिंदमुनिंदवृंद नंतगुणहै जिणंद त्रिभुवनमाणीए ॥ जाकैहै अनंतज्ञान देतहैमुकतिदान ॥ अहिनिसताकोध्यान मनमांहिआणीए ॥ भणैमु. ॥ २ ॥ तरणतारणगुरु तारभवपारए पांचइंद्रीसंवरत नवनिधिब्रह्मव्रत धरततजततनित क्रोधादिकचारए ॥ महाव्रतपांचे

धार पालैहैपंचोआचार सुमतिगुपतिसार मातजयकारए ॥ ऐसेगुणगुरुहोइ पटकर्म
पालैजोइ गौतमउपमसोइ मुकतिदातारए ॥ भणैमु. ॥ ३ ॥ जगएकजीवदया धर्म
सुखदाईहै ॥ धर्महीतेरिद्धिवृद्ध धर्महीतेसयलसिद्ध नरदेवनवनिद्ध वहुजीवपाईहै ॥
धर्महीतैदेवलोक धर्महीतैसहूथोक इहलोकपरलोक धरमसपाईहै ॥ तांकोनमैसुरवर
नरवरबहुपर धर्महीतेजोइनर एकालिवलाईहै ॥ भणैमु. ॥ ४ ॥ उठउठधर्मकर सोवै
मूढकहारे ॥ दुत्तरसागरतर कोइतटपाइकर सोवेतहांनींदभर फिरआवैउहारे ॥
संसारसागरमांहि जांकोआदिअंतनांहि भरमतजांहितांहि पुदगलजहारे कांठोहै
मानवभव नीठनीठपायोअव सोवैमतषिणलव चेतकरइहारे ॥ भणैमु. ॥ ५ ॥ सुरत
रुकाटकर आकबोवेतेहरे ॥ चिंतामणिपाइकर मूढतांकोंपरिहर काचग्रहैरंगभरतां
सोकरैनेहरे ॥ गजपतिवेचकर सोतोमूढलेतपर पावैनांहिफिरफिर मुहपरेषेहरे ॥ महा
मूढहोतसोइ कामभोगरत्तहोइ हारैहैरतनजोइ मानुषकीदेहरे भणैमु. ॥ ६ ॥ उत्तम

कोसंगकर नीचसंगटालकै ॥ देषहुसागरसंग षारीहोतमहागंग नीमवीचंदनसंग चंदनधुबालकै ॥ जातैषीरहोतनीर ताकोमिलैजौसुवीर सोवीविंठजानषीर निजगुण गालकै ॥ पात्रबिणतारै बारटालैरक्तकुं विकारतुंबभेदभए चारभिन्नसंगचालकै ॥ ॥ भणैमु. ॥ ७ ॥ घडीघडीमूढतेरो आऊजलजाएहै ॥ कारमोकुटंबएह काहेकुकरत नेह हारैहैमानुषदेह फिरकिमपाएहै ॥ माततातघरवार बेटाबहूपरवार आवैनहीतो रीलार जासोमनलाएहै ॥ एकहितसीषसुन धर्मकरएकमन मानवभवरतन काहे कुगमाएहै ॥ भणैमु. ॥ ८ ॥ उदमादकहाभयो करतनज्ञानरे ॥ उपज्योतूगर्भावास वस्यौसवानवमास नकहैउपमजास दुष्यआहिठानरे ॥ ऊठकोडसूंईहोमचांपै कोई रोमरोम आठगुणोप्रतिलोम गर्भदुषजानरे ॥ अबतूंजनमपाय संसारकीलागीवाय फिररह्योक्यौंलुभाय तूंतोहैअज्ञानरे ॥ भणैमु. ॥ ९ ॥ जरादूरजबलग तबलगजगरे जराजबआइलग लालपरैमुषमग दंतगएसभभग डगमगपगरे ॥ जराआएगईवुध

नहीरहीकछुसुध रोगलागेवहुविधि जरापरैधिगरे ॥ कह्योकोइमानैनाहि दुपधरैमन
मांहि जोवनकीदिसजांहि उठधर्मलगरे॥भणैमु. ॥ १० ॥ जमकोविसासनांहि मूढ
तूंसंभालरे ॥ काहेभूलेदेषमाल चेतोक्यौंनप्राणीलाल ग्रहसीदुर्जनकाल बालहींगो
पालरे ॥ सुरगपातालजाइ उषधभेषधपाइ करैबहूदाइपाइ तौहीग्रहसीकालरे ॥ घट
तघटतजात पलघडीदिनरात आउषोगलतभ्रात करतजंजालरे ॥ भणैमु. ॥ ११ ॥
संसारअसारएह सारइकधर्मरे ॥ अथिरसंसारएह दीसतप्रभातजेह सांझसमैनाहि
तेह काहेपडयोभर्मरे ॥ मेरोमेरोकहांकरै सगोनहीकोइतेरै ॥ जीवएकलोहीफिरै भुजै
निजकर्मरे ॥ संसारसागरघोर ॥ भ्रमैजीवठोरठोर काहहोतहैकठोर कीधोनाहीसर्मरे
॥ भणैमु. ॥ १२ ॥ आपसमरापोप्राण हिंस्यादूरटालकै ॥ हिंस्याहैअनर्थषाण हिंस्या
तिहांपापजाण जीवहिंस्याछोडप्राणरागद्वेषगालकै ॥ हिंस्याहीतेरोगसोग षाणपाण
हीणभोग वहुदुषसहैलोग हिंस्याहीतेसालकै॥स्वयंभूमचक्रव्रत देषोजमदग्रपुत्त सात

मीनरकपत्त हिंस्यापंथचालकै ॥ भणैमु.॥ १३ ॥ अभयदानषटकाय जीवानितदीजीए
अभैदानवडोधर्म टालैहैदुक्रतकर्म वोरहैमिथ्यातभर्म काहेकाजकीजीए ॥ देष्योराष्यो
पारापति मेघरथनरपति सींचाणांकुंकहैनृप मेरोमासलीजीए ॥ अभैदानदीयोतिन
चक्रवर्त्तिहुवोजिन शांतिनाथदिनादिन त्रिभुवनपूजीए ॥ भणैमु. ॥ १४ ॥ काहेकुतूंबोल
तहै झूठनिरातालरे ॥ झूठभाषामहादुष्ट पापहीकोकरैपुष्ट लोकसहुकरेपिष्ट तूतोहैल
वालरे ॥ झूठबोलोकहैलोइ मानेनवचनकोइ तिरजंचहोइसोइ आगमसंभालरे देषो
वसुराजाभोर मिसरवचनबोल सातमीनरकघोर गयोकरिकालरे ॥ भणैमु. ॥ १५ ॥
विमलवचनसत सहूसुपकारहै ॥ विमलवचनभण सुपदायसहूमन जानकिसुनतकन
अंमृतकीधारहै ॥ सिद्धजेसाधकनर ताकीविद्यासिद्धकर संसैविनमुनिवर सतजगसा
रहै ॥ सततैपावकजल महोदधिहोतथल दुठविषविषधर विपत्रपहारहै ॥ भणैमु. ॥
॥ १६ ॥ चोरीकोइकरोमति चोरीथीविनासरे ॥ चोरीथाइराजदंड मारकरैसतषंड ॥

गधैचाढेसिरमुंड फेरवततासरे॥ मारमारकरैजन आरतकरतमन राजजनततपिन देत गलपासरे ॥ देषोतोअभंगसैन चोरवधपायोजिन कुटंबसहिततिन कीयोनर्कवासरे॥ ॥ भनैमु. ॥ १७ ॥ पाईएअमरपद दतव्रतपालते ॥ देषौतौअंबडसीस ॥ संष्यावीस पनतीस जेठमासएकदीस पथसिरचालते ॥ त्रिषालागीपरबल पीयोनाहिगंगजल व्रतपाल्योनिरमल दूषणकोटालते ॥ सातसैहीकालकर हूवामहारिद्वसुर सापलाभै इणपर आगमसंभालते ॥ भणैमु. ॥ १८ ॥ मतिकरमतिकर परनारिसंगरे॥ परनारी चेपकर कटाक्षनयणभर आपदपावतनर दीपज्यौंपतंगरे ॥ षिणमातहोतसुष देषैभ वसतदुष करतविषयमुष सुरतकुभंगरे ॥ फिटफिटकरैलोइ अजसअकीर्तिहोइ रम णीकारजजोइ होतमोटोजंगरै ॥ भणैम. ॥ १९ ॥ सीलव्रत्तपायोजिन शिवपुरजाइए सीलहीतैनमैदेव नरवरसारेसेव सीलवंतानित्यमेव देवहीज्यौंध्याइए ॥ देषहोसुदर सन सीलपाल्योएकमन सीलहीतेत्रिभुवन जसगुणगाइए ॥ सीलथीसंकटटलै संप

दकुआइमिलै जउसमकितमिलै तउकहापाइए ॥ भणैमु. ॥ २० ॥ अतिघणपरिगह
दुपहीकोहेतहै ॥ कोइनरनरपति चलतपरतगति परिग्रहदेषमित साथनाहिलेतहै ॥
देपौकौनब्रह्मदत्त स्वयंभूमचक्रवत्त सातमीनरकपत्त सूत्रसापदेतहै ॥ मातपिताभाई
वंधु पापचढैतोरेकंध काहेमूढहोतअंध हियेकछुचेतरे ॥ भणैमु. ॥ २१ ॥ संतोषकरत
जीव नंतसुपपाएहै ॥ संतोपकरतनर दुष्यकोसागरतर परमआनंदघर ततपिणआ
एहै ॥ देपौतौकंपलमुनि संतोषकरताजिन पायाहैकेवलधन जिनगुणगाएहै ॥ जिनव
रगणधर गणवरमुनिवर परमसतोषकर शिवपुरजाएहै ॥ भणै. ॥ २२ ॥ क्रोधहैअन
र्थमूल क्रोधदूरछोडरे क्रोधतेनरकजाइ बाघसिंहसापथाइ ॥ क्रोधहीतेभरमाइ लाभे
कोडाकोडरे ॥ क्रोधहीतेप्रीतजाइ क्रोधहीतेविषपाइ क्रोधवहुदुषदाइ जीवआणेपोडरे
उपन्नीझाल जउतुमेततकाल करिरालोआलमाल पीछामनमोडरे भणै. २३॥
भरपूर मतिकरोरीसरे षिमाहीसोंवैरजाइ दुसमनलागैपाइ त्रिभुवनजस

थाइ सहीविश्वावीसरे ॥ देषोगजसुखमाल संसारकोंपायोपार षिमाकरीक्रोधमार वंदुनिसदीसरे ॥ रायपरदेसीधन षिमाकरीएकमन देवलोकपायोतिन पूरीहैजगीसरे ॥ भणैमु. ॥ २४ ॥ काहेकुकरतनर मूढअहंकाररे ॥ लपमीतोनाहीथिर आतजात फिरफिर जोवनवीजातषिर तूतोहैगवाररे ॥ जहाकोकरतगर्भ सोहीविंठजात सर्वपावै नाहीएहदर्व सोतोंवारवाररे ॥ रावहीतेरंकहोइ रंकहीतेरावजोइ थिररहैनाहिकोइ अथिरसंसाररे ॥ भणैमु. ॥ २५ ॥ मतकारिमूढमाया कूडहीकपटरे ॥ मायाथोनरकघोर मायाहीतेहोतढोर मायाहीतेपावैजोर दुषहोवेथटरे ॥ जोकरतपरद्रोह मंडतकपटमोह आपकुंसोषणषोह काहेहोतजटरे ॥ हियेकछुचेतकर मायामोहपरहर संसारसागरतर तैंतोपायोतटरे ॥ भणैमु. ॥ २६ ॥ सुषहोतलोभवस करतकरतरे ॥ लोभहीतेरातादिन चितमेलधनधन दुषहोतलोभमन धरतधरतरे जोडैधनरुलरुल आऊघटैपलपल जात तूंअजलजल झरतझरतरे ॥ स्वयंभूप्रमुपभूप करैथाजैदोडधूप छोडगएलोभ कूपभरत

दकुआइमिलै जउसमकितमिलै तउकहापाईए ॥ भणैमु. ॥ २० ॥ अतिघणपरिगह
दुपहीकोहेतहै ॥ कोइनरनरपति चलतपरतगति परिग्रहदेषामित साथनाहिलेतहै ॥
देपौकौनब्रह्मदत्त स्वयंभूमचक्रवत्त सातमीनरकपत्त सूत्रसापदेतहै ॥ मातपिताभाई
बंधु पापचढैतोरेकंध काहेमूढहोतअंध हीयेकछुचेतरे ॥ भणैमु. ॥ २१ ॥ संतोषकरत
जीव नंतसुपपाएहै ॥ संतोषकरतनर दुष्यकोसागरतर परमआनंदघर ततपिणआ
एहै ॥ देपौतौकंपलमुनि संतोषकरताजिन पायाहैकेवलधन जिनगुणगाएहै ॥ जिनव
रगणधर गणवरमुनिवर परमसतोषकर शिवपुरजाएहै ॥ भणै. ॥ २२ ॥ क्रोधहैअन
र्थमूल क्रोधदूरछोडरे क्रोधतेनरकजाइ बाघसिंहसापथाइ ॥ क्रोधहीतेभरमाइ लाभै
कोडाकोडरे ॥ क्रोधहीतेप्रीतजाइ क्रोधहीतेविषपाइ क्रोधवहुदुषदाइ जीवआणैषोडरे
क्रोधकीउपन्नीझाल जउतुमेततकाल करिरालोआलमाल पीछामनमोडरे भणै. २३॥
षिमाकरोभरपूर मतिकरोरीसरे षिमाहीसौवैरजाइ दुसमनलागैपाइ त्रिभुवनजस

सिद्ध होतफलहाएरे ॥ सुभभावभावैजेह भवनिधितरैतेह पायोजेमुकतिगेह भरतरा जानरे ॥ मोरादेवीमाताधन दुःकरतपसाविन शिवपदपायोजिन ध्यायसुभध्यानरे ॥ भणैमु. ॥ ३१ ॥ धर्महैमंगलमूल धर्महीकुंसेवरे ॥ धर्महैकलपवृक्ष देपोजातपरतक्ष ॥ भोगवैजुलोकलक्ष सुषनितमेवरे ॥ धर्मकेउत्तमफल जातकुलरूपवल विकटसंकटटल जातततपेवरे ॥ धर्मतैदुकृतदहै इंद्रादिकपदलहै धर्मशिवसुपलहै अरिहंतदेवरे ॥ भणैमु. ॥ ३२ ॥ महानंदसुपकंद रूपछंदजाणीए ॥ श्रीरूपजीवगणि कुयरश्रीमलमुनि रतनसीजसधण त्रिभुवनमाणीए ॥ विमलसासणजास मुनिसिरीगंगदास हसतदीषततास बतीसीवापाणीए ॥ वाणवसुरसचंद दिवालीमंगलवृंद अहमदावादइक रंगमनआणीए ॥ भणैमुनिवालचंद सुणहुभवकवृंद महानंदसुषकंद रूपछंदजाणीए ॥ ३३ ॥ इतिश्रीबालचंदकृतउपदेसबतीसीसंपूरणम् ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

भरतरे ॥ भणैमु. ॥२७॥ लोभमूढकहाकरै देतक्यौंनदानरे ॥ दानशिवसुषथाइ दान
थीदालिद्रजाइ घरनवनिधदाइ मानैएएरानरै ॥ दानदेवोचितलाइ दानेधनवृद्धथाइ
जैसेवाडीकूपगाइ होतवृद्धमानरे देपोतौसमुपाजिन प्रतिलाभ्यौमहामुनि कुमरसुवाहु
तिन रूपकोनिधानरे ॥ भणैमु. ॥ २८ ॥ वडोव्रतव्रतमांहि सीलव्रतजानरे ॥ सागर
आगरमांहि स्वयंभूउदधिआहि वडोदानदानमांहि अभयजुदानरे ॥ चंद्रग्रहगणमां
हि ॥ ब्रह्मलोककल्पमांहि वडोज्ञानज्ञानमांहि केवलजुज्ञानरे ॥ अरिहंतमुनिमांहि म
नोरमगिरीमांहि वडोध्यानध्यानमांहि सुकलजुध्यानरे ॥ भणैमु. ॥ २९ ॥ भवकोडकृ
तकर्म तपहीतेटालीए ॥ तपथीवंछतफल होतजीवनिर्मल दैवरूपदावानल कर्मवनवा
लीए ॥ देपौधन्नाअणगार दुःकरतपतकार छोडकैवत्तीसनारि जैनव्रतपालीए ॥ साग
रतेतीसवर हूवोअणुत्तरसुर जाकैगुणरूपजल आतमपापालीए ॥ भणैमु.॥३०॥ भाव
हीतेहोतसिद्ध भावहीप्रधानरे ॥ वहुविधिव्रतलीध तपकीधदानदीध भावविनानाही

सिद्ध होतफलहारणरे ॥ सुभभावभावैजेह भवनिधितरैतेह पायोजेमुकतिगेह भरतरा
जानरे ॥ मोरादेवीमाताधन दुःकरतपसाविन शिवपदपायोजिन ध्यायसुभध्यानरे ॥
भणैमु. ॥ ३१ ॥ धर्महैमंगलमूल धर्महींकुंसेवरे ॥ धर्महैकलपवृक्ष देपोजातपरतक्ष ॥
भोगवैजुलोकलक्ष सुषनितमेवरे ॥ धर्मकेउत्तमफल जातकुलरूपवल विकटसंकटटल
जाततेतपेवरे ॥ धर्मतैदुकृतदहै इंद्रादिकपदलहैं धर्मशिवसुपलहैं अरिहंतदेवरे ॥
भणैमु. ॥ ३२ ॥ महानंदसुषकंद रूपछंदजाणीए ॥ श्रीरूपजीवगणि कुयरश्रीमलमु
नि रतनसीजसधण त्रिभुवनमाणीए ॥ विमलसासणजास मुनिसिरीगंगदास हसत
दीपततास वतीसीवाषाणीए ॥ वाणवेसुरसचंद दिवालीमंगलवृंद अहमदावादइक
रंगमनआणीए ॥ भणैमुनिवालचंद सुणहुभवकवृंद महानंदसुषकंद रूपछंदजाणीए
॥ ३३ ॥ इतिश्रीबालचंदकृतउपदेसबतीसीसंपूरणम् ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

पत्रे
०॥

इति श्रीप्रवचनसंग्रहसमाप्तम्।

चर्मतिर्थंकरश्रीमहावीर स्वामीनानिर्वान थी संमत् २४ २२ ।

॥ उँ अहिंसापरमधर्मः ॥

श्रीजिणंद्रायनमः ॥ अथ श्री प्रवचनसंग्रह पुस्तकका सूचनपत्रका ॥ लिखिए ॥ छै ॥ विज्ञापना ॥ दोहा ॥ जंबू दीपके भर्थमे । देसपंजाव सुनाम ॥ तिसमे जिला लाहौरहै । तां कुसूरपुरठान ॥ १ ॥ तिहपुरमे इक शाह भयो । लालाहरजसनाम ॥ कोमभावडा जानिए । गदियजात अभिराम ॥ २ ॥ तीनवस्तु तिसने रची । प्रथम साधुगुनमाल ॥ देवाधिदेवरचणा । दूजीवस्तसंभाल ॥ ३ ॥ दिवरचणा तीजीकही । सभसेवडीसुजान । त्रयवस्तुएजानीए । जिणमतमेपरधान ॥ ४ ॥ कवितेवहुतेहोगए देषसुने सुकान ॥ हरजसतुल्लन देखीया । सुनयानाहिसुजान ॥ ५ ॥ मानतुगकविता हुया । ज्ञानदीपकारूप ॥ भक्तामरतिसनेरचा । जिसकाअर्थअनूप ॥ ६ ॥ बालचंद उत्तममुणी । बडोकवीस्वरमान ॥ बालवतीसीतिसरची ॥ जामेबहुताग्यान ॥ ७ ॥

॥ घ्रणाक्षरीछंद ॥ सवैयाइकतीसा ॥

हरजस मानतुंग । वालचंद तीनोकवि । पंचग्रंथकीएजिन । आगमविचारके ॥ त्रयरचेहरजस एकरच्योमानतुंग । वालचंदमुनिइक । कीयोगुनधारके ॥ इहपंचग्रंथनको एकग्रंथबन्योसुभ । श्रीप्रवचनसंग्रह । नामरक्षासारके ॥ ग्यारासय ११३७ तीस सग ॥ छंदजोरकीएसभ । गिनेइस पुस्तकमे । समझ सुवारके ॥ ८ ॥

साधगुनमालामाहि साधाजीकेगुनकहे । इकसौपचीस छंद ॥ उत्तमवषाणीए ॥ देवाधिदेवरचणा माहिअरिहंतगुन । ताहिकेपनस्सी छंद । निश्चेकरमाणीए ॥ देवरचणावहुकही यामेवर्णदेवनका । सतवसुचालीपंच । छंदसुभजाणीए ॥ चतुनवछदभक्तामरकेहैनसभ ॥ वालचंदवतीसिमे तेतीछंदआणीए ॥ ९ ॥ दोहा ॥ पढेसुनेविनकिमलखे । इनपुस्तककाभेद ॥ तिहकारनइनकोपढो । करनरनारिउमेद ॥ १० ॥

॥ मत्तगयंद छंद ॥ जोनरनारिपढेइनको । तिनकोबहुज्ञानतणारसआवे ॥ दुर्गतिछेदकरेछिनमे । अरुदेवगतीसुखमोषमिलावे ॥ पंचाहिग्रंथकुएकबन्यो । अतिउत्तमपुस्तकसुंमनलावे ॥ जैनदिपावनहेतपढो । करजोरकिछंदअरूरसुनावे ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥ नंदलालकीप्रेरना । तबमैकह्योग्रतंत ॥ हलकर्मीकोसुगमहै । भारीकठनकरंत ॥ १२ ॥ गीयाछंद ॥ इह श्रीप्रवचनसंग्रह । नामपुस्तकसोभता ॥ अर्थजिसकेबहुतसुंदर । सुनतमेरामनलोभता ॥ जोजनइसकोलीयाचाहे । स्यालकोटमेजानियो ॥ रूपाशाह अरु नंदलाला । कीदुकानेआनियो ॥ १३ ॥ दोहा ॥ जंबूपुरछापाभयो ॥ तीनकवीकीकृत्त ॥ मनवचकायासुधकरी । तेसुनियोइकचित्त ॥ १४ ॥ सोरठा ॥ सोभाकहीनजाय ॥ येतीनोकवितातणी । गागरनहीसमाय ॥ जोसागरमेजलरहे ॥ १५ ॥ दोहा ॥ अक्षरमात्राअंकको । भुलचुकइसमेकोइ ॥ सो वषशोसुधकीजियो ॥ सुभजन सुनियो जोइ ॥ १६ ॥ इति समाप्त ॥ सुभंभुयात् ॥

इति प्रवचनसंग्रह समाप्तं ॥